ISSN 2454-972X

हिमप्रस्थ

मार्च, 2024

राज्यपाल शिव प्रताप शुक्ल मंडी में अंतरराष्ट्रीय शिवरात्रि महोत्सव के अवसर पर जनसमूह को सम्बोधित करते हुए

ISSN : 2454-972X

हिमप्रस्थ

वर्ष : 68 मार्च, 2024 अंक : 12

सम्पादकीय कार्यालय : हि. प्र. प्रिंटिंग प्रेस परिसर, घोड़ा चौकी, शिमला-5

वार्षिक शुल्क : 150 रुपये, एक प्रति : 15 रुपये

E-Mail : himprasthahp@gmail.com
Tell: 0177 2633145, 2830374
Website: himachalpr.gov.in/himprastha.asp

ज्ञान सागर

- **शुद्ध निर्मल मन ही सबसे बड़ा तीर्थ है। -आदि शंकराचार्य**
- **मांस, मद्य, सुरा और आसव ये सब यक्ष, राक्षस तथा पिशाचों के खाद्य पदार्थ हैं। -मनु स्मृति**

इस अंक में

लेख

कविता/दोहे/पहेलियां/हाइकू

कहानी

लघुकथा

संस्मरण

व्यंग्य

समीक्षा

आखिरी पन्ना

अपनी बात

शास्त्रों में फाल्गुन मास को वर्ष का अंतिम मास माना गया है। इस माह में जहां एक ओर देवाधिदेव भगवान शिव की आराधना का त्योहार शिवरात्रि मनाया जाता है वहीं दूसरी ओर फाल्गुन लौटने से पहले होली का त्योहार भी बड़े हर्षोल्लास से मनाया जाता है। यदि हम हिमाचल प्रदेश को देखें तो हम पाते हैं कि आदिकाल से ही यह धरा भगवान शिव की अनुयायी रही है। वैसे भी देखा जाए तो देवाधिदेव शिव सभी देवताओं में सर्वोपरि है। इसीलिए शिवरात्रि के त्योहार को प्रदेश में मनाने का अपना एक अलग इतिहास रहा है। मंडी में शिवरात्रि को मनाने की परंपरा सम्पूर्ण विश्व में अनूठी है। शिवरात्रि मनाने का यह उदाहरण शायद ही संपूर्ण विश्व में या भारत में देखने को मिले। देव समागम का यह दृश्य देखकर अनायास ही धरती पर देवलोक का आभास हो जाता है। इसके अतिरिक्त भी प्रदेश के अन्य स्थानों में शिवरात्रि को मनाने की अपनी अलग-अलग परम्पराएं हैं। इसी मास में हम एक अन्य त्योहार होली भी मनाते हैं। यूं तो होली का त्योहार देश भर में अलग-अलग तरीकों से मनाया जाता है। परंतु हिमाचल के विभिन्न स्थानों पर मनाई जाने वाली होली का अपना अलग महत्त्व है। हिमाचल में सुजानपुर की होली बहुत प्रसिद्ध है। यहां पर होली का त्योहार राजाओं के युग से ही बड़े धूमधाम से मनाने की परंपरा रही है। इसके अतिरिक्त पांवटा साहिब में मनाया जाने वाला होला-मोहल्ला भी बहुत प्रसिद्ध है। प्रदेश के अन्यत्र स्थानों में भी यह त्योहार बड़े धूमधाम से मनाया जाता है, जहां पर सदियों से चली आ रही परंपराओं का विधिपूर्वक निर्वहन किया जाता है। वैसे भी फाल्गुन माह का धार्मिक, प्राकृतिक और वैज्ञानिक रूप से विशेष महत्त्व माना गया है। फाल्गुन और बसंत ऋतु जब साथ में होते हैं तो धरती सजी हुई दुल्हन की भांति नजर आती है। ऐसा जान पड़ता है कि जैसे संपूर्ण पृथ्वी ने श्रृंगार किया हो। ऐसे में शिवरात्रि और होली के त्योहार इसे और भी विशेष बना दते हैं क्योंकि ये त्योहार सकारात्मक ऊर्जा और खुशियों का संचार हमारे मन में करते हैं। इस अंक में हमने हिमाचल में शिव उपासना के विभिन्न आयामों, लोक गाथाओं में कृष्ण लीला तथा देव परम्पराओं को सहेजता मंडी का शिवरात्रि महोत्सव जैसे आलेख विशेष रूप से शामिल किए हैं। इसके अतिरिक्त हमारे नियमित स्तम्भ जैसे कविता, कहानी, लघुकथा, संस्मरण, व्यंग्य व समीक्षा भी शामिल हैं। उम्मीद है कि पाठकों को हमारा यह प्रयास पसंद आएगा। प्रस्तुत अंक के साथ ही हिमप्रस्थ पत्रिका अपनी साहित्यिक यात्रा के 68 वर्ष पूरे करने जा रही है। इस लंबे अंतराल में भी इस पत्रिका की साहित्यिक साधना अनवरत जारी है। निश्चय ही यह पत्रिका साहित्यिक और सांस्कृतिक पत्रिका के रूप में अपनी अलहदा पहचान बनाने में सफल हुई है। विभिन्न विषयों पर लेख, कहानियां, कविताएं, व्यंग्य, समीक्षाएं तथा यात्रा वृत्तांत हमारे कुछ नियमित स्तम्भ रहे हैं। प्रदेश की समृद्ध संस्कृति को आगे लाने तथा इसे आमजन तक पहुंचाने में हिमप्रस्थ सदैव अग्रणी रही है। नई प्रतिभाओं को भी आगे लाने में इस पत्रिका ने अपनी महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा की है। हमारी कोशिश साहित्य और संस्कृति के साथ प्रदेश की प्रगति और विकास से भी पाठकों को रू-ब-रू करवाने की रही है। 68 वर्षों में हिमप्रस्थ ने प्रदेश की संस्कृति और परम्पराओं के संवाहक बनने का कार्य पूरी निष्ठा से किया है। और इसी दिशा में आगे बढ़ने के लिए भी निरंतर प्रयत्नशील है। अंतरजाल के इस आधुनिक युग में भी हम हिमप्रस्थ को रुचिकर, समसामयिक और प्रासंगिक बनाए रखने के लिए अनवरत प्रयासरत हैं। इस प्रयास में हमें विद्वान और प्रबुद्ध लेखकों/रचनाकारों के सहयोग की निरंतर आवश्यकता है। इसके साथ ही हमें सुधी पाठकों के सहयोग की भी अपेक्षा है ताकि देश/प्रदेश की सांस्कृतिक निधियों को संजोए रखने का जो प्रयास हम निरंतर कर रहे हैं वह भविष्य में भी कायम रह सके।

– सम्पादक

लेख

लोक गाथाओं में कृष्ण लीला

✍ दीपक शर्मा

लोक कवि ने कृष्ण भगवान की कथा को बड़े सहज और सरल ढंग से प्रस्तुत करके लोक जीवन धारा से जोड़ा है। इस गाथा के अनुसार देवकी बासुकी नाग की पुत्री तथा तासगी नाग की बहन कहलाती है। देवकी का विवाह एक वृद्ध वसु ब्राह्मण से किन परिस्थितियों में होता है तथा किस नाटकीय ढंग से राजा कंस को देवकी धर्म बहन स्वीकार करनी पड़ती है। हर युग में पालनहार विष्णु भगवान अवतार लेता है। किस रोचक ढंग से सतयुग के अन्त में प्रभु श्री राम अपना शरीर छोड़ कर भौंरे के रूप में मृत्युलोक में आये। भौंरा पानी की बाउली में छिपता है, फिर सांप का रूप बनाता है। उस सांप को राजा कंस किस प्रकार काटता है तथा किस प्रकार वह सांप कमल के फूल में परिवर्तित होता है तथा कंस उसे अपने महल में रखता है। कमल को देवकी और यशोधा द्वारा सूंघे जाने पर उनका गर्भवती होना अपने आप में आश्चर्य है। विष्णु भगवान का अंश एक कन्या और बालक रूप में अवतरित होकर विधि माता द्वारा लिखे गये वचनों को पूरा करता है। उधर राजा कंस के पाप का घड़ा भर चुका है। लोक कवि जन्म से लेकर काली नाग प्रसंग तक विष्णु को कान्हबाड़ा अवतार तथा काली नाग की फुंकार के परिणामस्वरूप श्याम वर्ण बनने के पश्चात कृष्ण अवतार मानता है। कमल का फूल सूंघने के बाद फूल मुरझा जाता है। गर्भवती होने के संदेह से कंस देवकी व वसु देव को कारागार में डाला जाता है। भगवान की लीला अति न्यारी। किन परिस्थितियां में जन्म के बाद बालक के विरुद्ध षड्यन्त्र लीला तथा लीलाधर कृष्ण द्वारा कंस का वध होता है। उपरोक्त वर्णित सम्पूर्ण लीला कवि ने लोक काव्य 'कसैण' (कंस वध लीला) के रूप में प्रस्तुत किया है। कथा से एक-एक पहलू को गद्य-पद्य रूप में विस्तार से प्रस्तुत किया जा रहा है।

दशरथ मृत्यु के बाद राम कैकई संवाद : वाल्मीकि रामायण और तुलसी दास रचित रामचरित मानस में सुलोचना के सती होने का वर्णन मिलता है। परन्तु दशरथ पत्नियों द्वारा सती होने का वर्णन नहीं मिलता। लोकमानस क्या कहता है। राजा दशरथ की मृत्यु के पश्चात सुमित्रा कौशल्या और कैकई चिता पर जलने के लिए बैठती है। कैकई चिता से उठकर बाहर आती है। इस पर राम लक्ष्मण जी कहते हैं 'हे माता! तूने हमें वनवास भी दिया तथा पिता की मृत्यु का कारण भी तू ही है। इसलिए माता सुमित्रा और कौशल्या की भांति तुझे भी सती होना चाहिए। इस पर राम कैकई संवाद होता है।

सौती ता हेरू में जौड़ी, एक बौचना रामा मुलै दैआजी।

कैकई कहती है कि हे राम! मैं सती तो हो जाऊंगी। सती होने से पहले मुझे एक वचन देना होगा।

एकी ता बौचना डिगणें दैए माए, साता साता बौचना हुए।

राम कहते है कि हे माता! जहां तूने इतना बड़ा अनर्थ कर दिया, एक वचन तो क्या, तू सात वचन मांग ले।

मेरे ता बौचना तौए लै रामा, तारा हेरे कुछिए मेरी देई। कैकयी कहती है, 'हे पुत्र! अगले जन्म में मेरी ही कोख से जन्म लेना।

तारा ता देंऊ गै माउसी मेरिए, चूई ता पीणी आपणी माए।

राम कहते हैं, 'हे नाता। मैं तेरी कोख से पैदा तो हो जाऊंगा, परन्तु स्तन पान मैं अपनी ही मां का करूंगा।'

तेबी ता प्याऊं तौं चूनी चरूनिआं।

कैकई कहती है, 'उस समय तो मैं देख लूंगी। जबरदस्ती भी तुझे अपनी चूई (स्तन) पिलाऊंगी।'

इस संवाद के बाद कैकई सती हुई या नहीं। इस पर लोकमानस चुप है। दशरथ का दाह संस्कार हो गया।

विधि माता रामचन्द्र संवाद :- राम लीला के अंतिम चरण में मां सीता के धरती में समा जाने का वर्णन मिलता है। प्रभु श्री राम भी सीता के धरती में समा जाने के बाद मनुष्य का शरीर छोड़ कर परम धाम की तैयारी में लगते हैं। एक ओर प्रभु राम की परम धाम की तैयारी तथा दूसरी ओर द्वापर युग का आरम्भ। प्रभु श्री राम और लक्ष्मण अपने अगले जन्म के बारे में जानने के लिए विधि माता की खोज में निकलते हैं।

श्री जै रामा लौछमोंणा देऊ से चालेविधि माता लोड़ी।

नाई जै गैए बिरघा बौंणे, बिरघा वौंणे मैड़ी बुढुआड़ी माई।

सौए जो बुढी माई गारोषाटु चूंगा।
चूड़ादै जो नाके घीरादी आखिए।
दुबड़े गौ जानुए कुबड़े किंगरे।

विरघा वन में उन्हें एक कुरूप बुढ़िया मिलती है जो कि गोबर के उपले (गरोष्टै) उठा रही है। उसकी आंखों और नाक से पानी बह रहा है। वह दुबली व कुबड़ी है।

शुंणें गै शुणै बुढुआड़ी माईए।
हामें चालैविधि माता लोड़ी।
बैंणै जै बोला गौ बुढुआड़ी माई।
विधि जै माता गौ लोड़ी ना मैड़ा।

राम लक्ष्मण कहते है कि हे बुढ़िआ। हम विधि माता को ढूंढने निकले हैं। बुढ़ी माई कहती है कि विधि माता ढूंढ कर नहीं मिलती हैं।

शूंणे तां शूंणे गै ए विधि मातै औरज़ मेरी। होरी लै लीए माए पीठी पाशै जौरमौ मुलैलीए मुंहा आगै।

राम कहते हैं, 'हे माता विधाता! मेरी एक प्रार्थना है। औरों का जन्म पीठ के पीछे लिखना, परन्तु मेरे बारे में मुंह के सामने देखकर लिखना।

एक ना लीहे मातै पोशू केरो जौरमा।
न्याहरै गौहा ओवारू दि सौंणो।
दूजो भि ना लीहे गै माए पांछी केरो जौरमा।
डाली लागा मूं राचा बिहाणी विधि माता जी।
एक ना गै लीहे मुरो कुकीरा रो जौरमा ।
दोती उजवी फुहड़ै लोली।
एक भि ना लीहे माए सुंगरा से जौरमा।
दोती उजवी आ नौरका घोरी।
एक ना माए लीहे मुहै कांसे केसू बैरी।
आधौ लीहे धौरतरी ओ राजा।

प्रभु श्री राम कहते हैं, 'हे विधि मां! एक तो मुझे पशु का जन्म नहीं लिखना क्योंकि अंधेरे ओबरे में सोना पड़ता है। दूसरा पंछी का जन्म भी नहीं लिखना क्योंकि रात पेड़ों पर गुजारनी पड़ती है। कुत्ते का जन्म नहीं लिखना क्योंकि सुबह उठकर गंदी चीज उठानी पड़ती है। सुअर का जन्म भी नहीं लिखना क्योंकि सुबह उठकर मल में मुंह लगाना पड़ता है। हे मां! कंस को मेरा शत्रु नहीं लिखना। हां आधी धरती का राज लिखना।

लीहणा लैता लीहूं ती मू ए बाड़े बेटेआ।
पौड़ी गेई जो उड़ाटी बींदी जी।
कांसो ता केसू तौलै बैरी लीहौं।
वाईए नौणा ताँ बैटा दैइंतरा वौणनौ।
कासै राजै हाथै जो मौउता हौणी।

हे पुत्र! लिखना तो मैं चाहती थी पर क्या करूं बिंदी उल्टी पड़ गई। तेरा शत्रु कंस होगा। तू बावड़ी के चश्में में सांप बनकर जाएगा तथा कंस के हाथ से तेरी मृत्यु होगी। फिर पूरी धरती पर तेरा राज होगा तथा कंस को तू ही मारेगा।

डौरे न डौरे पुत्रा मेरेआ।

बली ता भादरा भाई तेरो लौछमौणा हौंणों। जुण ता पिता तेरे दौशीरौथा, नौंदी हौंणो मोहरा तारा।

जुण ता आमा गौ माता काशौल्या।
माता हौंणो दासोदा रो तारा।
जुण ता आमा गौ कैकई, देवा हौंणो कौन्यो तारा।

विधि माता कहती है, 'हे पुत्र डरो मत। तेरा भाई लक्ष्मण अगले जन्म में तेरा भाई बलराम होगा। तेरा पिता नंदी मोहर बनेगा। माता कौशल्या यशोधा तथा मां कैकई देवकी के रूप में अवतरित होंगे।

कांसौ भी ता केसू तौलै लीही डाहाँ बैरी।
माताडोगै लीही हेरो राजा।
बिंदरा बौणे माए गौवे लीही चारणी।
सोला लीहौ सरगोपियो साथा।
लीहणा लै लीही हेरो कानहबाड़ौ देउतौ।

विधि माता कहती कि हे राम! मृत्यु लोक में राजा कंस तेरा शत्रु होगा। तू कान्हवाड़ा देवता के रूप में अवतरित होगा तथा सोलह सौ गोपिओं का तुझे साथ मिलेगा। बिन्द्राबन में तुझे गौवे चरानी पड़ेंगी।

कंस का जन्म कैसे हुआ

उग्रसेन की पत्नी का नाम मैहपंथ राणी था। एक दिन मैहपंथ राणी ने सोमवार को अमावस्या स्नान की हठ की। मैहपंथ राणी रात के अंधेरे में रियासत की धरजा प्रजा-नौकर चाकर सेना लेकर यात्रा पर चल पड़ी। परन्तु उग्रसेन साथ नहीं चला। तीर्थ के किनारे रानी के लिए शानदार चानड़ी (चारों ओर से मखमली परदों से ढका गोलाकार तम्बूनुमा

निवास) लगी। दरिया के उस पार कुम्बर दानिया नामक महादैत्य का निवास था। कुम्बर दानिया ने अपने आलीशान महल से यह सब कुछ देखा तथा सोचने लगा कि मुझे मारने कोई सेना लेकर आया है। कुम्बर दानिया दरिया के आर–पार पुल के रूप में लेट गया तथा दो गुप्तचर नदी पार चले गये। गुप्तचरों ने सारी खबर दी कि वहां पर मैहपंथ नामक रानी तीर्थ नहाने आई है जो कि अति सुंदर व तेजवान है।

कुम्बर दानिया शिव भक्त था। वह शिव जी के पास गया। शिव ने पूछा, 'अरे दैत्यराज! क्या बात है कि तुम आज इस अंधेरे में स्वयं ही क्यों चले आए?' शिव ने उसे भोजन–पानी के लिए कहा। कुम्बर दानिया ने कहा कि पहले मुझे धरम दो फिर भोजन करूंगा। शिव बोले 'अरे! मांग जो तुझे चाहिए। इसके लिए क्या धरम देना पड़ता है।' परन्तु कुम्बर अपनी हट पर अड़ा रहा। शिव ने उसे धरम वचन दे दिया और वर मांगने को कहा। कुम्बर बोला 'हे महादेव! छः मास को रात पड़नी चाहिए तथा मुझे उग्रसेन का रूप चाहिए।' उग्रसेन के रूप में वह दानिया मैहपंथ रानी के निवास में जा घुसा। मैहपंथ रानी ने रूठे हुए अंदाज में कहा 'जब मैंने तुझे साथ चलने के लिए कहा था तो क्यों नहीं आया? इस प्रकार छिप कर आने की क्या आवश्यकता थी?' कुम्बर ने रति कर्म निभाया। उधर छः मास को रात पड़ गई। रति कर्म के बाद कुम्बर दानिया अपने महल नदी पार चला गया। छः महीने के बाद रात खुली। 'प्रातः काल हुआ तथा रानी ने तीर्थ स्नान किया। रानी को आभास हो गया कि मेरे गर्भ में छः महीने का बालक है। स्नान के बाद जब मैहपंथ रानी अपने महल पहुंची तो उग्रसेन उस पर आग बबूला हो गया। राजा उग्रसेन ने कहा कि आज से महल में तुझे अलग कमरा मिलेगा। तू मेरे कक्ष में नहीं आएगा तथा न ही मैं तेरे कक्ष में प्रवेश करूंगा।

उग्रसेन ने पूछा, 'बता, तेरे गर्भ में किसकी संतान पल रही है?' बेचारी मैहपंथ रानी का क्या दोष। दसवें मास बालक ने जन्म लिया। रियासत के लोग बधाई मांगने महल में गए तथा कहने लगे कि शीघ्र ही इस बालक का नामकरण संस्कार हो जाना चाहिए। राजा बोला, 'अरे मूर्खों! जिसका यह बालक है वह स्वयं इसका नामकरण संस्कार करेगा।'

उधर कुम्बर दानिया को भी पता चल पड़ा। कुम्बर दानिया फटे पुराने कपड़े (दरीगड़) पहन कर पीठ पर कांस्य धातु के बर्तन से भरा किल्टा लेकर राज दरबार पहुंच गया। कुम्बर दानिया बोला, **'राजेए आंगणा दी आऔ कशौरौ, राजेए बेटे दी कांसो नाओं ठौहरौ।'** अर्थात राजे के आंगन में कांस्य धातु के बर्तनों वाला (कशौरी) आया है। इसलिए राजा के पुत्र का नाम कांसा हुआ। फिर कुम्बर दानिया अपना दानव रूप बनाकर वहां से भागा। शक्तिशाली महादैत्य पुत्र कंस बड़ा हुआ तथा इतना शक्तिशाली बना कि मृत्यु लोक पर राज करने लगा।

कंस द्वारा कोठी निर्माण कार्य आरम्भ : उधर द्वापर युग शुरू हो चुका है। राजा कंस के अत्याचार की सीमा को लांघ चुका है। राजा कंस जब अपने महल बनाने के लिए नींव खोद रहा था तो नींव इतनी गहरी खोद ली कि पाताल लोक हिलने लगा।

धौरजै पौरजै शोदौ दैणो म्हारै।
इही लागणौ कोठीओ कामा।
कांसै ता राजेओ शोधौ ता लागौ।
धौनी आणी धरतरी चोड़ी।
पैइताडै बासकू नागा लो, शूंणे शूंणे धौरजै पौरजै। कान्हें पौड़ी माटुए बारूरा लो।
शूंणे शूंणे बेटा ए तासगी।
माताड़ोगै कुंण जौमों जो धाए।
शूंणे शूंणे बेटा ए तासगी।

पैताल लोक में बासुकी नाग के सिर पर मिट्टी गिरने लगी। बासुकी नाग अपने पुत्र तासगी नाग से कहता है, 'हे पुत्र! जरा मृत्युलोक देख कर आ, ऐसा कौन सा शूरवीर पैदा हो गया जो मेरी सीमा का उल्लंघन व अतिक्रमण कर रहा है।'

आपणे रूपै आऔ ए तासगी, मातालोगै हेरा शूणां।
कांसै लागौ राजेओ शोधा रे, शूंणा बाबा बासकू।
ध्याड़ी ता ध्याड़ी कांसै राजो शोधौ।
राची डाहा बलैलो कौरी रे, शूंणे शूंणे बेटा ए तासकी।

पिता की आज्ञा पर तासगी, नाग मजदूर का वेश बनाकर मृत्युलोक पहुंचता है। तथा राजा कंस के पास मजदूरी कमाने लगता है। तासगी ने एक चाल चली। दिन के समय महल की नींव खोदी जाती है तथा रात को तासगी उसे मिट्टी से भर देता है।

कांसै ता राजा हुऔ भौरमा एवै ज़ाणू पैहरौ लांणो। कुण म्हारो शौतरू, कौठड़ी हुई धौरज़ा पौरज़ा।
हेरी ता हेरी हेरौ सौ तासगी।
आगा ता आगा चाला ए दानिया।
पीछा पीछा ता जो धौरज़ा पौरज़ा।

अन्य मज़दूरों को उस पर शक हो गया। कंस ने तासगी पर पैहरा लगा दिया कि यह क्या गतिविधियां करता है।

एक दिन उसका भेद खुल जाता है। कंस ने उसे मारने का आदेश दिया। सारी प्रजा उसे मारने के लिए एकत्रित हो गई। तासगी सांप का रूप बनाकर प्राण बचाने भागने लगा तथा लोग उसका पीछा करने लगे।

एखुए हाथा दाच खराड़ौ, एखु हाथै पाथरा शोटा।
एऊ दानवे लेई आणे प्राणा, आगू मैड़ा बौसू भाटा ए।
शूणदौ रौहे ए बौसू बामणा, मुं भी जांणू चोरी हेरे चोरी।

हाथ में दराट कुल्हाड़े लेकर उसके प्राण लेने लोग भाग रहे हैं। कोई उस पर पत्थर मार रहे हैं। आगे चलकर तासगी को बौसू देव नाम का ब्राह्मण (भाट) मिला। तासगी उससे कहता है कि हे ब्राह्मण! मुझे कहीं छिपा दे।

वसु ब्राह्मण द्वारा तासगी की सहायता तथा वसु देवकी विवाह **: बैंणै ता बोला बौसू ए बामणा।**

एबड़ौ बौड़ौ दानिओं मुं भि जांणू कैंण के चोरू।
बैंणै ता बोला सौए दानिओं, मुं भि जाणू छोटो कौरू रूपा।
हाथडू लोहफौ तेई ए दानिओं,
पीछा आई धौरजा पौरजा, शूंणे शूंणे भाटा ए बौसुआ।
आगू जांणी एसी दानवों भिनाहौ।

बोसु ब्राह्मण कहता है कि मैं इतने बड़े सांप को कैसे छुपाऊं? तासगी ने अपना मच्छर जैसा लघु शरीर बनाया तथा ब्राह्मण ने उसे अपनी अंजली में छिपा दिया। पीछे से कंस की प्रजा वहां पहुंच कर ब्राह्मण से पूछती है, 'अरे ब्राह्मण तूने इधर से कहीं सांप को जाते हुए देखा।'

मूंड़ा का कौरा टुलटुल।
हाथे जांणू हामी कौरा हामी।
शूंगै शूंगै धौरजै ए पौरजै़।
शूणदौ रौहे तूनू ए बामणा।
तैबि जांणु जाना मेरी बचावी।
साता ता साता दैऊं ए धौरमा ।
एबी जांणू पैताड़ा लै चाले बे।
शूंणै शूंणै बौसू ए बामणा।

वसु ब्राह्मण ने अंजली में तासगी को छुपाया है। वह सिर से हिलाकर ना ना करता है तथा हाथ हिलाकर हां हां करता है। तासगी नाग कहता है, 'हे ब्राह्मण! तूने मेरी जान बचाई है। मै तुझे सात धरम देता हूं। तू मेरे साथ पैताल लोक चल।'

तीदा का सै चालदै हुए बे।
पैइताडै नीओं ए बामणा।
तीदी तेउए चौउरी डाहां चौउरी बे।
शूंणै शूंणै मेरे ए बापुआ। माताड़ोगै जिंउणै का बौचोबे।

तासगी नाग और वसु ब्राह्मण दोनों पैताल लोक पहुंचे। ब्राह्मण को महल के बाहर चौरे (चौबारा) में बिठा रखा तथा सारी कहानी अपने पिता जी को सुनाई।

एके जाणू बौसू बामणा जान बचावी तेऊ बामणे।
तेऊ लै कै बौरा दीनो बौरा ए शूंणै शूंणै बेटों।
देहवी गेई मेरे बौचना देवाकीओ कौन्यादाणा।

बासुकी नाग कहता है, 'हे बेटा तासगी! जिस ब्राह्मण ने तेरी जान बचाई उसे तूने क्या वरदान दिया है। तासगी नाग कहता है, 'हे पिता जी! मैंने उसे अपनी बहन देवकी के कन्यादान का वचन दिया है। यह सुनकर बासुकी नाग और उसकी रानियां गुस्से में लाल पीली हो गई। सभी तासगी को डांटने लगे कि तूने इस कुरूप बूढ़े, कान के बहरे, कुबड़े को अपनी बहन देकर अच्छा नहीं किया। अब क्या करे धर्म संकट में पड़ गये। बासुकी ने कहा, 'ठीक है। एक शर्त मेरी भी है। यदि वसु ब्राह्मण देवकी के मुंह से चार बार कोई बात कहलवाए या उसे हंसाए तो हम शादी के लिए तैयार हैं।'

पुछणी लाई देवा ए कौनियां। भाटा गौहा बौसू लै तौं जांणा बे।
शूंणे शूंणे देवा ए कौनियां।
इजी न दीनी मुनु ए बापुए।
भाई हुए जे तासगी ए कामा लो।
शूंणे शूंणे मेरे ए बापुआ।

शर्त पूरी होने के बाद बासुकी नाग कहता है, 'हे देवकी! तुझे अब वसु ब्राह्मण से विवाह करना ही होगा।' देवकी रोते हुए कहती है, 'हे पिता जी! मुझे ना तो मां ने दिया है, ना ही पिता ने। यह सारी मेहरबानी मेरे भाई तासगी की है, जिसने बिना सोचे समझे मेरा विवाह उस बूढ़े भाट के साथ तय किया है।'

रोए ना रोए देवा ए कौनियां।
देई डांहू तौलै जिउणे ओ गुज़ारौ।
शूंणे शंणे देवा ए कौनियां।
छिउंटी राशी तौलै दांणा दैऊं,
साथी दैऊं गोरख डिबी लो शूंणे शूंणे।
मार मुंगारू तौलै दांणा दैऊं,
सौंगे दैऊं पौउंण काटोरा बे. शूंणे।

बासुकी नाग कहता है, 'हे बेटी! तू रो मत। मै तुझे जीने का सारा गुजारा दूंगा। तुझे मार, मुंगरू, छिउंटी राशी, गोरख डिब्बी तथा पवन कटोला दान में दूंगा।' (यह ऐसी वस्तुएं हैं जिसमें दिव्य शक्ति होती है। किसी भी किस्म का आदेश देकर यह सभी मनोरथ पूर्ण करते हैं)

जेभी होए तौलै खौरी औहकी,
तेबी लैए मेरो नाओं।

हे पुत्री! जब तुझे कोई संकट आएगा तो मेरा नाम ले लेना। रिश्ता तय हो गया। घड़ी लग्न मुहूर्त देख कर विवाह का दिन तय हुआ। बूढ़े वसु ब्राह्मण की बारात पैताल लोक पहुंचती है। सप्तपदी वेदी लग्न आरम्भ हुआ। मण्डप सजा। अग्नि की प्रथम परिक्रमा में वसु ब्राह्मण के सफेद बाल काले हो गये। दूसरी में आंखें सुंदर हो गई। तीसरी में कान खुल गए, चौथे में नाक साफ हो गया तथा पांचवे में कुबड़ी कमर सीधी हो गई। अत: सप्तपदी पूरी होने के बाद वृद्ध वसु एक सुंदर सुडौल नवयुवक बन गया। विदाई समारोह हुआ। मार मुंगरी, छिउंटी राशी, गोरख डिब्बी और पवन कटोला दान में दिया।

दुल्हा दुल्हन और बाराती चल पड़े मृत्यु लोक की ओर। देवकी के साथ पैताल लोक की प्रजा साथ चली। मृत्यु लोक में सभी को निमन्त्रण था। खूब ढोल नगाड़े, बाजे-गाजे के साथ लंगर-लश्कर चला। वसु ब्राह्मण सोच में डूबा है कि राजा की कन्या के साथ विवाह करके मैंने ठीक नहीं किया है। देवकी वसु से कहती है कि पति का घर मेरे लिए स्वर्ग से भी बढ़ कर है। ज्यूं ही बारात वसु की कुटिया के समीप पहुंची तो देवकी ने मारू मुंगरी छिउंटी राशी को आदेश दिया कि वसु की कुटिया भव्य महल बन जाये तथा राजसी ठाठ बाठ की सारी सामग्री व नौकर चाकर तैयार हो जाएं। वसु का महल इतना भव्य व सुंदर बन गया कि कंस का राजसी ठाठ उसके सामने फीका पड़ गया। आकाशवाणी हुई- 'देवकी का आठवां पुत्र कंस की मृत्यु का कारण बनेगा।' पूरी रियासत में देवकी व वसु चर्चा का विषय बन गये।

कंस द्वारा नाई के बहकावे में आकर वसु के घर मेहमान जाने

कविता

लंबी यात्रा पर

✍ **कमलेश वर्मा**

फर्क नहीं पड़ता कि
यात्रा पर निकला बटोही
कब पहुंचता है ध्येय पर,
फर्क पड़ता है कि वह
न लौटे थका और हारा हुआ।

तुम निकलना चाहते हो
हद और अनहद के आगे
और ताने रख सकते हो
प्रत्यंचा अर्जुन की तरह.....
लंबी यात्रा के लिए जरूरी है
यायावर का दृढ़ संकल्प होना

यात्रा के लिए जरूरी है
उसे सपनों की तरह जीना....

लंबी यात्रा के लिए जरूरी है
उत्साह और बुलंद हौसलों को बनाए रखना
ताकि होठों और गले की नमी बनी रहे,
जरूरी है उसे अपनी लंबी यात्रा के लिए
मजमून और मादकता को बनाए रखना
ताकि पगडंडियों पर यात्रा
छोटी और खूबसूरत बनी रहे।

लंबी यात्रा के लिए जरूरी है
निर्वासित होना
पांव का अविचल दौड़ना
खानाबदोश की तरह कूच करना..
घाटियों के आगोश में समाना
नदियों की सर सराहट में तैरना...

हारा हुआ यायावर साथ लिए आता है
नाकामी और बहाना,
वह डरता है
झुलसी हुई पगडंडियों के ताप से
वह डरता है यात्रा में
खतरनाक होते हुए गुबार से।

शिंगल, छतरी, थुनाग,
मंडी, हिमाचल प्रदेश-175047

की हठ व कंस द्वारा देवकी को धर्म बहन बनाना।

उस रास्ते से प्रति दिन एक नाई राजा कंस की हजामत करने आता था। नाई कंस से कहता है- 'महाराज! वसु ने बहुत सुंदर स्त्री से विवाह किया है। तुम्हारी रानियों के मुंह की तरह सुंदर तो उसके पांव है। तुम्हारा महल तो उसके महल के पास कुछ भी नहीं है।' कंस यह सारा वृतांत सुनकर ईर्ष्या से जल भून गया। उसने वसु के घर मेहमान जाने की इच्छा प्रकट की। वसु ने राजा कंस को मेहमान बुलाया। कंस का भाई केसू कहता है।

'भाटै घौरै पांउणे ना जाये गो भाई।
भाट हौदै टौड़की मौड़की भाई।'

'हे कंस! ब्राह्मण के घर मेहमान मत जा क्योंकि ब्राह्मण तंत्र मंत्र विद्या वाले होते हैं।' हठी कंस एक दिन राजा कंस पूरा लंगर लश्कर, सेना, प्रजा, हाथी-घोड़े लेकर वसु के घर पहुंचा। वसु यह सब देख घबराया कि राजा का अतिथि सत्कार कैसे किया जाये। देवकी ने अपनी गोरख डिब्बी को आदेश दिया कि सभी लोगों को कुछ ही क्षणों में राजसी भोजन तैयार किया जाए। मार मुंगरी छिउंटी राशी से कहा कि सभी लोगों, घोड़े-खच्चरों का स्नान इत्यादि करवाया जाए तथा नौकर-चाकर खड़े हो जाएं। स्नान आदि के उपरान्त भिन्न-भिन्न प्रकार का स्वादिष्ट भोजन तैयार हुआ। नौकर -चाकर भोजन परोसने लगे। देवकी ने अपनी जैसी सात रानियों का रूप बना लिया। अलग-अलग रूप बनाकर वह भोजन परोसने लगी। कंस नाई से कहता है कि यह तो सात रानियां है। पहचान करना कठिन हो गया कि देवकी कौन है। नाई को एक तरकीब सूझी। नाई ने देवकी के पांव पर दाल के छींटे डाल दिए। बार-बार वही छींटे वाली रानी देखकर कंस की समझ में बात आई। देवकी बात को भांप गई। देवकी ने अपने भाई तासगी को याद किया। तासगी नाग झिंमणी (जंगली मधु मक्खी) का रूप बनाकर झाड़ू में छिप गया। देवकी ने तासगी से कहा कि जब मैं इशारा करूं तो तूने उस आदमी को डंक मार देना। देवकी झाड़ू देते-देते कंस के समीप पहुंची तथा उधर को इशारा किया। तुरन्त झिंमणी ने कंस को डंक मारा। देवकी के आगे कंस गिड़गिड़ाया तथा प्राण रक्षा के लिए पुकारा। देवकी को यह भी पता था कि मेरा आठवां पुत्र कंस को मार डालेगा। देवकी सोचने लगी कि कंस और मेरे आठवें पुत्र का वैर कैसे मिट सकता है। देवकी चाहती तो कंस उसी समय उस अचूक डंक से मर सकता था। परन्तु वह धर्मसंकट में पड़ी कि घर में आए हुए मेहमान को मारना ठीक नहीं है। देवकी ने दिमाग से काम लिया कि सांप भी मरे लाठी भी ना टूटे। देवकी राजा कंस से कहती है, 'हे कंस! यदि तू मुझे अपनी धर्म बहन स्वीकार करता है तो मै तेरी प्राण रक्षा कर सकता हूं।' कंस ने यह स्वीकार किया तथा देवकी ने कंस के हाथ में डोरी (रक्षा सूत्र) बांध ली। कंस भोजन आदि से निवृत्त होकर अपने महल चला गया।

विष्णु द्वारा मृत्यु लोक जाने की तैयारी व कंस को उल्टे स्वप्न : कंस अत्याचार की सीमा लांघ चुका था। उसने देवकी की सात संतानें मार दी। प्रजा कंस के अत्याचार से आतंकित थी। कंस के जी में जो आए वह करने लगा। मृत्यु लोक में हाहाकार मच गई। उधर पालनहार विष्णु भगवान सोच में डूबे हैं कि अब मृत्यु लोक में जाने का समय फिर आ चुका है। विष्णु सोच रहे हैं।

सौरगै इन्द्रो राजा पैइताडै बासकू नागा।
माताड़ोगै कांसे ओ राजा कासें राजै लाई कबादा।
मौने सूचा बौड़ौ नरैणा, कैंण कै गाडू कांसे केरो राजा।
कैण कै धारू आपणो राजा।

विष्णु रूप भगवान राम जो कि अब अगला रूप धारण करना चाहते हैं। विष्णु भगवान सोच रहा है कि स्वर्ग में इन्द्र का राज है, पैताल में बासकू नाग का राज है तथा मृत्युलोक में कंस का राज है। राजा कंस सीमाओं को लांघ चुका है। किस प्रकार से राजा कंस का राज समाप्त करूं। किस प्रकार मृत्युलोक में अपना साम्राज्य स्थापित करूं।

कीजू ए रूपै नाशू माताड़ोगा लै,
सींहा रे रूपै नाशू माताड़ोगा लै,
तेथा कै गाऔ बाछू डौरा, कीही गौहूं तीने शरापै।
गौर्डे रूपै नाशू माताड़ौगा लै, गौरड़े रूपै ड़ौरा चेलू पखेरू।
सौर्पे रूपै नाशू माताड़ोगा लै, सौरपे रूपै मांण्हूं डौरा।

प्रभु श्री राम अपना शरीर छोड़ने से पहले सोच में डूबे हैं और विधि माता से पूछते हैं। 'हे विधिमाता किस रूप में मृत्युलोक जाऊं? शेर के रूप में जाऊं तो वहां गाय बच्छड़े मुझ से डरेंगे। गरूड़ के रूप में जाऊं तो छोटे-छोटे पक्षी डरेंगे। सांप के रूप में जाऊं तो मनुष्य डरेंगे। मुझे इन सभी का श्राप लग जायेगा।

भौरूं ए रूपै नाशू माताड़ोगा लै।
तिदी पेशू गै बाइए फड़ैउटै।

होता वही है जो उस विधि माता (विधाता) ने लिखा है। प्रभु श्री राम ने भौंरे का रूप धारण किया और उड़कर मृत्युलोक में उस स्थान पर छिप गये जहां राजा कंस प्रतिदिन प्रातः उठकर बाउली से पानी भर कर लाता था। भौंरा उस बाउड़ी के स्रोत में (फड़ैउटै) छिप गया। स्रोत में छिपने से

पानी का बहाव बंद हो गया तथा बाउड़ी का पानी सूख गया।

आधी राची राजा कांसैआ सौनू सूपणे तड़ाऔ।
धिओ सुपिनो कांसे का सौनु हौड़ मड़ाऔ गौ।
हांस कारोतिआ रे बींडू औशिणा भागिदा धीआ।

उधर रात को कंस अपनी विनाश लीला का स्वप्न देख रहा है। कंस देख रहा है कि उसका मृत शरीर पानी में तैर रहा है। उसे सब कुछ ऊटपटांग दिख रहा है। पानी पीने के पात्र की टूटी से पानी बाहर जा रहा है।

बाई ओ नौंणा कांसे का सैनू शूकिदा धीआ
खीली ए डांगारी कांसै का सौ नू ऊड़ाटी धीआ
दांतुऔ पाटड़ौ तेऊ कांसे का सौनू ऊड़ाटौ धीआ
साते बाए राजा कांसे आ से धिआ शूख बुआणी
बाड़े ओ राजा तेऊ कांसे का सोनू वोधिदा धीआ
कांसे ओ राजा तेऊ कांसे का सौनू घौटिदा धीआ

राजा कंस को बाउली का तट सूखा नजर आ रहा है। खूंटे में लटकी हुई डांगरी (खड़ासा) कंस के सिर पर उल्टी मंडरा रही है। कंस के बैठने का पटड़ा उल्टा पड़ा है। राजा कंस की सात बाउलियां सूखी पड़ी है। कान्हबाड़ा (कन्हैया) का राज बढ़ता हुआ तथा कंस का राज घटता हुआ नजर आ रहा है।

कांसौ गौ राज़ा पाणी लै चालौ पाणी लै।
काछै गौ पाई तेउए काविला छूरी।
पाणी लै तेउए गागारी पाई।
हाथै गौ तेउए वैइंता पाओ।

राजा कंस प्रात: उठते ही बाउली की ओर प्रस्थान करता है। बगल में छूरी, हाथ में वैत (डण्डा) तथा पानी की गागर लेकर वह चल पड़ा।

साते बाई गौ सात फड़ेउटा शुक बुआणी। कांसे गौ राजा सौ मौगिरा शोदणों लाओ।
आगा चाली खूना केरी धारा।
पाछा चाली दुधू केरी धारा।

राजा कंस बाउली पर जाकर दखता है कि सातों बाउलिआं सूखी पड़ी है। राजा कंस जल स्रोत के सुराख को हुण्डे से शोधने लगा। शोधने से खून की धारा बहने लगी फिर दूध बहने लगा। ज्यूं ही कंस रक्त और दूध की धारा से हाथ मुंह धोने को तैयार हुआ तो अचानक सांप फन फैला कर उसे डसने को खड़ा हो गया। कंस ने उस सांप को काट डाला। सातों बाउलियां दूध, खून और सांप के कटे हुए टुकड़ों से भर गई।

इनदिरा वोला सोड़ा सारगोपी मूंड़ा गाही जो भौउंरा रींगा
सूड़ाटी डांगरी उड़ारी फरेऊ माण्डुआ तेरे मुड़ा गाही।

उसके बाद कंस के सिर पर भौंरा मंडराने लगा। अचानक इन्द्रलोक से सोलह सरगोपिओं की आवाज आई, 'हे माण्हू! (मनुष्य) तेरे सिर पर भौंरा मंडरा रहा है। इस सुल्टे खंडासे को ऊपर की ओर उल्टा कर दे। कंस ने खंडासे से भौंरा काट डाला। भौंरा काटने के बाद सातों बाउलियों में कमल के फूल खिल गये।

कौउलो जो फूला तेरे लोटाड़िए आणो
आणी हेरी मौउता घौरे राजा कांसैआ

कमल के फूलों के बीच में एक बड़ा फूल खिला था। कंस उस फूल को लोटे में डालकर घर लाया। घर में उसने वह फूल दांतुए भण्डार (बहुमूल्य दिव्य वस्तुओं व श्रृंगार आदि का भंडार कक्ष) में रख दिया। कंस अपनी मौत को कमल के रूप में घर ले आया।

कमल का फूल सूंघाने से देवकी व यशोदा का गर्भवती होना : इन्हीं दिनों कंस की बहनें देवकी और यशोदा भी कंस के घार आई हुई थीं। कमल का फूल छिपाकर कंस अपनी बहनों से कहता है।

तौमा लै ता बोलू गौ मेरी बैहंणियो देवकी दसोदे।
दांतुए भंडारा लै तौमें नाहंदी ना लागो।
दुई ता सै बैहणी आपू मांही हाणो कौरा ढूणों,
एऊ दांतुए भड़ारा दी हामा का कै डाहौ चोरी।

हे बहनों! तुम इस भंडार कक्ष में नहीं जाना। दो बहनें आपस में बात करती हैं। हमारे भाई ने इस भंडार कक्ष में ऐसी कौन सी वस्तु छिपा रखी है।

चाल् गै मेरी बैहणिए म्हारै हेरी आणो शाही
दुए सै बैहणी गै नाही गेई दांतुए भडारै।
दांतुए भंडारा दी तिना कै मैड़ी गैऔ कौउंला फूला
पैहला की बास ना तैहा देवकीए लैई वासा ना लैई तैहा देवकीए वोला शूकी गैऔ मेरेईगौ दुजी गौ बासा ना भाइयो लैई माता दसोदै।
कौउंला रो फूला मेरे भाईयो सोनू लुप्ता हुआ।

दोनों बहनें कहती हैं कि चलो देखकर तसल्ली कर लेती हैं। दोनों भण्डार में गई। उनको वहां कमल का फूल मिल गया। सबसे पहले कमल को देवकी ने सूंघा तथा फूल मुरझा गया। उसके बाद फूल को दसोदा ने सूंघा तथा फूल लुप्त हो गया। दोनों बहनें गर्भित हुई।

कांसें राजै दि गौ भाइयो गैओ भौरिमा पौड़ी।
आंगणा दी कांसे तेऊ राजैए तराकड़ौ लाओ।

(शेष पृष्ठ 49 पर)

समीक्षात्मक लेख

व्यंग्य और प्रतीकों से बुनी वशिष्ठ की कहानियां

✍ डॉ. आशा कुमारी

वरिष्ठ साहित्यकार सुदर्शन वशिष्ठ की कहानियां हिमाचली जीवन के यथार्थ से रू-ब-रू कराती हैं। इनकी कहानियों में मुख्य रूप से शोषित वर्ग, उपेक्षित वृद्ध, नारी उपेक्षा का संघर्ष, जातिगत विभेद, सरकारी तन्त्र में गठजोड़, राजनीति में भ्रष्टाचार, ग्रामीण एवं शहरी जीवन में अंतर, गांव से बिछोह और शहर से वापिस लौटने का मोह, आपसी सम्बन्धों की टूटन आदि को उजागर किया गया है। सुदर्शन की कहानियां ग्राम्य-कथा से ओतप्रोत हैं, जिसमें ग्रामीण जीवन के प्रति संवेदनशील दृष्टिकोण दिखाई देता है। शहर और कस्बों का जिक्र गांव के संदर्भ में ही किया गया है जिसमें गांव की छाया स्पष्ट दिखती है। ग्रामीण जीवन पर शहरीकरण का प्रभाव इनकी कहानियों में प्रस्तुत हुआ है। रोजी-रोटी की तलाश में ग्रामीणों का शहरों की ओर पलायन होता तो है किन्तु वृद्धावस्था में गांव का मोह उन्हें वापिस गांव खींच लाता है, जिसे वशिष्ठ ने मार्मिक ढंग से अभिव्यक्त किया है।

सुदर्शन वशिष्ठ के अब तक दस कहानी संग्रह प्रकाशित हो चुके हैं: अन्तरालों के घटता समय (1979), सेमल के फूल (1985), पिंजरा (1986), हरे हरे पत्तों का घर (1991), पहाड़ देखता है (1995), संता पुराण नाम से दूसरा संस्करण (1998), कतरनें (2000), पहाड़ पर कटहल (2003), वसीयत(2006), नेत्रदान (2014), कस्तूरी मृग (2022)। सात कथा चयन हैं : गेट संस्कृति (1988), विशिष्ट कहानियां(1998), माणस गन्ध (1998), इकतीस कहानियां (2014), सम्पूर्ण कहानियां (2016), मेरी प्रिय कहानियां (2019), मेरी ग्यारह प्रिय कहानियां (2021)। इनका जन्म 24 सितम्बर, 1949 ई. को हिमाचल प्रदेश के पालमपुर के निकट एक गांव में हुआ। इन्होंने अपनी रचनाओं के माध्यम से हिमाचली ग्रामीण जीवन से जुड़े विविध पक्षों को उजागर किया है। अनेक सम्मानों से अलंकृत वशिष्ठ को 'आतंक' उपन्यास के लिए 'जम्मू अकादमी' तथा 'हिमाचल अकादमी', 'नदी और रेत' नाटक के लिए 'साहित्य कला परिषद दिल्ली', 'जो देख रहा हूं' काव्य संकलन के लिए 'हिमाचल अकादमी' से सम्मान मिल चुके हैं। संस्कृति के शोध में इनका विशेष काम है।

वशिष्ठ की कहानियां मानवीय मूल्यों और रिश्तों को प्रतीकों के माध्यम बयान करती हैं जिनमें जगह-जगह व्यंग्य का पुट दिखाई देता है। सम्बन्धों में दरार, आपसी रिश्तों का बदलता स्वरूप कहानियों में दिखलाई पड़ता है। कहानियों में पिता-पुत्र, मां-बेटी, पति-पत्नी के आपसी सम्बन्धों को मनोवैज्ञानिक ढंग से चित्रित किया गया है जिसमें सम्बन्धों के कोमल तन्तु हैं, बारीक डोरियां हैं और नाजुक धागे हैं। मां के प्रसंगों में कथाकार बहुत भावुक हो जाता है और उसकी भाषा काव्यमयी।

इनकी हर कहानी में एक अलग भाषा और शैली के दर्शन होते हैं। वातावरण और पात्रानुकूल भाषा का विशेष ध्यान रखा गया है जिससे ग्राम्य परिवेश हो चाहे कस्बाई; दफतरी माहौल हो चाहे राजनीतिक; हर कहानी में अलग शिल्प देखने को मिलता है जो उसी कहानी के भीतर से उठाया जाता है।

वशिष्ठ ने कहानियों में काव्यमयी और व्यंग्यात्मक शैली का सटीक प्रयोग किया है। मार्मिक स्थलों में भाषा एकदम काव्यमयी हो जाती है। व्यंग्यात्मक शैली में लिखी कहानियां हृदय पर गहरी छाप छोड़ जाती है। इनकी कहानियों के विषय में सुशील कुमार फुल्ल का कथन है:

'वशिष्ठ की कहानियों में माधुर्य, अवसाद, भाव का ऐसा संगम है कि कहानी मनमोहक बन जाती है और बहुत अरसे बाद भी पाठक के मन-मस्तिष्क में टंगी रहती है। कथाकार पात्रों एवं स्थितियों का कुशल चितेरा है।'

'सेमल के फूल' सुदर्शन वशिष्ठ की प्रसिद्ध पत्रिका धर्मयुग में छपी पहली कहानी है जो इनके कथाकार को एक नया और प्रौढ़ रूप प्रदान करती है। इस कहानी के माध्यम से एक सिद्धहस्त कथाकार हमारे सामने प्रस्तुत होता है। कहानी निम्न

मध्यवर्गीय जीवन को चित्रित करती है जिसमें जातिगत भेदभाव, छुआछूत, आर्थिक विपन्नता, स्त्री शोषण, कामकाजी महिला, पुरुष की नपुंसकता आदि का चित्रण किया गया है। कहानी की पात्र जानकी गरीबी में पिसती उच्च वर्ग के घरों में बर्तन मांज कर जीवन का निर्वाह करती है। उच्च वर्ग के शोषण से मुक्त होने के लिए जानकी ने गांव के पास की नदी पर बांध बनाने वाले मजदूरों के लिए चाय बनाने का कार्य शुरू किया। जानकी का पति जग्गो अंत तक जानकी का विरोध करता रहा लेकिन वह अपने निर्णय से पीछे न हटी। उच्च वर्ग के लड़के जानकी के हाथ की चाय पीकर जाते-जाते फब्तियां कसते – 'वह जाते-जाते ताकता गया था कि हम कल फिर आयेंगे... जानकी को लगा, गिद्धों का झुंड, वंश का वंश सेमल के फूल चीथ डालने को क्रमवार तैयार पड़ा है।'

कहानी पुरुष की नपुंसकता को भी दर्शाती है जो उच्च वर्ग को खुश करने के लिए अपनी स्त्रियों को उनकी जी-हजूरी में पेश करते थे। जब मालिक सारी हदें पार कर स्त्री की देह को स्पर्श करते तब भी यह नपुंसक पुरुष उनका विरोध करने की बजाय उनके आगे नतमस्तक हो जाते और पत्नी पर ही अपनी ताकत दिखाते जो निम्न पंक्तियों में स्पष्ट है : 'बिलकुल निखट्टू हो गये हैं ये मर्द। जहां भी काम होता है, जवान औरतों को भेज देते हैं, वक्त-बेवक्त, जगह-कुजगह कुछ नहीं देखते। फिर मर्दानगी भी अपनी ही औरतों पर दिखाते हैं अपनी ही औरतें रह गई हैं तुम्हें पीटने के लिए! उन्हें क्यों नहीं कुछ कहते जो....।'

'सेमल के फूल' संग्रह की एक और प्रमुख और मार्मिक कहानी 'गेट संस्कृति' निम्नवर्गीय मंगलू हेस्सी की संघर्ष कथा है। गांव में माध्यमिक पाठशाला को उच्च माध्यमिक पाठशाला में अपग्रेड करने हेतु नेता पधार रहे थे जिसके लिए मास्टर जी, सरपंच और लम्बरदार महीनों से तैयारी में जुटे हुए रहे। मंगलू शहनाई बजाने में पारंगत था। विशेष अवसरों पर शहनाई बजाने के लिए उसे आमंत्रित किया जाता था। इस अवसर पर भी उसे बुलाया गया। ठाकुर के आंगन में रात भर शहनाई के स्वर बिखेरते मंगलू की सांसें कई बार रुकती जा रही थी पर ठाकुर की आज्ञा के बिना मंगलू अपनी शहनाई को विराम नहीं दे सकता था। ठाकुर के बाद नए ठाकुर नेताओं के रूप में सामने आ खड़े हुए। मंगलू इन परम्परागत रूढ़ियों को ढोने के लिए मजबूर था। कहानी में नेताओं पर व्यंग्य करते हुए आज की स्थिति को कहानी के एक प्रसंग में व्यक्त किया है – 'वक्त बदला, हालात बदले, अब ठाकुर नहीं हैं। उसकी जगह नये जीव तैयार हो गये हैं। मेलों में, धार्मिक कृत्यों में देवता उनके पास भाग जाता है। उन्हें टक्करें मारता है। वे हाथ बांधे, बाज नजरें झुकाये खड़े रहते हैं। ठाकुर की तरह वे बैठते नहीं, हां, कभी-कभी ऊँचे स्थान पर खड़े हो चीखते हैं, चिल्लाते हैं, खद्दर पहनते हैं पर ठाकुर के राजसी कपड़ों से भी महंगा।'

'संता पुराण' इनका अलग तरह का कहानी संकलन है जिसमें कई विशिष्टताएं नज़र आती हैं। कहानियों में एक अलग कथ्य, एक अलग तरह की शैली को गढ़ने का प्रयास किया भी देखने को मिलता है। हर कहानी एक दूसरी से जुड़ी होने से यह एक उपन्यासिका का भी आभास देता है।

सुदर्शन वशिष्ठ का 'संता पुराण' एक मात्र ऐसा कहानी संग्रह है जिसकी प्रत्येक कहानी का पात्र संता है। संता एक ऐसा प्रतीकात्मक शब्द है जिसमें जीवन की विविधता परिलक्षित होती है। लेखक ने संग्रह की भूमिका में लिखा है – 'संता किसी व्यक्ति या वर्ग का नाम नहीं है। वह प्रतीक है उस छटपटाहट का जो हर व्यक्ति झेलता है अपने भीतर अपने बाहर।

सुदर्शन वशिष्ठ का 'संता पुराण' एक मात्र ऐसा कहानी संग्रह है जिसकी प्रत्येक कहानी का पात्र संता है। संता एक ऐसा प्रतीकात्मक शब्द है जिसमें जीवन की विविधता परिलक्षित होती है। लेखक ने संग्रह की भूमिका में लिखा है – 'संता किसी व्यक्ति या वर्ग का नाम नहीं है। वह प्रतीक है उस छटपटाहट का जो हर व्यक्ति झेलता है अपने भीतर अपने बाहर। यह जरूरी नहीं कि वह रिक्शा पुलर या मजदूर ही हो। वह संता न होकर संतराम, संतराम शर्मा या फिर शर्मा, वर्मा या एस.आर. भी हो सकता है। वह एक बाबू, एक अफसर भी हो सकता है। वह मैं या आप भी हो सकते हैं। यदि वह मजदूर न होता, एक बाबू होता तब भी मनोस्थितियां वही रहतीं, मात्र स्थितियां बदलतीं।'

संकलन की तेरह कहानियों में संता और भूरी की कथा चलती है जो कभी-कभी एक उपन्यास का भान कराती है जबकि यह सभी कहानियां स्तरीय पत्र-पत्रिकाओं में अलग-अलग छपी हैं।

'संता पुराण' कहानी संग्रह में एक विलक्षणता दिखाई देती है, कथ्य में भी और भाषा में भी। भूरी और बंतो के संवाद, संते और उसके साथियों का वार्तालाप पाठक को उसी संसार में ले जाता है। संग्रह की प्रत्येक कहानियों का पात्र 'संता' है जो अपने उपेक्षित समाज का प्रतीक है। 'संता' केवल एक नाम ही नहीं अपितु 'संता' के माध्यम से समाज के विविध पक्ष प्रतीकात्मक रूप से चित्रित है। सुदर्शन वशिष्ठ ने इस तरह का एक नया प्रयोग कहानी में किया है। 'संते के लिए' समर्पित संग्रह की तेरह कहानियां : सिमले वाला संता, गंध का दरिया,

हंसना मना है, पत्तरझाड़, चट्टानों के बीच, खुश्क पत्ते, भूत बासा, सर्दियों में, परछाईं के पीछे, पहाड़ देखता है, कोहरा, खिन्नू और सुरंगे एक ही नायक और एक ही नायिका पर लिखी गई हैं।

कहानी 'गंध का दरिया' जिसकी मूल संवेदना स्त्री अस्मिता और गरीबी है। कहानी का पात्र संता शिमला में कुली का काम करता था। वह अपनी पत्नी भूरी को शिमला ले जाता है और कर्ज न चुका पाने के कारण उसका व्यापारीकरण करता है। वह किसी तरह से भागकर अपने मायके आ जाती है। कुछ समय बाद वह उसे वापिस ले जाने आया तो भूरी की माँ ने उसे जाने न दिया और संता भी वहीं रहने लगा। बंतो ने उसे दिनभर बेकार बैठा देख घर से निकाल दिया। वह शराब के नशे में बंतो को भला बुरा कहता। समाज में स्त्री का अस्तित्व पुरुष बिना अधूरा है। पुरुष चाहे कितनी भी यातना क्यों न दे लेकिन पुरुष का साथ स्त्री के लिए एक रक्षा कवच जैसा होता है। कहानी के एक प्रसंग में बंतो कहती है – 'हम औरतों के लिए मरद का सहारा चाहिए होता है। मरद चाहे मिट्टी का माधो हो तब भी वह मरद होता है। मरद के बिना हम औरतें बेपरदा हो जाती हैं। यहां रह जाए तो अच्छा है मरद तो है चाहे बांस की तरह से खोखला है। फिर भी मरद है लम्मा-झम्मा। लोगों को डर तो रहेगा।' कहानी के अंत में संता भूरी को साथ ले जाकर शिमला में कमाने लगा। भूरी को विदा कर बंतो ने महसूस किया कि उसने असल में लड़की को विदा किया है।

'हंसना मना है' एक छोटी मगर प्रभावी कहानी है। कहानी में संता को भूरी की हंसी रहस्यपूर्ण लगती है। जब वह काम पर जाता है तो उसे लगता है कि सब उसे देखकर हंस रहे हैं कोई बात करते हुए दिखता तो लगता उसी की बातें कर रहे हैं। वह कई अनहोनी बातें सोचता रहता। उसे स्टेशन पर कोयले बीन रही लड़की दिखाई दी। जैसे ही इंजन आने लगा लड़की ने लेट कर अपना कान पटरी पर रख दिया। इंजन को आते देख संता चिल्लाया, हट जा! लड़की हंसती हुई उठी और पूर्ववत कोयले बीनने लगी। उसके हृदय में एक भय पसर गया वह खुद को संयत न कर डेरे की ओर भागा। वहां स्त्रियों के समूह में बैठी भूरी को हंसता हुआ देख सहम गया। और अंत में खुद को संयत कर वह भी खुल के हंसता है। जीवन की मुश्किलों ने उसे इतना असहाय बना दिया था कि वह हंस नहीं सकता था। हंसने का मतलब तो खुश होना होता है लेकिन संता के पास ऐसी कोई खुशी नहीं थी कि वह हंसता। कहानी के एक प्रसंग में स्पष्ट है – 'कहते है हंसना सेहत के लिए जरूरी है। न वह खुद हंसता है, न उसने कभी किसी साथी मजदूर को हंसते हुए देखा है। न वे हंसते हैं, न कोई उनसे हंस कर बात

दोहे

✍ मांगन मिश्र 'मार्त्तण्ड'

**पिक-स्वर चूमे मंजरी, बैठ आम्र की कुंज।
ऋतुपति के चहुँ ओर से, उठती है अनुगूँज।।**

**जग बैठा बारूद पर, हवा विषैली आज।
सूरज डूबा अमन का, उड़े प्रलय के बाज।।**

**बूढ़ा बरगद ढो रहा, सबका सुख-दुख, घाव।
झेल रहा पर आज वो, अपनों का विलगाव।।**

**जंगल के जनतंत्र में, मुखिया हुआ बबूल।
चुन-चुन कर अब भोंकते, विरोधियों को शूल।।**

**जाति-धर्म से जुड़ गया, जब लोगों का कर्म।
भारत से भी अब बड़ा, अपना-अपना धर्म।।**

**काली रातों में सदा, करता जो व्यापार।
अभी उजाले का वही, बन बैठा सरदार।।**

**है प्रेम, ज्ञान, भक्ति का, राम एक आधार।
मानव वही, जहाँ बहे, राम-रसों की धार।।**

**शबरी-जूठे बेर का, सहज प्रेम को जान।
दिया ज्ञान प्रभु राम ने, नवधा भक्ति प्रमाण।।**

**पीत वसन में श्याम छवि, सिया राम के संग।
मन मोहक है रूप यह, लज्जित कोटि अनंग।।**

**हृदय बसी है राधिका, तन यह श्याम-गुलाम।
मन-यमुना में बह रही, प्रीति लहर अविराम।।**

**राम बसा है जिस हृदय, उसका बेड़ा पार।
आज जगत में राम ही, शांति, मुक्ति आधार।।**

**गृह-वाटिका गमक रही, बहती प्रेम-बयार।
लौटीं खुशियाँ बाप की, बेटी घर-संसार।।**

प्रधान संपादक ' संवदिया ' (साहित्यिक पत्रिका),
बंगाली टोला, फारबिसगंज- 854318, बिहार,
मो. : 9973269906

करता है। सब के चेहरे सपाट हैं लकड़ी के मुखौटों की तरह। उनके लिए हंसना मना है। काम न मिले तो वैसे ही चेहरे पर शिकन बढ़ती जाती है। बोझा उठा लें, सिर पर भार पड़ने से चेहरा खिंच जाता है। हंसने के लिए चेहरे पर शिकन या खिंचाव का न होना जरूरी है।'

एक और महत्त्वपूर्ण और मारक कहानी 'पहाड़ देखता है' है। इस कहानी में संते का जीवनयापन के लिए संघर्ष उसके घर के सामने के पहाड़ की तरह है। सैलानी पहाड़ देखने आते हैं और पहाड़ उसे देखता है। सैलानियों का बोझा ढोते हुए, उनके गोल मटोल बच्चे कन्धे पर उठाते हुए वह भूरी को पाने का संकल्प लिए दिन रात कमाई में जुटा रहता है। सैलानियों की मौज मस्ती में संते का संघर्ष एक कारूणिक वातावरण पैदा करता है। कहानी का अंतिम वाक्य....कितने मस्त होते हैं ये पहाड़िए! बहुत कुछ कह जाता है।

'कोहरा' कहानी में नारी की दुर्दशा, वृद्धावस्था की समस्याएं और पुरुष प्रधान समाज का नारी शोषण आदि कई स्थितियों को उजागर किया गया है। कहानी की पात्र मनसा का नौ वर्ष की उम्र में विवाह हुआ था। शराबी पति उसे बहुत मारता था और एक बार तो जान से मारने के लिए दराती फेंकी और उसके गाल में लगी जो हमेशा के लिए निशान छोड़ गयी। पति की मृत्यु के बाद उसे बेटे की मार सहनी पड़ी। मनसा के तीन बेटियां और एक बेटा था। कहानी में एक स्थान पर विधवा स्त्री की समस्या चित्रित है – 'विधवा माँ के बेटे ने बहनों और अपने ब्याह तक झेला। ब्याह के बाद माँ बुरी लगने लगी। मर्जी हुई तो टुकड़ा फेंका, नहीं हुई तो नहीं फेंका।' जब बेटा उसे मारता तो संता उसका हाथ पकड़ लेता। मनसा ने तंग आकर संता से विवाह कर लिया। संता शहर में मजदूरी करता था। एक दिन उसके मित्र ने संता के आने की खबर दी तो मनसा इस खुशी में तड़के उठकर घर की लीपापोती करने लगी और संता के इंतजार में उसकी व्याकुलता बढ़ती रही। दूर खड्ड में कोई बंसी बजा रहा था जिसकी धुन मनसा की रोम-रोम को उद्वेलित कर रही थी। स्वर का कोहरा चारों ओर फैला उसके अंतस में घर कर गया। ऐसे क्षण उसे अतीत में ले जाते हैं, जो कहानी की निम्न पंक्तियों में द्रष्टव्य है – 'ऐसे क्षणों में कई बरस पीछे चली जाती है उम्र। मन फिर से जीता है वे क्षण, जो समझते हैं दूसरे कि वह जी नहीं सकता। समय की मार खाये शरीर के भीतर मन बेअसर रहता है, चिरयौवन को भोगता। मन तो उड़ता रहता है हल्का-फुल्का, उम्र का पंछी चाहे उड़ान भरे न भरे।' इस कहानी में प्रतीकात्मक ढंग से स्त्री की पीड़ा को अभिव्यक्त किया गया है। कहानी का शीर्षक 'कोहरा' स्त्री के संघर्ष और आंतरिक पीड़ा का प्रतीक है।

'सुरंगें' कहानी के पात्र संता ने जीवन का अधिक समय शिमला में व्यतीत किया और वृद्धावस्था में गांव लौटा। गांव की जमीन भाई बिरादरी में बंट चुकी थी और संता के नाम कुछ नहीं रहा। संता जीवन के ऐसे पड़ाव पर गांव लौटा जब उसे कोई पहचानता भी न था। कड़ाके की सर्द रात में संता बस अड्डे पहुंचा और पैदल ही गांव की ओर चल दिया। भोर होने के इन्तजार में वह अपने दोस्त की दुकान के पास बैठा। कोई लड़का दुकान खोलने आया तो संता ने उसका हाल पूछते हुए उसे पहचानने की कोशिश की। संते ने स्वयं अपना परिचय दिया और लड़का उसे पहचान गया और बोला 'शिमले वाला संता' यह सुन संता को गर्व महसूस हुआ। गांव के रास्ते में वह अपने एक अन्य मित्र के घर गया तो बरामदे में ही उसका मित्र मिल गया। उसने अपने परिवार से शिमलावाला संता नाम से उसका परिचय कराया। वह कह उठा कि मै शिमला वाला नहीं हूं। मै सब कुछ छोड़कर हमेशा के लिए अपने गांव आया हूं। कहानी के अंत में वह अपने भाई के घर पहुंचता है उसे मांगनेवाला समझ कर बच्चा पहले चावल और फिर खिचड़ी ले आता है। लोहड़ी का पर्व था तो खिचड़ी खाते हुए संता असंख्य स्मृतियों में खो गया। कहानी में एक स्थान पर संता प्रतीकात्मक ढंग से कहता है – 'मन में न जाने कितनी सुरंगें होती हैं। खेत में चूहे के बिलों की तरह भीतर ही भीतर फैली। खेत में जब पानी देते हैं तो कहीं का कहीं निकल जाता है। कभी एक खेत के बीच गायब होकर तीसरे खेत में निकलता है। कहीं अचानक गुम हो जाता है तो पता नहीं चलता कहां गया। सुरंगों में पानी भर जाने पर चूहे खेतों में इधर-उधर भागते हैं। ठीक ऐसे ही मन की सुरंगों में जब यादों का पानी भरता है तो पता नहीं कहां का कहां निकल जाता है।' जीवन के आखिरी पड़ाव में अपने पुश्तैनी घर और जमीन पर ही आना पड़ता है। शहर में रहते-रहते गांव से मनुष्य की पहचान खो जाती है और गांव से नाता टूट जाता है।

संते का रेलवे लाइन के नीचे बने मेहराबों में रहना, इसी खोह में भूरी से अनाचार, ऊपर से धड़धड़ाती रेल के गुजरने पर संती का समय से पहले सफेद बच्चे को जन्म देना आदि बहुत ही मार्मिक चित्र कहानी में देखने को मिलते हैं जो शिमले में रहते संते के संघर्षमय जीवन को दर्शाते हैं।

'संता पुराण' पांचवां (1998) कहानी संकलन है तो 'कतरनें' छठा (2006)।

'कतरनें' कहानी संग्रह की प्रथम कहानी 'सोच का शाप' है। यह कहानी अपने भाषिक स्वरूप में एक अलग प्रयोग सी प्रतीत होती है। यद्यपि सारी कहानी एक फौजी बेटे और पिता पर केन्द्रित है और पिता अपने फौजी बेटे की फिक्र में व्याकुल होता था। कहानी एक बुरे स्वप्न से आरम्भ होती है। बेटे के कारण पिता जैचंद अपनी व्याकुलता को खत्म करने के लिए

बैकुंठधाम पर ध्यान लगाने गये लेकिन वहां भी उनका मन अपने फौजी बेटे पर ही केन्द्रित रहा और वह विचार करने लगे। यदि मनुष्य में सोच की शक्ति न होती तो वह कितना मुक्त होता। कहानी में बहुत बातें अस्पष्ट रखी गई हैं। क्योंकि जैचंद का अपने पुत्र की मृत्यु को ध्यान में देखना, पत्नी द्वारा स्वप्न देखना ये बातें स्पष्ट हैं जबकि उनका एक बुरा स्वप्न अंत तक स्पष्ट रहता है। कुल मिलाकर कहानी एक बलिदानी वीर की अंतिम यात्रा को बड़े मार्मिक ढंग से व्यक्त करती है जिसमें दिवंगत फौजी बेटे के बूट, कपड़ों को धूप में सुखाना एक मार्मिक चित्र प्रस्तुत करता है।

सुदर्शन वशिष्ठ ने अधिकतर कहानियां प्रतीकात्मक ढंग से बुनी हैं। वशिष्ठ किसी भी विषय को हास्य-व्यंग्य तथा मजाकिया ढंग से कहानी में पिरोते हैं।

'दादा का प्रेत' घटना प्रधान कहानी नहीं है बल्कि यह आत्मीय सम्बन्धों और घनिष्ठ मानवीय रिश्तों को एक नए रूप में परिभाषित करती है। सुदर्शन वशिष्ठ कथा के लिए अपनी एक अलग ही शैली गढ़ते हैं, जिसमें हास्य व्यंग्य और मजाक के माध्यम से चुटीले और मार्मिक विषयों को प्रस्तुत करते हैं। इस कहानी में वृद्धों की समस्या को न केवल प्रस्तुत किया गया है बल्कि घर में उनकी उपस्थिति और जरूरत को बिलकुल अलग ढंग से चित्रित किया गया है : 'गोबर लिपे कमरों में सभी जने मिलजुल कर रहते। ताया, चाचा, बूएं, उनके बच्चे, पाँच बूएं, ब्याह के बाद भी आती-जाती रहतीं। इन सबके बच्चे जब शोर मचाते तो चिड़ियों की तरह लगते। किसका बच्चा कहां खा-पीकर सो गया है, पता नहीं चलता। सभी जनें इकट्ठे होकर उठते-बैठते-सोते, किसी एक का न होते हुए भी वह घर सबका था, सभी का होते हुए भी किसी एक का न था। अपना-अपना तो कुछ था ही नहीं, सब सांझा था।'

'सती का मोहरा' अन्धविश्वास पर केन्द्रित कहानी है, जिसमें घर बनाते समय कहानी के पात्र महेंद्र को सती का मोहरा मिलता है और वह मान बैठता है कि उस स्थान पर कोई स्त्री सती हुई है और उसका शाप फलने-फूलने नहीं देगा फिर इस अन्धविश्वास के भय से वह उसकी पूजा प्रतिष्ठा करते हैं। कहानी का मुख्य पात्र और उसका पिता पूरी तरह से अन्धविश्वास में डूबे रहते हैं। कहानी के अंत में नींव में गढे चक्के पर कुत्ते द्वारा पेशाब करने पर उसने कुत्ते को नहीं भगाया और एक प्रकार से अपने भीतर के अंधविश्वास को पिता के मन में कुत्ते के प्रति मानवीयता दिखाकर खत्म कर दिया।

'सन्नाटा' कहानी जनजातीय क्षेत्र में नौकरी करने वाले व्यक्ति की कथा है। जो बर्फ से घिरे रेस्ट हाउस में फंस गया था। जोत की पहाड़ियों पर अंधाधुंध बर्फबारी होने से उसे तीन महीने तक संघर्ष करना पड़ा। घर वालों को उसकी कोई खबर न थी वह उसके लिए शोक मनाते रहे। बर्फ पिघलने और मौसम साफ होने के बाद वह घर लौटा तो उसके घरवाले भिखारी समझ कर उसी के श्राद्ध की रोटियां उसे देने लगते हैं। रोटियां देते अपने बेटे के हाथों को वह कस कर पकड़ता है। इतने में बंधा हुआ कुत्ता छुट कर आया और खाना खाने की बजाय वह अपने मालिक को सूंघते व चाटते हुए उसकी गोद में बैठ गया। कहानी का अंत बेहद मार्मिक है - 'अदृश्य वस्तु अपने होने का अहसास किसी न किसी तरह करवाती है। सन्नाटा भी ऐसे ही है, अदृश्य, गुमसुम। दिखाई नहीं देता, होता है। हर समय, हर जगह। जैसे हवा भी होती है हर समय हर जगह, दिखाई नहीं पड़ती। ऐसे बहुत-सी चीजें हर समय, हर जगह विद्यमान रहती हैं, दिखाई नहीं देतीं। जैसे अतीत आसपास रहता है हमेशा। हवा की तरह! वर्तमान से भी ज्यादा जिन्दा।'

'वसीयत' संग्रह 2006 में प्रकाशित हुआ जिसकी केवल दो कहानियों का उल्लेख यहां किया जा रहा है।

शीर्षक कहानी 'वसीयत' कहानी में वृद्ध समस्या को उजागर किया गया है। यह कहानी विश्वनाथ और जयकिशन के ईर्दगिर्द चक्कर लगाती है। कहानी में एक ओर विश्वनाथ का जीवन संघर्ष चित्रित है तो दूसरी ओर जयकिशन का। जयकिशन का बेटा-बहू विदेश चले गये थे। वृद्धावस्था में जयकिशन अकेला रह गया था। विश्वनाथ ने मिशन स्कूल में प्रिंसिपल पद के लिए आवेदन किया और उसे वहां नौकरी मिल गई। वह नैतिक शिक्षा पढ़ाता था जिसमें उसे प्रभु यीशु की शिक्षाएं पढ़ानी होती और कुछ दिनों बाद वह कक्षा में एक साथ यीशु और गीता का उपदेश देने लगा बच्चे उसे पागल समझने लगे। कहानी के अंत में विश्वनाथ अपनी वसीयत लिखना चाहता था। कहानी की निम्न पंक्तियों में बताया गया है कि - 'अकसर आदमी अपनी होशोहवास में वसीयत नहीं लिखता। वह पूरी होशोहवास में लिखना चाहता था। जमीन जायदाद के अलावा भी होता है जो आदमी अपनी संतानों को देना चाहता है। वे उसे लें या न लें, यह अलग बात है। आदमी का सच, जीवन में कमाया मान सम्मान, उसका अच्छा रसूख, अच्छा बर्ताव, उसकी तमाम अच्छाईयां, खूबियां आदि कुछ ऐसी चीजें है, जो वह देना चाहता है।' कहानी के अंत में वह हररोज की तरह प्रार्थना नहीं करता बल्कि उसकी प्रार्थनाओं में अपनी संतानों के लिए सुख की कामना करता है कि उसके जीवन की अच्छाईयों का फल उसके बच्चों को मिले और सारी बुराइयों का फल वह स्वयं भोगे।

कहानी 'मीठा भात' ग्रामीण पारिवारिक सम्बन्धों की कथा

है। कहानी में व्यंग्यात्मक ढंग से ग्रामीण और शहरी जीवन का मार्मिक चित्रण हुआ है। वह कई समय बाद गांव आया। उसे गांव का परिवेश भाता है और वह कई दिन वहीं रहना चाहता है। जब वह गांव आता है तो चाय किसी के घर, तो खाना किसी दूसरे के घर खाता। यदि किसी के न जाओ तो नाराज हो जाते। गांववाले एक-दूसरे से मेल-मिलाप से रहते थे। शहरों के लोग तो गांव वालों को मूर्ख समझते हैं। वे नहीं जानते कि गांववाले अपने अतीत, वर्तमान और भविष्य को कितनी गहराई से जानते हैं। ताऊ जी कहते शंकरदत को गांव में अपनी पुश्तैनी जमीन पर घर बनाना चाहिए बुढ़ापे में किसके आसरे रहेगा। शहर में कोई किसी को नहीं पूछता, अपना घर अपना ही होता है। ताई रोते रोते कहती है यदि देवरानी होती तो ....बात पूरी नहीं कर पाती। कहानी के अंत में - 'सबकी नजर अब मीठे भात पर थी। ताऊ ने भरती के मोटे तले वाले पतीले में कड़छी मारी। मीठा भात नीचे लगा था। इस लगे हुए लाल भात का स्वाद ही और होता है। 'ताऊ नीचे लगा हुआ भात मुझे दो. ...' मैंने भी बच्चों की तरह कहा। 'ले पुत्तर। खा तू। तेरे लिए ही बनाया है।' ताई ने कहा।

'बिरादरी बाहर' में कथाकार ने एक अछूते विषय को उठाया है। निम्न वर्ग में अच्छी नौकरी में आने पर एक और वर्ग तैयार होने की कथा है जो आज आम देखा जा रहा है। जीवन स्तर ऊंचा हो जाने पर एक और ही वर्ग आ खड़ा होता है जो अपने जाति भाईयों से दूर हो जाता है। कहानी निम्न और अछूत लौंगूराम की वृद्धावस्था को भी व्यक्त करती है। कहानी का मुख्य पात्र लौंगूराम जूते बनाने का काम करता था। उसके दो बेटे थे बड़ा बेटा आतो (आत्माराम 'कमल') और छोटा ख्याली दोनों पढ़ाई में होशियार थे। आतो को आठवीं और दसवीं कक्षा में वजीफा लगा था। वह पढ़ लिखकर चीफ अभियंता हो गया और ख्याली बाबू हो गया। बापू ने ख्याली का विवाह कराया। आतो शादी करने से इन्कार करता रहा। पहले मना करता रहा और फिर अपनी जात बिरादरी से बाहर की बहू ले आया। उसने कई जगह नौकरी की और अंत में राजधानी आ गया। एक दिन लौंगूराम आतो के पास शिमला गया। आतो बापू को लेने पहुंच गया था। आतो की बहुत बड़ी कोठी थी जिसका स्टोर रूम बापू के लिए खाली कराया गया था। बापू कोठी में पहुंचा उसका निरीक्षण करने लगा और कुछ देर बाद बहू आई और नौकर को चाय के लिए कहा। बापू असहज महसूस कर रहा था। कोठी में कई बड़े-बड़े अफसर आते जाते और कभी बहू की सहेलियां भी आतीं। वृद्ध बापू इस परिवेश में खुद को असहज महसूस करता। घर का नौकर बिहारी लौंगूराम का ख्याल रखता था। एक बार घर में बड़े-बड़े अफसरों की बैठक थी, अनेक प्रकार के व्यंजन बने थे। बापू की किसी को कोई सुध न थी। सब खा चुके तो नौकर बिहारी बापू को खाना देता है तो वह उस खाने को निगल न सका। प्लेट रखने लगा तो चम्मच गिर गयी, जिसकी आवाज से उसे अपनी रोजीरोटी के औजार याद हो आये और उसे लगा जैसे वे उसे बुला रहे हैं। आधुनिक पीढ़ी वृद्ध माँ-बाप के प्रति संवेदन शून्य होती जा रही है। सब से बड़ी बात कि पढ़ा-लिखा वर्ग जो आरक्षण पा बड़ी नौकरियों तक जा पहुंचता है अपने अछूत वर्ग से छिटक कर एक नया ही वर्ग खड़ा कर देता है जिसमें पिछड़े और शोषित अछूतों के लिए कोई जगह नहीं।

सुदर्शन वशिष्ठ ने अधिकतर कहानियां प्रतीकात्मक ढंग से बुनी हैं। वशिष्ठ किसी भी विषय को हास्य-व्यंग्य तथा मजाकिया ढंग से कहानी में पिरोते हैं। इनके 'संता पुराण' संग्रह की कहानियों का पात्र संता है जिसके माध्यम से लेखक ने अनेक कथाएं रची हैं जिसमें आंचलिकता, दाम्पत्य जीवन, निम्नवर्ग के प्रति संवेदना, मानसिक उद्वेलन, आर्थिक विपन्नता, शिक्षा का अभाव, स्कूलों की दयनीय स्थिति, उपेक्षा, चिकित्सकों का बर्ताव, स्वतन्त्रतापूर्व और स्वातंर्त्योत्तर स्थिति, स्त्री जीवन का यथार्थ, उच्च वर्ग की मानसिकता, गांव और शहर का जीवन तथा अपने परिवेश से जुड़े विविध पहलू प्रमुख हैं।

'हंसना मना है', 'पहाड़ देखता है', 'सोच का शाप' जैसी इनकी छोटी कहानियां ज्यादा मार करती हैं। कथाकार ने विस्तार से बचते हुए जो बातें सार रूप में कही हैं, वे बहुत प्रभाव डालती हैं।

'सेमल के फूल', 'गंध का दरिया', 'हंसना मना है' आदि कहानियां गरीब, मजदूर और स्त्री जीवन की समस्याओं को मार्मिक ढंग से व्यक्त करती हैं।

वृद्धावस्था जीवन का एक संवेदनशील पड़ाव होता है। वशिष्ठ की 'कोहरा', 'सुरंगें', 'बिरादरी बाहर', 'वसीयत' आदि कहानियों में वृद्ध जीवन का सत्य व्यक्त हुआ है। इनकी कहानियां राजनीतिज्ञों और उच्च वर्ग की शोषित प्रवृत्ति पर कड़ा प्रहार करती हैं। साथ ही निम्न वर्ग के संघर्ष की परतों को खोलती हैं। निम्न जाति के लोग देवता के वाद्ययंत्रों को ढोते, बजाते अपनी पूरी जिन्दगी बिता देते हैं और बदले में उन्हें उपेक्षा ही मिलती है, जिसे वशिष्ठ की कहानियां सूक्ष्मता से प्रदर्शित करती है। इनकी 'गेट संस्कृति', 'सेमल के फूल' आदि कहानियों में उपेक्षित जीवन का यथार्थ उद्घाटित हुआ है।

सहायक आचार्य (हिंदी विभाग) आई.ई.सी.
विश्वविद्यालय, बद्दी, हिमाचल प्रदेश-174103,
(मो. 9805193104)

संस्मरण

'अमरीका में अमृत'

✍ पारुल अरोड़ा

सागर मंथन में एक दिशा में राक्षस और दूसरी दिशा में देवता विशाल पर्वत से लिपटे शेष नाग महाराज जी को रस्सा कशी के खेल की तरह अपनी अपनी दिशा में खींचते तो कभी ढीला छोड़ते। सागर से एक पात्र प्रकट हुआ जिसमें अमृत था। जिसे ग्रहण करके कोई भी अमृत्व को प्राप्त होता। सुबह का समय था लगभग दस बजे होंगे। माता श्री देवी रानी जी मेरे पास अध्ययन कक्ष में आईं।

मेरी माता जी ने मुझ से कहा उन्हें अमरीका से अमृत का फोन आया है। अमृत मेरी स्वर्गीय बुआ मधुबाला जी का पुत्र है। बुआ जी का नाम तो मधुबाला था पर लगते केटरीना की तरह थे। बस शरीर कुछ ज्यादा ही भारी था। उनका लाड़-प्यार तो अभी भी नहीं भूला हूं। मेरी कोई बहन नहीं थी तो मुझे राखी भी भेजते थे डाक से। मेरा नाम भी तो उन्होंने ही रखा था। कुछ तो मेरे नाम से बचपन से ही मुझे लड़की समझ लेते हैं। फिर कई बार मेरा मजाक बनता 'ऐ ता मठ्ठियां रा नाओं हुआं' (ये तो लड़कियों का नाम होता है) सुश्री देवी बिटिया पारुल, नाम से आज भी पत्र-पत्रिकाएं, आरटीआई घर पहुंचती है। मुझे अपने नाम से कोई आपत्ती नहीं है।

विदेश में कमाए कुछ पैसे यहां भेजना चाहता था अमृत। तीन महीने पहले ही विदेश गया था। मैंने माता जी से पूछा कितने पैसे? उन्होंने कहा लगभग आठ लाख बीस हजार रुपये। मैंने माता जी के कहने पर माता जी का अकाउंट उसे व्टसऐप पर भेजा दिया। व्टसऐप के माध्यम से ही उसकी कॉल भी आयी थी। माता जी की अमृत से मेरे सामने भी बात हुई। मुझसे बात होने ही वाली थी कि फोन कट गया। मैं अपने काम में लग गया माता जी भी ऊपर घर में चली गई।

मेरी बुआ जी की शादी पंजाब के जिला कपुरथला के एक छोटे से गांव मोठावालां में हई थी। कपूरथला राज परिवार से मण्डी के राज परिवार के भी अच्छे संबंध रहे हैं । मण्डी की रानी भी कपूरथला राज परिवार से थी। बुआई जी को गांव में सभी शाह जी कहते है। मेहनत करके गांव में ही बहुत बड़ा व्यापार स्थापित किया आर्थिक रूप से सम्पन्न होने के साथ अध्यात्म में भी रुचि रखते थे। पढ़ाई में भी बहुत अच्छे थे, एक बार जब उनके पूरी कक्षा में सबसे अधिक अंक आए तो दूसरे विद्यार्थियों ने उनकी शिकायत शिक्षकों से की, कि उन्होंने कुछ गड़बड़ की है। बुआई जी की दोबारा परीक्षा ली गई तो दोबारा सबसे अधिक अंक प्राप्त किए। बुआई जी का स्वभाव भी विनम्रता, सहनशीलता, बहुत बड़ा दिल। माता जी बताते हैं जब पहली बार बुआईजी को विवाह के लिए देखने गए तो उन्होंने गोबर से भरा टोकरा सर पर उठाया हुआ था। खेत से घर आ रहे थे।

मैंने बचपन से अपने माता-पिता जी के साथ बसों में लम्बी -छोटी बहुत सी यात्राएं की हैं खास कर माता जी के साथ। जब छोटा था तो छुट्टियों में कई बार मण्डी से मैं और माता जी बस पर ही मोठावालां पिंड(गांव) जाते। कम से कम तीन बसें बदलनी पड़ती थी वहां पहुंचने के लिए। मण्डी से जालंधर, जालंधर से कपूरथला, कपूरथला से तलवंडी, तलवंडी नामक स्थान से भूंड नामक वाहन या टांगे पर सवार हो कर मोठावालां गांव पहुंचते थे हम।

यह गांव सुल्तानपुर(सर्वमानपुर) शहर के पास ही है। सुल्तानपुर भारत का एक ऐतिहासिक शहर रहा है। यह काली नदी के पास है। नाम से प्रतीत होता है कि यह नदी काली माता से सम्बंध रखती होगी। मुस्लिम आक्रांता महमूद गजनवी ने इस क्षेत्र पर आक्रमण कर इस हिंदू-बौद्ध शहर को जला कर नष्ट किया था।इस स्थान का नाम सुल्तानपुर मुस्लिम आक्रांता के सेनापति के नाम पर पड़ा उससे पहले यह शहर सर्वमानपुर के नाम से जाना जाता था। एक अनुमान है यहां 32 से अधिक प्रमुख बाजार थे। सिख पंथ के संस्थापक गुरु नानक जी के जीवन से यह शहर प्रमुखता से जुड़ा है, गुरु नानक जी से जुड़ा दूसरा प्रमुख स्थान नानकाना साहिब (अब पाकिस्तान) यहां

करतापुर कॉरिडोर बनाया गया है। 1488 में गुरु नानक जी का विवाह भी सुल्तानपुर की बीबी सुलखनी जी से हुआ था। गुरु जी के दो बच्चे भी हुए जिनका नाम श्री चंद जी और लक्ष्मी चंद जी था। दारा-शिकोह ने सुल्तानपुर में ही अपनी शिक्षा पूर्ण की थी। बैशाखी, गुरु नानक जयंती, गुरु अर्जन जी का बलिदान दिवस और महाराजा रणजीत सिंह की पुण्यतिथि पर श्रद्धालु एकत्रित होते हैं। जब हम मोठावालां आते तो सुल्तानपुर जरूर घूमने जाते थे।

गांव का भोजन, मक्खन का स्वाद वैसा आज तक कुछ नही ग्रहण किया। जैसे आज शहरों में बड़े-बड़े विशाल शोपिंग माल में एक जगह ही सब मिल जाता है। वैसे ही बुआई जी की बड़ी हट्टी उन दिनों में भी सब मिलता। एक क्षण का समय नहीं होता ग्राहकों की भीड़ लगी रहती हट्टी पर। बुआ भी पूरा साथ निभाती थी। किसी भी उत्सव के समय जाता, चाहे दीपावली, होली, लोहड़ी तो उत्सव से सम्बंधित वस्तुएं उपहार स्वरूप मिलती।

सन् 2000 के आस-पास की बात है। मेरे बुआई जी राज जी को बजाज कम्पनी का चेतक स्कूटर किसी स्कीम में निकला था। उन दिनों बुआई जी के पिता जी भी थे। उनकी बड़ी-बड़ी सफेद मूंछें थी। वो मुझे खल्ल, एक प्रकार की खाद किसानों को बेचने के लिए हट्टी के साथ स्टोर में भेजते। तो किसान मुझसे पूछते अंग्रेजी में जो लिखा है पढ़ कर बता क्या लिखा है और कौन सी अच्छी खल्ल है। जो मुझे समझ आता मैं बताता। बुआई जी मुझे सुबह-सुबह स्कूटर सिखाने ले गए मैंने जीवन में पहली बार स्कूटर चलाया मै बहुत हिल रहा था। उन्होंने मेरी तुबी पर एक चपट लगाई कि करदा पया है। फिर शाम को मैं स्कूटर अकेले घर से थोड़ा दूर ले गया मेरे पीछे गांव के बहुत से बच्चे भाग रहे थे। एक दम से पता नहीं क्या हुआ स्कूटर उछला और मैं गिर पड़ा बुआईजी दौड़ कर आए और मुझे उठाया मैं ठीक था। उनके विवाह की पच्चीसवीं सालगिरह का समारोह कैसे भूल सकता हूं। मेला लगा था उस दिन जहां उन्होंने कार्यक्रम करवाया था। सारे सगे संबंधियों, गांव वालों का वहां उपस्थित होना, ऐसे ही थोड़े मेरे बुआई जी को शाह जी कहते हैं। दिलों के राजा हैं वो। उस गांव से मेरा बचपन जुड़ा है। मेरे प्रिय स्थानों में मोठावालां पिंठ (गांव) सदा बना रहेगा। मेरे बुआई राज जी ने भी कभी कोई कमी नहीं छोड़ी रिश्ते-नाते निभाने में। शादी-ब्याह, जीना-मरण सब में वो जाते।

लघुकथा

मन की डोर

✍ **डॉ. मोनिका शर्मा**

दो बच्चों की माँ और संयुक्त परिवार में सुघड़ बहू की जिम्मेदारी निभा रही नीता का बुझा सा मन और थका सा तन देख पिता से रहा ना गया। दस साल की शादीशुदा जिंदगी में पहली बार बेटी को यूं उदास देख उसके सिर पर हाथ रख सहलाते हुए पूछा - 'क्यों परेशान सी हो नीता? सब ठीक तो है? इतना पूछते ही नीता आँखों में आँसू लिए एक मासूम सी बच्ची की तरह सुबकते हुए पिता को अपने दिल की बातें कहने लगी।

' घर-परिवार के लिए सब कुछ करते हुए भी मन में अपराधबोध सा है- पापा। घर के छोटे-बड़े सदस्य कोई ना कोई कमी निकाल ही देते हैं मेरे काम में। अब तो बच्चे भी, बात-बात में दिल दुखाने लगे हैं। गृहिणी हूं तो क्या मेरा कोई सम्मान नहीं ? जाने क्या कमी रह जाती है मेरी संभाल-देखभाल में। सच कहूं तो मैं घर -परिवार के लिए खुद को ही भूल चुकी बीते दस वर्षों में। मन में अनकही सी पीड़ा और खालीपन आ गया है। दिनभर यही सोचती हूं कि मेरी गलती कहाँ है ?'

पिता उसके आँसू पोंछते हुए सधे शब्दों में बोले - 'सबसे पहले तो अपने मन की डोर को थामो। अपने हों या पराये इसे औरों के हाथ में ना दो। अपने मन को अपराध बोध के धागे से नहीं आत्मविश्वास की डोर से बाँधकर अपने कर्तव्य निभाओ। हर कोई, हर हाल, हर काम में अव्वल नहीं हो सकता मेरी बेटी! तुम जिम्मेदारियां निभाओ पर अपनी खुशियां ना भूलो। अपने हों या पराये, दूसरों को इतना अधिकार ना दो कि उनके शब्द और व्यवहार तुम्हारे मन का मौसम बदलें। बस, इतना करो और हर उतार-चढ़ाव को इसी समझ के साथ जीते हुए, जीवन के आसमान में ऊंची उड़ान भरो।' नीता यह सब सुनकर यूं मुस्कुरा उठी मानो समझ के आसमान से सारे बादल छंट गए हों। फिर आभार और स्नेह के भाव आँखों में लिए एक बेटी ने पिता का हाथ जितनी दृढ़ता से थामा, अपने मन की डोर को भी उतना ही मजबूत पाया।

6A- 2504 Sapphire Heights, Akurli Road, Lokhandwala Township, Near Lokhandwala Foundation School, Kandivali East, Mumbai & 400101

मण्डी हमारे पास भी आते बुआ जी के स्वर्गवास के बाद भी। इतना बड़ा अपने पिंठ में व्यापार होने के चलते भी बेटे अमृत की जिद्द पर पिछले वर्ष उसे चालीस-पचास लाख रुपए खर्च करके अमेरिका भेजा। कुछ दिन पहले मुझ से विस्तृत बात की थी बुआई जी ने फोन पर ही अमृत के अमेरिका जाने के बारे में। पंजाब में सब होते हुए भी युवा वर्ग विदेश जाने के लिए उतावला हुआ पड़ा है। जैसे किसी ने उन पर जादू किया हो। चाहे विदेश में जा कर झाड़ू पोंछा या बर्तन ही मांजने पड़े। अमृत भी तो दस ग्यारह ही पड़ा और फिर पढ़ाई छोड़ दी थी उसने।

माता जी ने मुझे फोन किया और ऊपर घर आने को कहा। मै तुरंत घर पहुंचा। उन्होंने मुझे कहा कि अमृत ने पैसे मेरे खाते में भेज दिए है। लेकिन उसके एजेंसी वालों का फोन आया और उन्होंने कहा कि उन्होंने अमृत से लगभग तीन लाख के आसपास लेने है तो आप वो राशि अभी हमारे खाते में जमा करवा दो। उन्होंने माता जी से कहा था कि अगर थोड़ी देर में उन्हें पैसे वापिस नहीं मिले तो वो उसका विजा कैंसल कर देंगें और पुलिस में भी शिकायत कर देंगें। अमृत की बात भी एजेंसी वालों ने माता जी से दोबारा करवाई। वो उसे धमका भी रहे थे। कुछ मार पीट भी की थी उसके साथ। मै और माता जी काफी परेशान हो गए थे कि ये लड़का किस चक्कर में फंस गया है। उसने पहले ही अपने पिता जी मेरे बुआई जी को कुछ भी बताने से मना किया था। मैंने माता जी से कहा मै बैंक जाकर पता करता हूं। आप अपना फोन मुझे दो। जब घर से निकलने लगा तो देखा बिस्तर पर लगभग एक लाख की एक एफ.डी. पड़ी हुई थी। बैंक पहुंचने ही वाला था, दोबारा एजेंसी वालों का फोन आया। उन्होंने मुझे दोबारा सारी बात बताई तो मैंने कहा कि जैसे ही पैसे हमारे खाते दिखेंगे हम सारी राशि ही वापिस भेज देगें हमें किसी परेशानी में नहीं पड़ना। एजेंसी वाले ने कहा कि उन्होंने मेरी माता जी को बताया कि पैसे चौबीस घंटों के बाद खाते में आएंगे और उन्हें पैसे अभी चाहिए। मैंने उन्हें कहा हमारे पास इस समय इतने पैसे नहीं हैं। एजेंसी वालों ने माता जी के व्हाट्स-ऐप पर पैसे जमा करवाने की एक रसीद भी भेजी थी। एजेंसी वाले ने कहा आपके माता जी ने कहा कि वो एक लाख की राशि थोड़ी देर में जमा करवा देगी। तभी मुझे बिस्तर पर पड़ी वो एफ.डी. ध्यान में आई माता जी उस एफ.डी. को तुड़वाने को तैयार थी। वो एजेंसी वाले माता जी को लगभग एक घंटे से टार्चर कर रहे थे। दस हजार - बीस हजार रुपए जमा करवाने से बढ़ाते-बढ़ाते वो माता जी को एक लाख तक ले आए थे। बैंक के बाहर एजेंसी वालों ने अमृत की भी बात मुझसे करवाई। मै भी थोड़ा गुस्से में था। वो रो रहा था, वो उसे पीट रहे थे। मैंने अमृत से कहा तूने हमें किस चक्कर में डाला है। मैंने एजेंसी वाले को कहा आप इसके पिता जी से बात कर लें। हमें तंग न करें। मुझे कुछ गड़बड़ का अंदेशा हो गया था।

मैं घर पहुंचा। माता जी को सारी बात बताई और माता जी को अमृत के पिता जी से बात करने को कहा। अमृत के लिए मातृत्व का भाव मेरी माता जी के चहरे पर साफ दिख रहा था। माता जी नहीं चाहते थे कि अमृत किसी मुसीबत में पड़े। उसके घर तक यह सब बात पहुंचे और उसने पहले ही अपने पिता को बात बताने से मना किया था। मेरे दबाव डालने पर माता जी ने बुआई जी को फोन किया। बात बतानी अभी शुरू ही की थी कि बुआई जी ने माता जी की बात काटते हुए कहा की अभी तो उनकी बात अमेरिका में अमृत से हुई है। ये सब ऑनलाइन फ्रॉड वालों का काम है। कुछ दिन पहले भी अमृत के नाम से उनके सम्बंधियों से कुछ डालर मांगे गए थे। तब जाकर हमें पता चला कि जिससे हम बात कर रहे थे, वो अमृत नहीं था, बल्कि ए.आई. तकनीक की सहायता से उसकी आवाज में दूसरा व्यक्ति बात कर रहा था और हम रिश्ते-नातों को निभाने के चक्कर में आज बड़ी राशि खो बैठते। यदि माता जी ने मुझे ये सब बताया न होता। ए.आई. तकनीक से तो वीडियो कॉलिंग में व्यक्ति का नकली चेहरा लगाना और उसका दूसरी तरफ हू-ब-हू दिखाई देना, कोई भी मोबाइल ऐप या साफ्टवेयर की सहायता से बड़ी आसानी से कर सकतें हैं। समाचारों में इस तरह के फ्रॉडों के बारे आये दिनों सुनते ही रहते हैं। मुझे शुरू से ही शक था, माता जी से कहा भी था मत दो यदि खाता नं. देना भी है तो ऐसा दें जिसे प्रयोग नहीं करते हैं। हमारे बुजुर्ग आज भी नाम मात्र पर भरोसा कर लेते हैं और मानसिक रूप से बहुत भोले-भाले होते हैं। जिसका फायदा दुष्ट मानसिकता वाले लोग साईबर फ्रॉड कर भी उठा रहे हैं। आपके सखे सम्बंधी का एक्सीडेंट हो गया है या कोई बड़ी दुर्घटना हो गई है, इस तरह के यह लोग झूठ बोलते हैं। मैंने यह कम्पलेंट साईबर क्राइम की ऑनलाईन पोर्टल पर करवा दी थी। हमें इस तरह के लोगों की शिकायत दर्ज करवानी भी बहुत जरूरी है। ताकि कोई और इन सकेमरस के झांसे में न फंस सके। अगले दिन अमृत का फोन माता जी को आया वो ठीक था और ऐसे फ्रॉड से सतर्क रहने की बात कही। इन स्केमस तक माता जी का दूरभाष कैसे पहुंचा और किस तरह से इन्होंने मेरी माता जी को टार्गेट किया। सोशल मीडिया की भी इस ऑनलाईन स्कैम में बड़ी भूमिका दिखाई देती है।हमें अपनी निजी जानकारियां सोशल मीडिया में सांझा करने से बचना चाहिए।

मकान 138/5, पैलेस कॉलोनी, मण्डी, हिमाचल प्रदेश- 175001, दूरभाष: 9805379777

आलेख

हिमाचल में शिव उपासना के विभिन्न आयाम

✍ **योगराज शर्मा**

हिमालय के भू-भाग में अवस्थित संपूर्ण हिमाचल प्रदेश में महाशिवरात्रि पर्व हर्षोल्लास व उमंग के साथ मनाने का एक महत्त्वपूर्ण मकसद यह रहा है कि देवों के देव महादेव यानी शिव आदिकाल से यहां के निवासियों के अराध्य देव, पालनहार तथा रक्षक हैं। वे शिव को सृजनकर्ता, रक्षक तथा ध्वंसक मानते हैं। भगवान शिव की इन तीन शक्तियों के कारण उन्हें ब्रह्मा, विष्णु तथा महेश नामों से पुकारा जाता है। हिमाचल में शिव के सौ से अधिक नाम प्रचलित हैं। उनका सबसे लोकप्रिय उद्बोधन महादेव है। देवों में शिव-शक्ति के प्रतीक महाशिवरात्रि पर्व का बच्चों से लेकर बूढ़ों तक सभी को उत्सुकता से इसका इंतजार रहता है।

स्थानीय लोगों का अटूट विश्वास है कि शिवरात्रि को घर-घर में बनाए जाने वाले शिवलिंग में भगवान साक्षात् रूप में विराजमान होते हैं। इस दिन लोग महादेव के प्रति अपना सम्मान व आदर प्रकट करने के लिए खुशियां मनाते व बांटते हैं। हिमाचल प्रदेश के चप्पे-चप्पे में शिव का वास माना गया है। प्रदेश का ऐसा कोई भी गांव नहीं, जहां शिवालय न हो। वे पहाड़ की चोटियों से लेकर मैदानों तक विद्यमान हैं। शिव तथा हिमाचल का आदिकाल से नाता रहा है। मां पार्वती भी हिमालय की पुत्री कहलाती हैं। हिमाचल का संपूर्ण भू-भाग नटराज की तपोस्थली तथा नृत्य स्थली रही है। हिमालय क्षेत्र में किन्नौर का किन्नर कैलाश, कुल्लू का श्रीखंड महादेव, चंबा का मणिमहेश शिव के निवास स्थान माने जाते हैं। दुर्गम होने के बावजूद इन स्थलों पर आराधना करने प्रतिवर्ष हजारों की संख्या में श्रद्धालु आते हैं।

शिखरों में पाषाण रूप, बर्फानी रूप से लेकर मैदानों तक शिव के असंख्य देवालय, जिन्हें शिवालय कहा जाता है, स्थित हैं। इन देवालयों में शिव-पार्वती लिंग- योनि रूप में विराजमान हैं। शिव-पार्वती को सृष्टि का सृजनकर्ता माना जाता है।

शिखरों में पाषाण रूप, बर्फानी रूप से लेकर मैदानों तक शिव के असंख्य देवालय, जिन्हें शिवालय कहा जाता है, स्थित हैं। इन देवालयों में शिव-पार्वती लिंग-योनि रूप में विराजमान हैं। शिव-पार्वती को सृष्टि का सृजनकर्ता माना जाता है।

पहाड़ों पर बस्तियों के बनने पर शिव को अनेक रूपों में पूजा गया है। यहां आदिकाल से अनेक देवालय स्थित हैं। शिव के प्रसिद्धतम देवालयों में कांगड़ा जिले के बैजनाथ में पुरातन शिव मंदिर, वीरभद्र मंदिर कांगड़ा, बरोह महादेव, नरकेश्वर महादेव प्रमुख हैं। सिराज क्षेत्र में ईश्वर महादेव, कुल्लू में शमशी महादेव हमीरपुर जिले में कालेश्वर मंदिर, इसके अतिरिक्त अन्य प्रसिद्ध शिव मंदिरों में वेणी महादेव, जागेश्वर महादेव, बुशहर महादेव, बुगराह महादेव, कुलकुश्हेवरा महादेव, कोटेश्वर महादेव। मंडी शहर में 81 मंदिरों में से 24 मंदिरों के करीब महादेव के हैं। यहां सबसे प्राचीन भूतनाथ का मंदिर है। राज्य में स्थित प्रत्येक देवालय की स्थापना की अपनी एक अलग कहानी है। इन सबके पीछे बस शिव भक्ति की अटूट आस्था तथा विश्वास ही दृष्टिगोचर होता है। इन देवालयों को इतिहास, पौराणिक कथाओं, शिव की आराधना सहित शिव-शक्ति के चमत्कारों से जुड़ा माना जाता है। हिमाचल में शिव धाम बैजनाथ का

देवालय प्राचीन एवं प्रसिद्धतम माना जाता है। इस मंदिर में स्थित अर्द्धनारीश्वर शिवलिंग देश के विख्यात एवं प्राचीन ज्योतिर्लिंगों में से एक है। जिसका इतिहास लंकाधिपति रावण से जुड़ा है। रावण शिव की इस अलौकिक पिंडी को लेकर लंका की ओर रवाना हुए। रास्ते में कीरग्राम (बैजनाथ) नाम का स्थान पर रावण को लघुशंका हुई। उन्होंने वहां खड़े व्यक्ति को थोड़ी देर के लिए पिंडी सौंप दी। व्यक्ति ने उस पिंडी को जमीन पर रखा और वह वहां से अदृश्य हो गया। रावण ने पिंडी को उठाने का प्रयास किया। परंतु उठा नहीं पाया। उन्होंने इस स्थल पर घोर तपस्या की और अपने दस सिरों की आहुतियां भेंट कीं। रावण की तपस्या से प्रसन्न होकर रुद्रदेव ने रावण को वरदान दिया और दस सिर लौटा दिए।

फर्गूसन के अनुसार इस मंदिर का निर्माण 1204 ईसा पूर्व में हुआ प्रतीत होता है। लेकिन अन्य मतों के अनुसार इसका निर्माण 804 ईसा पूर्व हुआ माना जाता है। मंदिर के गर्भ गृह में शिवलिंग स्थित है। इसके दाएं ओर गरुढ़ आसन है। पूर्व में दुर्गा की आकृति लकड़ी के खंभों पर उकेरी गई थी, जो 1905 के भूकंप में क्षतिग्रस्त हो गई थी।

यह शिव धाम प्राचीन शिल्प एवं वास्तुकला का अनूठा व बेजोड़ नमूना है। मंदिर के द्वार पर कलात्मक रूप में बनी नंदी बैल की प्रतिमा शिल्प कला का एक विशेष नमूना है।

महासू क्षेत्र में आटे के मेढ़ों व बकरों को बनाने की परंपरा

शिवरात्रि के पर्व पर शिमला जिले के अंदरूनी क्षेत्र जिसे महासू के नाम से जाना है, में भी महासुवी बोली में शिवरात्रि पर लोक भजन गाए जाते हैं- महादेवा ईशरा का खाणू तेरे, खाडू री डडकी आंजअ रे फेरे... अर्थात् हे महादेव तू क्या खाएगा, खाडू या नर भेड़ का मांस खाएगा कि उसकी आंत के फेरे खाएगा। एक अन्य भजन है – सेंई आजा शीड़ी रे झोटे, रे खाडू-काटअ बाकरे मोटे... यानी शिव सीढ़ियों के सबसे निचले पायदान पर पहुंच गए हैं, उसके लिए मोटे-मोटे मेढ़े और बकरे काटे जाएं। ऐसी मान्यता है कि पूर्व में हर-घर में मेढ़े तथा बकरे काटे जाते थे। लेकिन समय बदलने के साथ अब हर घर में आटे के बकरों-मेढ़ों को प्रतीकात्मक रूप में महादेव व उसके परिवार को अर्पित किया जाता है। पूजा के स्थान पर कतार में रखे इन मेढ़ों तथा बकरों की आहुतियां बच्चों के लिए सबसे आकर्षण का केंद्र होती हैं। उबालकर बनाई गई इन प्रतीकात्मक आकृतियों को पूजन के उपरांत सभी द्वारा बड़े ही चाव से खाया जाता है तथा इन्हें बेटियों, बहनों तथा बुआ के घर पर पकवानों के साथ जिसे 'बासी' कहा जाता है, देने का रिवाज है।

ऐसी मान्यता है कि इस मंदिर का निर्माण पांडवों ने अपने अज्ञातवास के दौरान करवाया था लेकिन वे इसे पूर्ण न कर सके। मंदिर का शेष निर्माण कार्य राजा लक्ष्मण चंद के कार्यकाल के दौरान दो भाइयों आहुक व मन्युक ने पूर्ण करवाया था। यह मंदिर संरचना और निर्माण कला का उत्कृष्ट नमूना है। मंदिर के उत्तर और दक्षिण दोनों ओर बड़े छज्जे बने हैं। संपूर्ण मंदिर एक ऊंची दीवार से घिरा है। दक्षिण व उत्तर में मंडप के अग्रभाग चार स्तंभों पर टिका एक छोटा बरामदा है. जिसके सामने ही पत्थर के छोटे मंदिर के नीचे नंदी बैल की मूर्ति प्रवेश द्वार है। मंदिर की बाहरी दीवारों पर उत्कृष्ट नक्काशी तथा झरोखों में अनेक देवी-देवताओं की मूर्तियां हैं।

इसके पुनर्निर्माण का उल्लेख शिलालेख में वर्ष 904 का मिलता है। महाराजा संसार चंद ने इस मंदिर का जीर्णोद्धार 1788-86 के मध्य करवाया। भौगोलिक दृष्टि से हिमाचल मैदानी इलाकों से बर्फ से ढके पहाड़ों के बीच एक सुंदर स्थल है। यहां की संस्कृति एवं परंपराएं विविधता लिए हुए है। मैदानों से लेकर पहाड़ों तक को शिव की आस्था ने प्रदेश को एक माला रूप में पिरो कर रखा है। सभी अपने-अपने ढंग तथा परिस्थितियों में अनुरूप शिव की आराधना करते हैं।

पहाड़ों विशेषकर महासू, शिमला जिले में शिवरात्रि के पर्व वाले दिन लोग व्रत रखते हैं। गृहिणियों का संपूर्ण दिन पकवान बनाने में व्यतीत होता है। युवा खेतों से जौ के पौधे तथा पाजा (जंगली चेरी) की टहनियां व नाकदमन जो खुशबूदार पौधा होता है, लेकर आते हैं। इसके उपरांत इन सभी की माला जिसे चंदवा कहा जाता है, बनाते हैं। इसे घर की छत से पाजा पौधे के पत्तों के साथ लहराया जाता है। इसके नीचे गाय के गोबर से फर्श की लिपाई की जाती है। इस पर वृत्त आकार में आटे से शतरंज के आकार में मंडप का निर्माण किया जाता है। तदोपरांत तीन बड़ी रोटियां जिसे पोलडू कहते हैं, पर रखे जाते हैं। दिन भर परिवार वाले व्रत रखते हैं लेकिन विभिन्न पकवान बनाने का सिलसिला जारी रहता है।

शाम को गाय के गोबर से शिवलिंग तथा पके हुए चावलों से की प्रतिमा बनाई जाती है। इसे भी मंडप में स्थापित किया जाता है। रात्रि में परिवारजन शिव की आराधना करते हैं और पकवान से व्रत तोड़ते हैं। वे मंडल के इर्दगिर्द बैठ कर शिव की स्तुति करते हैं। दूसरे दिन प्रात: मंडप पर से घर का बुजुर्ग सभी पकवानों को हटा देता है। तथा मंडप में स्थापित शिव व पार्वती की प्रतिमा को खेत में विधि-विधान से रखा जाता है। घर की छत पर लगी चंदवा को उतार दिया जाता है। इस निवेदन से बड़ा हिस्सा

पंडित के लिए रखा जाता है तथा शेष घर के सदस्य खाते हैं। शिवरात्रि में सगे-संबंधियों विशेषकर बेटियों को पकवान देने जिसे 'बासी' कहा जाता है, देने का रिवाज है। इसे किल्टे में डाल कर देने की परंपरा है। शिवरात्रि पर बने पकवानों का आनंद कई दिनों तक लिया जाता है।

चंबा तथा कांगड़ा जिले में लोग दिन का ही उपवास रखते है तथा शाम को शिव-पूजन उपरांत फलाहार लेते हैं। जिलों में बच्चे शिवरात्रि के दिन अत्यधिक आनंदित होते हैं। बच्चे के छोटे-छोटे समूह बनाकर करंगोरा तथा पाजा झाड़ी के छोटी शाखाएं एकत्रित करते हैं तथा घर-घर जाकर उन्हें दरवाजों पर लगाते हैं। इसे लगाने के पीछे एक ही परंपरा है कि इससे आगामी वर्ष में दुष्ट आत्माएं या डायन दूर रहेगी। इसके बदले बच्चों को गृह स्वामियों द्वारा अनाज तथा पैसे दिए जाते है। मंडी में देवताओं के पड्डल मैदान में पहुंचने तथा अपने-अपने निर्धारित स्थलों पर विराजमान होने के उपरांत वे अपने गुरों के माध्यम से लोगों की समस्याओं को निपटाते हैं। श्रद्धालू अपनी-अपनी मन्नत व हैसियत के अनुसार देवी-देवताओं को चढ़ावा अर्पित करते हैं। देव संस्कृति के दर्शन पड्डल मैदान के एक ओर होते है तो मैदान के एक ओर वाणिज्यिक वस्तुएं अनेक स्टाल स्थापित होते हैं। मेले के दौरान कचौरी तथा सिड्डू के स्टालों पर पहाड़ी पकवानों को खाने वालों की भीड़ देखी जा सकती है। रात्रि में सांस्कृतिक कार्यक्रम मेले में इंद्रधनुषी छटा बिखरते हैं।

शिवरात्रि को करसोग घाटी में सभी घरों में चंदवा बनाने का रिवाज है। चंदवे की माला संतरे की तरह के नींबू प्रजाति के फल (कूप्पू), पाजा (जंगली चेरी) के पत्तों, जौ तथा धतूरे के पत्तों की एक माला बनाई जाती है। घर का बुजुर्ग पुरुष इस माला को बनाता है। माला बनने के उपरांत घर के सभी सदस्य संगीत की स्वर लहरियों तथा नृत्य के मध्य, घर से बाहर लाकर घर के एक किनारे पर खिड़की पर इसे लगा देते हैं। तदोपरांत घर-घर से युवाओं की टोली गांव का चक्कर लगाती है। गांव की इस प्रक्रिया को संध्या से पूर्व पूर्ण कर लिया जाता है। इस दौरान शिव व पार्वती की स्तुति में गीत, जिन्हें एंचाली या जाती कहा जाता है, गाए जाते हैं। इसके अलावा रोट पूजा भी की जाती है। घर की दीवार पर शिव, पार्वती तथा गणेश तथा गृह देवता का चित्र बनाया जाता है। इसके सम्मुख चावल तथा आटे से गोलाई में मंडप बनाया जाता है। इसे नौ भागों में बांटा जाता है तथा मंडप के मध्य में रखा जाता है। मंडल के किनारे दीए जलाए जाते हैं। मंडप में रोट (खमीरे आटे से बना) रखा जाता है। आटे से बनाई भेड़-बकरी भी मंडप में रखी जाती है। रोटी के साथ पहाड़ी पकवान जैसे पोलड़ू, पकैन, बड़ा, भल्ला, भेल, पाजा, जौ, भांग, धतूरा, शहद, दही, गुड़ से मिठाई चढ़ाई जाती है। प्रदेश के कुछ भागों में पशु बलि की भी परंपरा है, लेकिन अब यह रिवाज इस क्षेत्र में दिनभर उपवास रखने के उपरांत शाम को शिव-पार्वती की पूजा के उपरांत व्रत तोड़ा जाता है। रोट का आहार ग्रहण किया जाता है। रोट का प्रसाद सभी घरों में बांटा जाता है। रोट को बेटियों को देने का रिवाज भी है।

करसोग क्षेत्र में इस दिन जिन जातकों की कुंडली विवाह का दोष होता है, उनका विवाह इस शुभ अवसर पर करने का रिवाज है। यह विवाह बहुत ही साधारण रूप में किया जाता है। शिव-पार्वती को प्रतिमा के समक्ष वरमाला डाली जाती है और शिव-पार्वती का आशीर्वाद लिया जाता है। पहाड़ों में यह उत्सव शीतल ऋतु का अंत तथा प्रकृति को नया रूप लेने का वक्त भी माना जाता है। जलाभिषेक से लेकर बिल्व-पत्री शिव भगवान को अर्पित की जाती है। घर-घर में विशेष फलाहार बनाया जाता है। शाम को शिव उपासना उपरांत सभी के साथ बैठकर फलाहार करते हैं। मैदानों से लेकर उत्तुंग पहाड़ों तक शिव को पालनकर्ता, रक्षक तथा शक्ति का देव माना गया है। पहाड़ों में शिव की स्तुति तथा उपासना का एक अलग ही विधान है।

संदर्भ : हिमाचल का जनजीवन एवम् आस्थाएं, प्रेम पखरोलवी, यशपाल साहित्य परिषद, नादौन, जिला हमीरपुर, प्रथम संस्करण-1987

द्वारा गिरिराज कार्यालय, शिमला-171005,
मो. 94181 72686

कुल्लू जनपद में शिव मंदिर

कुल्लू में भी शिव के अनेक मंदिर हैं। अकेले कुल्लू नगर में ही शिव के दस प्राचीन मंदिर है तथा उनके बिजली महादेव लरैण, मंगलीश्वर आदि विभिन्न नाम हैं। देवता महादेव का मंदिर चोह की डेरे में है। देवता बिजली महादेव का मंदिर मलथान डेरे में है। देवता गौरी शंकर महादेव का मंदिर दवाला, वाशाल और वौगार में है। देवता जवाणू महादेव का मंदिर जवाणू महादेव डेरा में है। देवता लरेन महादेव का मंदिर डेरा लरैन में है। इसके अतिरिक्त नीलकंठ महादेव, संगम महादेव, देवता लरैन महादेव का मंदिर डेरा लरेन में है। इसके अतिरिक्त नीलकंठ महादेव, संगम महादेव, देवता सियाली महादेव तथा देवता शिवर हारस के मंदिर भी जनपद में स्थित हैं। भूंतर से नीचे, कुल्लू मनाली मार्ग पर स्थित बजौरा में शिव मंदिर है। शंकर का यह मंदिर पाषाणकाल का उत्कृष्ट उदाहरण है। वर्ष 1905 के भूकंप में इस मंदिर को क्षति पहुंची थी।

कहानी

पहाड़िया...

✍ अशोक दर्द

यूं तो मैं पहाड़ से था। हिमाचल के चंबा से। परंतु रोजगार के सिलसिले में रहता पठानकोट था। क्योंकि यहां टैक्सी चलाता था। रेलवे स्टेशन के पास ही लगभग दो किलोमीटर की दूरी पर मेरा किराए का घर था। यूं तो मैंने एम.ए. कर रखी थी लेकिन किस्मत ने साथ नहीं दिया। सरकारी नौकरी के चक्कर में पांच साल बर्बाद करने के बाद मैंने टैक्सी ड्राइविंग शुरू कर दी। सुबह सात बजे जम्मू तवी एक्सप्रेस चक्की बैंक पहुंचती थी। मैं रोज सुबह अपनी टैक्सी लेकर रेलवे स्टेशन के पीछे टैक्सी स्टैंड पर पहुंच जाता था। ताकि कोई सवारी मिल जाए। कभी सवारी मिल भी जाती थी और कभी खाली वापस आना पड़ जाता था। परंतु यह मेरा डेली रूटीन वर्क था।

सुबह जल्दी उठकर तैयार होकर अपनी टैक्सी लेकर रेलवे स्टेशन पर पहुंच जाना। आठ बजे ट्रेन स्टेशन पर लगी तो मैं सवारी की तलाश में पूछता हुआ स्टेशन पर घूमने लगा।

तभी मैंने एक कपल से टैक्सी के लिए पूछा - 'टैक्सी टैक्सी'।

तो बोले -'हां टैक्सी तो चाहिए परंतु हम डलहौजी जा रहे हैं। हमें टैक्सी दो-तीन दिनों के लिए चाहिए क्या आप हमारे साथ चल सकते हैं।'

अंधा क्या चाहे दो आंखें। मुझे तीन दिन के लिए काम मिल रहा था।

निर्धारित किराए पर अच्छी सर्विस का वायदा लेकर उन्होंने मेरी टैक्सी हायर कर ली। उनका सामान डिक्की में रखा और उन्हें गाड़ी में बैठाकर हम डलहौजी के लिए निकल पड़े।

शहर से निकलकर हम जैसे ही डलहौजी रोड पर चक्की क्रॉस करके आगे बढ़े तो बगल में शराब का ठेका देखकर लड़के ने कहा- 'गाड़ी रोको एक मिनट।' फिर वह एकदम नीचे उतरकर ठेके की तरफ बढ़ गया। वहां से एक बोतल शराब लेकर फिर गाड़ी में बैठ गया। अब वह पीछे वाली सीट में जाकर बैठ गया और मुझे कहा- 'मैडम को अगली सीट पर बैठा दो।'

वह लड़की अगली सीट पर आ गई।

बैग से गिलास व चिप्स निकालकर उसने जल्दी-जल्दी एक पेग बनाकर पी लिया।

पठानकोट से डलहौजी लगभग अस्सी किलोमीटर है। बीस-पच्चीस किलोमीटर का सफर करने के बाद छोटी-छोटी पहाड़ियां शुरू हो जाती हैं। प्रकृति के मनमोहक दृश्य बरबस अपनी ओर आकर्षित करने लगते हैं।

वह लड़का तो दो-तीन पैग लगाकर सो गया था और मैं धीरे-धीरे गाड़ी चला रहा था। बगल में बैठी मैडम को उन जगहों के बारे में बता रहा था जिनके बारे में थोड़ा बहुत मैं जानता था।

वह अनमनी सी मेरी बातों के जवाब में हूं हूं कर रही थी जैसे उसे उन खूबसूरत प्राकृतिक दृश्यों में कोई भी दिलचस्पी न हो।

आज शाम को उन्हें खज्जियार में रुकना था।

हमने दो घंटे का सफर कर लिया था। नैनीखड्ड पहुंच गए थे। वहां मैंने गाड़ी रोकी।

सुबह के दस बज गए थे। मैंने कहा -'मैडम आप फ्रेश भी हो लो और हम ब्रेकफास्ट भी कर लेते हैं। पीछे लड़का नशे में सोया ही था।

मैंने उसे उठाने की कोशिश की तो मैडम ने मना कर दिया। बोली -'इन्हें सोने दो जब यह खुद जाग जाएंगे तब

इन्हें आगे कहीं ब्रेकफास्ट करवा देंगे।

मैंने कहा-'ठीक है मैडम' ...और मैं उतर कर ढाबे में चला आया। थोड़ी देर में मैडम फ्रेश होकर आ गई। हम दोनों ने वहां ब्रेकफास्ट किया और हम चल पड़े। वह लड़का अभी भी सोया था।

खज्जियार में पहले से ही इनकी यहां होटल में बुकिंग हो गई थी। बनीखेत से खज्जियार लगभग तीस किलोमीटर दूर है। यहां तक पहुंचने के लिए दो घंटे आराम से लग जाते हैं। हमारे पास अभी पूरा दिन पड़ा था इसलिए मैंने मैडम से कहा कि आप चाहो तो डल्हौजी में घूम सकते हैं। परंतु मैडम ने मना कर दिया। क्योंकि वह लड़का अभी भी सोया था। फिर भी मैंने गांधी चौक पर जाकर थोड़ी देर के लिए गाड़ी रोक दी और मैडम को पीर पंजाल पर्वत शृंखला के कुछ दृश्य दिखाने शुरू कर दिए। यूं तो मैडम पर्वतों को देखकर उत्साहित थी। परंतु साथी के इस तरह नशे में लेटे होने की वजह से वो उदास भी थी। यह सब मै उसकी हंसी के पीछे पढ़ सकता था।

गांधी चौक से खज्जियार की तरफ हम धीरे-धीरे बढ़ रहे थे। इसी बीच वह लड़का जाग गया था। वह भी खूबसूरत पहाड़ों की सुंदरता को निहारने लगा था। परंतु न कोई जोश, न उत्साह और न ही कोई साथी के साथ घूमने की खुशी। वह तो जैसे एक काम निपटा रहा था। मै उसके व्यवहार से सब पढ़ सकता था.....।

मुझे यह सब समझ नहीं आ रहा था कि इतनी दूर से ये लोग घूमने आए है परंतु कोई खुशी नहीं, कोई चाहत नहीं।

क्या माजरा हो सकता है?.... मै भीतर ही भीतर अंतर्द्वंद्व में घिरा खुद ही कई प्रश्न उठाता उनके हाल स्वयं ही देता और फिर स्वयं ही निरुत्तर हो जाता.....।

खूबसूरत वादियों से गुजरते हुए हम दो बजे खज्जियार पहुंचे तो दोपहर उतर आई थी।

करीने से सजे हुए ऊंचे-ऊंचे देवदार, देवदारों से घिरा खूब लंबा चौड़ा चौगान और बीच में एक अद्भुत झील... ....। चौगान में सैकड़ों सैलानी अठखेलियां करते हुए एक अनुपम दृश्य उपस्थित कर रहे थे...।

मैंने गाड़ी पार्क की और उन्हें होटल तक पहुंचा आया।

तभी लड़के ने एक बोतल मेरे से और मंगवा ली। शायद उसने पहली बोतल खाली कर दी थी।

उसने पैग बनाया और फिर पी लिया और मुझे कहा कि आप मैडम को थोड़ा घूमा लाओ....।

मैंने कहा -'साहब खाना खा लो लंच टाइम हो गया है। उसके बाद मै आ जाऊंगा और मैडम को घुमाने ले जाऊंगा।'

तब वह बोला-''नहीं, अभी मै नहीं खाऊंगा। आप मैडम को ले जाओ और बाहर रेस्टोरेंट में खाना खिलाओ और मैडम को घूमाने ले जाओ।'

मुझे ये सब अटपटा लग रहा था....।

मै मैडम के साथ रेस्टोरेंट में आ गया। हमने वहां खाना खाया। फिर हम चौगान में आ गये।

लड़का मेरी उम्र का था जबकि मैडम कोई पांच साल हमसे छोटी होगी।

लंबा खूबसूरत छरहरा बदन, घने लंबे बाल, काली भौंहें, गोरा मुखड़ा और उस पर सलीके से पहने सलवार कमीज उसे जैसे दिव्यता दे रहे थे। परंतु चेहरे पर खिंची उदासी की लकीरें जैसे चांद के ऊपर छोटे-छोटे घने बादलों की टुकड़ियां ....। चांद की आभा को बाधित करतीं हुई।

खज्जियार के चौगान में घूमते हुए हमारा परिचय बढ़ता गया। उसने मेरे बारे में पूछा तो मैंने बताया -'मैंने इंग्लिश में एम.ए. कर रखा है। कोशिश के बाद भी जब मुझे जॉब नहीं मिली तब मैंने इस काम को शुरू किया। घर में मेरे भाई भाभी हैं, मेरे माता-पिता पहले गुजर गए हैं।'

उसने भी अपने बारे में बताया कि मैंने भी हिस्ट्री में एमए

दोहा/गीतिका

✍ सुरेन्द्रपाल वैद्य

मंजिल उसको मिल गई, जिसने किए प्रयास।
लेकिन था कुछ ने किया, कोशिश का उपहास।

गांठ बांध कर हम रखें, जीवन का यह सत्य।
यत्न जहां रुकते नहीं, मंजिल आती पास ।

सदा धैर्य से काम लें, करते रहें प्रयत्न।
धीरे धीरे ही सदा, होता सही विकास।

खुली सोच से काम लें, खुला गगन हर ओर।
बड़े वृक्ष की छांव में, उगती केवल घास।

उचित वस्तु का वक्त पर, कर लें शीघ्र चुनाव।
पानी से ही बुझ सके, ग्रीष्म समय की प्यास।

पथ में फिसलन शूल सब, आते बारंबार।
बस आगे बढ़ते रहो, होना नहीं उदास।

म.नं.-370/2, भियूली, मण्डी-175001, हि.प्र.,
मो. 9816301746

किया है। मैं प्रोफेसर बनना चाहती थी। परंतु पापा ने इनके साथ मेरी शादी कर दी। शहर के ये बहुत बड़े बिजनेसमैन हैं। मेरे साहब परिवार के इकलौते बेटे है, घर में किसी चीज की कोई कमी नहीं है ...। बस सुकून नहीं है.....। मैं सुकून से कुछ नहीं समझा था....।

मुझे लगा लड़के को शराब पीने की लत लग गई है, इसी वजह से सुकून नहीं है। खैर हम वहां घूमते रहे। मैं मैडम की तस्वीरें उतारता रहा। वह घर से ही एक कैमरा ले आए थे।

धीरे-धीरे शाम उतर आई थी। मैंने कहा -'मैडम चलो अब रूम में चलते हैं।'

होटल में ही उन्होंने मुझे एक अलग रूम ले दिया था। अब हम होटल में आए तो लड़का सो कर जाग गया था। अब उसका थोड़ा नशा उतर गया था।

उसने सुबह से कुछ नहीं खाया था इसलिए मैं उसके लिए खाना रूम में ही ले आया। उसने थोड़ा सा खाना खाया परंतु उसके चेहरे पर भी उदासी के वैसे ही बादल छाए थे जैसे लड़की के चेहरे पर थे।

शादी के बाद मुझे समझ नहीं आया कि मैं क्या करूं। अगर घर छोड़ कर चली जाऊं तो दोनों परिवारों की इज्जत है....। मैं इस परिवार की बहू हूं और मायके में मेरे पापा की भी इज्जत है...। मैं सोचती हूं मैं जाऊं तो जाऊं कहां....? इसलिए यहीं रहकर मैं घुट -घुट कर जी रही हूं। मुझे कोई रास्ता दिखाई नहीं देता। पांव में पड़ी हुई बेड़ियां मैं तोड़ नहीं पाऊंगी; क्योंकि मैं इतनी मजबूत नहीं हूं....।'

दो दिन तक वे खज्जियार में ही रहे। मैंने उन्हें पैराग्लाइडिंग पॉइंट, पौलानी माता टेंपल, काला टोप, डायनकुंड जो यहां देखने वाले स्थान थे, दिखा दिए थे और रोज शाम को हम वापस होटल में आ जाते थे।

लड़का शराब पीने में मस्त हो जाता था और मैं और मैडम चौगान में घूमने निकल जाते ....। कल सुबह उन्होंने चले जाना था, दिन की ट्रेन थी। आज उनकी यह आखिरी रात थी खज्जियार में....।

इन दो-तीन दिनों में हम काफी घुल मिल चुके थे। ऐसे लग रहा था जैसे हम एक दूसरे को वर्षों से जानते हैं....।

धीरे-धीरे शाम उतरने लगी थी....। हम दोनों खज्जियार के इस हरे-भरे मैदान में घूम रहे थे। सैकड़ों सैलानी जो दिन में आए थे अब अपनी गाड़ियां लेकर डलहौजी या चंबा वापिस जा रहे थे। धीरे-धीरे चौगान खाली होने लगा था।

दिन भर महकता चहकता चौगान अब नीरव रात की शांति में जैसे विलीन होने लगा था.....।

हम दोनों एक देवदार के पेड़ के नीचे हरी दूब पर बैठ गए थे...। तभी वह बोली -'आपको एक राज की बात बताती हूं किसी से कहना मत। फिर वह बोली -'मेरे साहब का बचपन में एक्सीडेंट हुआ था; उसके बाद वे संतान उत्पत्ति के काबिल नहीं रहे हैं। इस बात को घर वाला कोई नहीं जानता, यह शादी के लिए मना कर रहे थे। परंतु घर वालों ने जबरदस्ती इनकी शादी करवा दी। इस राज को हम दोनों ही जानते हैं। शादी के बाद मुझे समझ नहीं आया कि मैं क्या करूं। अगर घर छोड़ कर चली जाऊं तो दोनों परिवारों की इज्जत है, शहर में यह नामी हस्ती है....। मैं इस परिवार की बहू हूं, और मायके में मेरे पापा की भी इज्जत है...। मैं सोचती हूं मैं जाऊं तो जाऊं कहां....? इसलिए यहीं रहकर मैं घुट -घुट कर जी रही हूं। मुझे कोई रास्ता दिखाई नहीं देता। पांव में पड़ी हुई बेड़ियां मै तोड़ नही पाऊंगी; क्योंकि मैं इतनी मजबूत नहीं हूं....।' कहते-कहते उसकी आंखें भर आई।

न जाने कब मैंने उसका हाथ अपने हाथों में ले लिया उसे सांत्वना देता रहा। चूंकि हम दोनों जवान थे हमारे हाथों की गर्माहट हमारे दिलों तक उतर आई थी.. ...। उसने मुझसे उसके साथ रहने का वायदा ले लिया...। इन कमजोर पलों में मैंने जीवन भर उसके साथ रहने का वायदा दे दिया...।

यह सब इतनी जल्दी हो गया था जैसे भीनी-भीनी खुशबू लिए हवा का एक झोंका हम दोनों को छूकर निकल गया हो। मैंने दिमाग को एक तरफ रखकर दिल का फैसला उसके हक में दे दिया था...।

वायदे के मुताबिक मैं उनके पास कुछ दिनों बाद पहुंच गया था....। अब मैं उनके घर में मैडम का पर्सनल ड्राइवर था। दिन भर मुझे कोई काम नहीं होता था। जब कभी मैडम ने घूमने जाना होता या साहब को लाना या छोड़ना होता तो उन्हें मेरी जरूरत पड़ती....। बस इतना सा काम था मेरा।

उनकी कोठी से फैक्ट्री लगभग बीस किलोमीटर दूर थी। कभी कभार मैडम शॉपिंग के लिए मॉल में जाती तो मुझे जाना होता था। मुझे एक बढ़िया सा कमरा दे दिया गया था। खाना मैं उनकी कोठी में ही खा लेता था।

एक दिन बाहर तेज बारिश हो रही थी हवा चल रही थी खिड़कियां दरवाजे बंद थे.....। मैं मैडम के पास था ....।

इस तेज बारिश में जमीन भीग रही थी....। प्यासी बंजर धरती न जाने कितने दिनों के बाद बारिश में भीगकर अपनी प्यास बुझा रही थी....। एक महीने बाद पता चला मैडम प्रेग्नेंट थी. ..। इस खुशी के गवाह हम तीन लोग थे ।...मैं, मैडम और साहब...।

क्योंकि मैं पहाड़ से था इसलिए सारे कर्मचारी मुझे पहाड़िया कहते। मैडम इसको पहाड़ से लाई है....। सारे मुझे मेरे मनमोहन नाम से नहीं अपितु पहाड़िया के नाम से जानते-पहचानते थे। सभी कर्मचारी यह जानते थे कि मैं, मैडम और साहब का खास आदमी हूं। सभी कहते - 'साहब और मैडम इसे स्वयं पहाड़ से लाए हैं।' इसलिए सब कर्मचारी मुझसे भय खाते थे। किसी को मुझे बोलने की हिम्मत नहीं थी क्योंकि सभी को अपनी नौकरी प्यारी थी।

इसी बीच एक दुर्घटना घट गई। साहब फैक्ट्री से रात को घर आ रहे थे उस दिन मैं किसी और काम की वजह से उन्हें लेने नहीं गया था। कोई दूसरा ड्राइवर उन्हें ला रहा था। रास्ते में एक्सीडेंट हो गया और साहब मौके पर ही दम तोड़ गए....। मैडम पर दु:खों का पहाड़ टूट पड़ा था इतना बड़ा कारोबार चलाना इतना आसान भी नहीं था... ।

...फिर भी मेरे हौसले की वजह से उसने खुद को संभाल लिया और अपने कारोबार को चलाया ही नहीं और भी बढ़ा लिया।

नौ महीने बाद उनके लड़का हो गया था, इस सारी संपत्ति का इकलौता वारिस.....। धीरे-धीरे समय बीतने लगा। बेटा बड़ा होने लगा। हम दोनों का प्यार मर्यादा में रहा...। मेरी शादी की उम्र भी निकलती गई। मैंने शादी नहीं की। भाई भाभी ने कई बार कहा भी...। परंतु मैंने उन्हें हर बार टाल दिया...। सामाजिक तौर पर मैं अविवाहित था...। समय तो पंख लगाकर उड़ रहा था। लड़का जवान हो गया। पढ़ -लिखकर शादी के काबिल हो गया था। अब वह अपना कारोबार संभालने लगा था...। और हम दोनों बूढ़े होने लगे थे ...।

कई कर्मचारी रिटायर होकर चले गए थे। कुछ नौकरियां छोड़ कर चले गए थे। परंतु मै आज भी उनके घर में सबसे पुराना ड्राइवर इस हवेली में रह रहा था....।फिर एक दिन बेटे की शादी हो गई घर में बहू आ गई। न जाने मै किस जन्म का श्राप भोग रहा था। सब कुछ होते हुए भी मेरा यहां कुछ भी अपना नहीं था। मैं मैडम का ड्राइवर ही तो था 'पहाड़िया....'।

गांव घाट, डाकघर शेरपुर,
तहसील डलहौजी, जिला चंबा,
हिमाचल प्रदेश-176306,
मोबाइल 9418248262

कविता

रेखाएं

✍ गौरव गुप्ता
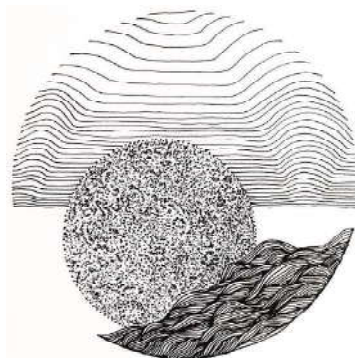
ना जाने कौन था वो शख्स
जिसने खींची होगी प्रथम लकीर
कि उस पार रहेगा तू
और इस पार रहूंगा मैं

तब से अब तक
ऐसी असंख्य रेखाएं
खींची हैं तुमने मैंने
हम सबने मिलकर

रेखाओं को बनाने
बनाकर मिटाने
बढ़ाने/बढ़ाकर घटाने
का अनंत सिलसिला जारी है

और ये जारी रहेगा
एक सभ्यता के अंत तक
प्रलय के
आरंभ तक

धरा का अंतिम शख्स
ये देखेगा कि सारी रेखाएं
मिल गई हैं आपस में
कि जैसे कभी कुछ ऐसा था ही नहीं

उस दिन ना होगा कोई उस पार
ना ही कोई इस पार
वो देखेगा मुड़ के चारों ओर
बार-बार

और फिर शुरू होगा नए सिरे से
रेखाओं को बनाने/मिटाने
बढ़ाने/घटाने का अनंत सिलसिला
एक नए प्रलय के आने तक

इंडियन आयल हाउसिंग
काम्प्लेक्स B1 More, C1/101,
फुलझोर दुर्गापुर-713206,
मो. 9424394355

लेख

उड़त गुलाल, लाल भए बदरा....

✍ **शिवचरण चौहान**

ऋतुओं में ऋतु वसंत, महीनों में माह-फागुन और पर्वों में होली का रंग ही निराला है। शिशिर का प्रकोप, जब कम होता है। पीली सरसों के फूल खिलने लगते हैं। पलाश की कलियां अंगड़ाइयों लेने लगती हैं। सेमल में अंगारे दहकने लगते हैं, चिड़ियां चहकने लगती हैं। तितलियां नाचने लगती हैं। भोंरे गुनगुनाने लगते हैं, आमों के बौरों के बीच बैठी कोयल कुहकने लगती है तो सभी को आभास हो जाता है कि फागुन आ गया है। होली के रंग चढ़ने लगे हैं।

वैसे तो होली फागुन मास की शुक्ल पक्ष की पूर्णिमा पूनों की रात को जलाई जाती है। अगले दिन, चैत्र प्रतिपदा को रंग खेला जाता है और पखवाड़े बाद नव संवत्सर शुरू होता है। अनेक स्थानों पर होली का रंग पूर्णिमा से लेकर चैत्र की रंग पंचमी तक रंग चलता है।

वैसे तो होली का उत्सव वसंत पंचमी के दिन से ही शुरू हो जाता है। होली का जाल, मुहल्ले-मुहल्ले, गांव-गांव रख दिया जाता है और शाम को फागों का गायन शुरू हो जाता है। गांवों की चौपालों में ढोलकें खनकने लगती हैं। एक कहावत है - 'फागुन माँ बाबा देवर लागे' तथा एक बुन्देलखण्डी गीत है - 'जब आई माघ की पाँचे। तब बूढी डुकरियां नाँचें।

जड़-चेतन, नर-पशु सभी उल्लास अनुराग, प्यार, राग में रच बस जाते है। मादक मौसम इठलाने लगता है और तन, मन में उन्माद छाने लगता है।

होली, हर्ष, उल्लास व प्रेम का पर्व है। होली मनाने की तमाम पौराणिक मान्यताएं हैं। पर होली मुख्यत: ऋतु परिवर्तन व नयी फसल के पकने का पर्व है। चना, गेहूं, गन्ना, बेर आदि से आज भी होली की पूजा की जाती है। रात में होलिका दहन होता है और लोग सर्दी को अलविदा कह कर फसल कटाई में जुट जाते है। वसन्त को कामदेव का प्रतीक माना गया है। इसीलिए होली को मदनोत्सव या कामोत्सव भी कहा जाता रहा है। प्राचीन संस्कृत कवियों में आदि कवि वाल्मीकि से लेकर आधुनिक कवियों तक ने होली का गुणगान किया है। रीतिकाल के मुस्लिम कवियों रसखान, रहीम आदि ने होली खुलकर खेली है। रसखान कहते हैं लीन्हें अवीर भरे पिचका 'रसखानि' सर्यो बहु भाव भरयो जू।

गोपु कुमार, कुमार के देखत, ध्यान टरो न टरयो जू।।

पूरव पुन्य पे दाँव पर यो जब, राज, करी उठि काज करेयू जू।

अंक भरो निरसंक उन्हें इहि. पाख पतिव्रत तास धरयो जू।'

रसखान तो इस अवसर पर पतिव्रत धर्म भी भूल जाने को कहते हैं। आगरे के जनप्रिय कवि हुए हैं नजीर अकबराबादी। वह लिखते है

'जब फागुन रंग बरसता हो तब देख बहारें होली की।

जब घर-घर चंग गमकता हो तब देख बहारें होली की।।

महाकवि कालिदास ने जहां मेघदूत लिखा है, वहीं वसंत ऋतु का भी मनोहारी वर्णन किया है - 'सर्वम् प्रिये चारु तरे वसन्ते। तो भर्तृहरि ने श्रृंगार शतक में जिस नायिका का वर्णन किया है, वह होली की ही नायिका है। कृष्ण की राधा है। तुलसीदास लिखते हैं - सबके हृदय मदन अभिलाशा, लता निहारि नवहि तरु-शाखा।।

जयदेव व विद्यापति भी नहीं बचे हैं। विद्यापति गाते हैं

'मन्मथ का साधन नहि आन । सिरसाएहि जेहि कानिनि मान ।।

कुंद कुसुम अंतर विकसंत । राजत जीत बेकताओ बसन्त।'

होलिकोत्सव के अवसर पर रस राज कृष्ण ने तरनि तनूजा

कालिन्दी के तट पर रास रचाया था। संस्कृत व रीतिकाल के कवियों ने राधा व कृष्ण को माध्यम बनाकर जो होली खेली है, वह बेमिसाल है। छंद, सवैये, गीत, रसिया, फाग, लोकगीत, न जाने कितने रूपों में ज्ञात-अज्ञात कवियों ने राधा-कृष्ण के प्रेम व होली के पर्व को अमर बनाया है। केसर, पलाश के फूलों के रंग से भरी पिचकारी, अबीर-गुलाल, कुमकुम, रोली से भरी मुट्ठियों व गोरे-गोरे गालों पर कोमल हाथों का स्पर्श किसे पागल न बना दे। ऐसे में कवि रीतिकाल के प्रसिद्ध कवि पदमाकर ने वसंत व रंग पर्व होली का बड़ा मनोहारी चित्रण किया है।

बनन में बागन में बगर्यो वसंत है। लिखने के बाद वह गाते हैं-

'खेलिए फाग निशंक हवे आज, मयंक मुखी कह भाग हमारो।

ले उ गुलाल दुह कर मे, पिचकारिन रंग हिय मॅह डा रो।।

भावे तुम्हें सो करो नंदलाल, पे पाय परौ जिन घूंघट टा रो।

वीर की सौ हम देखिह कैसे, अबीर तो आँख बचाय के डारौ।

फिर भी अबीर आँख में पड़ जाता है। नायिका आँखें धोकर अबीर निकाल देती है; पर अबीर तो जल के साथ बह गया किन्तु अहीर तो आँखों के रास्ते दिल में समा गया। निकला ही नहीं

'ऐरी मेरी बीर जैसे तैसे इन आँखिन ते।

कढ़िगो अबीर पर अहीर तो कढ़े नहीं।'

रीतिकालीन कवियों में घनानन्द बेजोड़ है। वह स्वयं प्रेमी थे। वह एक राज नर्तकी सुजान से प्रेम करते थे किन्तु सुजान ने उन्हें धोखा दिया तो वह राजकवि का मान-सम्मान त्याग कर ब्रजभूमि में जाकर साधु बन गए। पर वह प्रेयसी सुजान को भूल नहीं पाए। उनके सवैयों में सुजान का नाम अमर हो गया। भले ही सुजान, घनानन्द को कुछ न दे सकी किन्तु घनानन्द उसे सदा के लिए अमर कर गए।

'अति सी धो सनेह के मारग है, जहँ नैकु सयानप बाक नहीं।

तह साँचें चले तजि आपुन पौ, झिझके कपटी ते निसांक नहीं।।

घन आनन्द प्यारे सुजान सुनी, इत एक ते दूसरो आंक नहीं।

तुम कौन सी पाटी पढ़े हो लला, मन लेहु प देहु छटांक नहीं।'

फाग और होरी के गीतों में जितना लालित्य पद्माकर के सवैयों में मिलता है। उतना अन्यत्र दुर्लभ है। गोपियां, कृष्ण को पकड़ कर ले गयी हैं और खूब जमकर उन्हें रंग से सराबोर कर दिया। मन में जो आया, वह सब किया और जाते हुए कृष्ण से कहा कि जब मन हो आ जाना होली खेलने

'फाग के भीर अभीरन में गहि गोविन्द भीतर ले गई गोरी।

भायी करी मन की पद्माकर ऊपर नाइ अबीर की झोरी।।

छीन पितम्बर कम्मर ते सुविदा दई मीड कपोलन रोरी।

नैन नचाई कही मुसकाय, लला फिर आइयो खेलन होरी।।

रीति कवियों ने कृष्ण व गोपियों के माध्यम से होली का मनोहारी चित्रण किया है। इनमें श्रृंगार की पराकाष्ठा है। रीति कवियों से लेकर आधुनिक कवियों में नई कविता के स्तम्भ जगदीश गुप्त ने भी अपने छन्द में श्रृंगार के सारे उपमान तोड़ दिए है - 'नायक फाग गा रहा है, नायिका चुपचाप ओट से रस पान कर रही है। शाम से सुबह हो गयी किन्तु कोई पीछे नहीं हट रहा है-

'बौर उठी सहकार की डार लौ, नाहन की मति आवत होरी।

साँझ लो वे सुनें ठाढी निकुंज में भोर ले तेऊ सुनावत होरी।।

का न में लागि के पूँछत अतो-पतो, कौने पे ठाँव जरावत होरी।

होली, सहेली, पहेली भई, दुओ बूझत होरी बुझावत होरी।।

प. सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला तो बेजोड थे। वह संगीत मर्मज्ञ थे। उनके गीतों में जो रस व लालित्य है, वह दुर्लभ है -

'फूटे हैं आमों में बौर, भारे वन वन टूटे हैं।

होली मची ठौर ठौर, सभी बंधन टूटे हैं ।।

(शेष पृष्ठ 48 पर)

माह के कवि

लालटेन

✍ नितेश व्यास

तुमने ही तो
समुद्री तुफानों के बीच
मछुआरों की नाव के लिए
मध्य-रात्रि में उद्दीप्त-केतु बन
बचाव दलों को दिया होगा
दीप्ति-संदेश

अपने प्राणों की आहुति देने
अग्निशिखा की तरफ बढ़ते पतंगों का समूह
तुम्हारी ही प्रदक्षिणा कर
परिवर्तित हो गया होगा
टिमटिमाते जुगनुओं में

अंधेरे की गोद में
निश्चिन्त सोये हुए खेतों की रखवाली करने वाला होली,
जाड़े की ठिठुरती रातों में
एक तुम्हीं से रखता होगा मोर की आस

परदेस गये पति की
विरह-कातर प्रिया
क्या तुम्हें नहीं देती थी उपालम्भ

जब मनुष्य की तर्जनी के अग्रभाग ने नहीं छुआ था कोई
बटन जो धो देता
अंधेरे कमरे को दूधिया-कान्ति से
तब भी अंगुठे की अगवानी में
चार अंगुलियों की चतुरंगिणी में तुम्हें थामे हमारे पुरखे
करते थे गांव-पूरे को रोशन

कोई कहता
सैनिक टुकड़ियों की आवश्यकता का आविष्कार थे तुम
मैं कहता अंधेरे के खेत में उजाले की आस थे तुम

आज तक साथ हो मनुष्य के
उस पूर्वज की तरह जिसकी तस्वीर टंगी है घर के एक कोने
में
टंगे हो तुम भी बैठक-कमरे की शोभा बढ़ाते हुए
अपने दीप्तिहीन वर्तमान के साथ।।

एक पखेरू

कितनी सुन्दर कविता लिखता
एक पखेरू आसमान पर

कविता वह ऐसी लिपि में है
जैसे मोती सीपी में है

यति-गति-लय-ताल की मात्रा
युगों युगों से समता में है
छन्द-स्वछन्द अलंकृति-त्रिभुवन
रस-निष्पत्ति ममता में है

तृण जो लिया मातृभू से ऋण
और वारीधि से जो जलकण
उससे उऋण होने को आतुर
व्याकुलता व्याकुल है क्षण-क्षण

अपने पूर्वज खग-कवियों के
काव्य बसे हैं इन पंखों में
उषा-निशा और क्षुधा-तृषा के
गान बसे हैं इन कंठों में

कितनी सुन्दर कविता है यह
और कवि कितना सुन्दर है
सुन्दर-सुन्दरता रहने को
व्याकुल हर क्षण दशकंधर है।।

सुन्दरवन की असुन्दरता

गेहूं को भुन सिलबटे पर पीसकर
मैंने कभी नहीं खाया, पानी के साथ
शकरकंद को भुन-पीस कर डब्बे में भरकर रखने की आवश्यकता
मुझे कभी महसूस नहीं हुई कि जब न मिलेगा तीन दिनों तक भोजन तो पानी में घोल कर उसे पी लूंगा

केवल अभाव ही मनुष्य का दुश्मन नहीं होता
प्रकृति भी कभी हो जाती विकराल, अतिक्रूर
किसी का किया भोगता कोई
मेरे किए का दुःख न जाने सुदूर जंगली टापू पर बैठे किस बुजुर्ग को भोगना पड़ रहा है
उस अजन्मे बच्चे की मां
सिसकती एकान्त में कि
पानी से घिरे टापू पर न जाने कब मिलेगा
उसके पति को रोजगार जो रोज नाव में बैठकर मजदूरी ढूंढने जाता उस पार
नाव में छेद होने पर डूब जाती है नाव
भाग्य में छेद होने पर भी घुटनों के बल घिसटता है जीवन
हाय री जीवन।
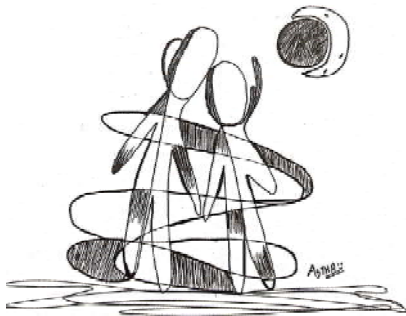
घास

सुबह-सुबह
हंसती है घास
जागती है
ओस
या
अम्बर की प्यास

तिनके की नोक पर
है धरती
अशेष फणों पर
स्थित हैं
कितनी धरतियां

घास
किसी बच्चे की मुस्कान- सी
खिल आती है
कहीं भी, कभी भी
किसी ऋतु की अपेक्षा के बिना
वह उपेक्षा का उपहास करती है

चट्टान के सीने पर
अपनी अंगुलियां सहलाती हुई
वह बैठ जाती है उसकी गोद में
अतीत को हरा करती हुई
स्मृतियों-सी घास
लहराती है
छू लेती है आसमान
आसमान छूता है
उसके पांव

वह उग आती है
इतिहास की दीवारों पर
वर्तमान के चेहरे पर भी
भर देती है उन्मुक्त हंसी-सी

धरती की झुर्रियों में
उगी हुई लाड़ली-घास
उसके बुढ़ापे का सहारा
सबसे बड़ी
सबसे छोटी बेटी
पुराणी युवती-सी

गज्जों की गली, पूरा मोहल्ला,
भजनचोकी जोधपुर-342001 राजस्थान

कहानी

जिंदा उम्मीद

✍ डॉ. राजन तनवर

वर्ष बीतते जा रहे थे किंतु उम्मीद आस नहीं छोड़ रही थी। शायद, बबली उठ खड़ी होगी......! किंतु संतोषजनक परिणाम न आने के कारण डॉक्टरों ने भी अब ध्यान देना कम कर दिया था फिर भी यश की आस डगमगाई नही थी। वह तो बबली के साथ बिताए वर्ष भर की मधुरतम स्मृतियों को याद करके उसके निश्चेष्ट शरीर की सेवा में चौबिसों घंटे लगा रहता। यश की अम्मां भी बहू के ऊपर उठने की आस लगाकर यश को बीच-बीच में आराम करने के लिए कहती तथा बहू का मुख निहार कर साल भर पहले घर में आयोजित हुए विवाह उत्सव को याद करके अपनी आंख से बह रहे आंसुओं को नहीं रोक पाती। यश के सामने आते ही उसे आभास भी नहीं होने देती कि वह भी उसके जैसी ही दु:खी है। उसका सुखी परिवार दु:ख की बेड़ियों में जकड़ा ही जा रहा था। किंतु बेटे यश के निराकार अदृश्य शक्ति के विश्वास के आगे वह नत मस्तक हुए जाती थी। मन ही मन प्रसन्न होती कि उसकी कोख से ऐसे बेटे ने जन्म लिया है जो रूढ़ियों एवं अंध विश्वासों से कोसों दूर पत्नी सेवा को ही अपना सर्वस्व समझता है तथा जिसने डॉक्टरी इलाज को ही महत्त्व दिया है। तांत्रिक, ओझाओं और पंडों के लिए उनके घर में कोई स्थान नहीं है। उसके लिए तो यह दोहरे गर्व का विषय है - एक तो यह कि उसने उसकी कोख से जन्म लिया है और दूसरे वह इस जमाने में नि:स्वार्थ भाव से नारी सम्मान एवं उसकी पीड़ा को समझकर बहू की सेवा कर रहा है। उसकी आयु वर्ग के कुछ युवा समाज में हर दिन अपनी दरिंदगी के निशान छोड़ रहे हैं। यश की अम्मां के मन में रह-रह कर प्रश्न कौंधते-

मेरा बेटा क्या, बबली के ठीक होणे की आस में ही अपणा जीवण गुजार देगा?

यह पहाड़ जैसी जिंदड़ी कैसे बिताएगा....किंतु वह यश से बात करने की हिम्मत न जुटा पाती ऐसी ही उधेड़-बुन में - सात वर्षों का समय गुजर गया।

यश मां के साथ मिलकर हर रोज बबली के शरीर की सफाई करता। टुथ पेस्ट लगी अंगुली मुंह में घुमाते हुए कई बार बबली के दांतों से उसमें घाव भी हो जाते। वह उसको ड्राई बॉथ करवाते। डायपर बदलते। बबली के लंबे बालों को कंघी करके दो चोटियां बनाते। इन कार्यों को पूर्ण करने में प्रतिदिन उनके दो-तीन घंटे लग जाते।

यश बबली के शरीर की सफाई करते हुए पूर्व स्मृतियों में खो जाता - लूज मोशन की छोटी सी बीमारी ने बबली को इस रूप में पहुंचा दिया है। विवाह के वर्ष बाद बबली ने गर्भ धारण कर लिया था। सब कुछ ठीक-ठाक चल रहा था। गर्भ धारण के तीसरे महीने बबली उल्टी दस्त के रोग से घिर गई, पता ही नहीं चला। 16 सैक्टर के जर्नल हॉस्पिटल में आनन-फानन में भर्ती करवाया था। चार दिनों तक इलाज चलता रहा था। चौथे दिन डॉक्टरों ने कह दिया था कि पीजीआई ले जाओ...........! ऐसा फलैश बैक उसके जीवन में हर दिन चलता ही रहता।

एक सुबह जब वे बबली के शरीर की सफाई के कार्यों में व्यस्त थे उसके मम्मी-पापा कब बैठक के कमरे में आकर

उसका सुखी परिवार दु:ख की बेड़ियों में जकड़ा ही जा रहा था। किंतु बेटे यश के निराकार अदृश्य शक्ति के विश्वास के आगे वह नत मस्तक हुए जाती थी। मन ही मन प्रसन्न होती कि उसकी कोख से ऐसे बेटे ने जन्म लिया है जो रूढ़ियों एवं अंध विश्वासों से कोसों दूर पत्नी सेवा को ही अपना सर्वस्व समझता है तथा जिसने डॉक्टरी ईलाज को ही महत्त्व दिया है।

बैठ गए थे पता ही नहीं चला।

बबली की मां मन ही मन यश को आशीर्वाद दिए जा रही थी तथा बबली की शादी के एक वर्ष बाद के सुखद समय को याद कर रही थी जब उसे यश ने फोन करके बताया था कि- 'मम्मी बबली को डायरिया हो गया है मैं अम्मा-पापा के साथ उसे 16 सैक्टर के जनरल हॉस्पिटल लेकर आया हूं, डॉक्टरों ने उसे एडमिट कर लिया है।'

मैं और बबली के पापा दौड़े-दौड़े सवा घंटे में अंबाला से 16 सैक्टर के हस्पताल में पहुँच गए थे। समधी-समधण रोये जा रहे थे, चुप होणे का नाम नहीं ले रहे थे। मैंने ही समधण को ढाढस बंधाया था और कहा था कि मुझे भी देखो, मै तो जन्म देणे वाली मां हूं, तुम तो धर्म मां हो समधण।

वह रो-रो कर बताये जा रही थी कि किस भांति बबली की तबीयत अचानक बिगड़ी और वे कैसे-कैसे अस्पताल पहंचे थे। इसी बीच डॉक्टरों ने यश को बुलाया था। यश ने मुरझाए हुए चेहरे से कहा था हमें तुरंत बबली को लेकर पीजीआई पहुंचना है। डॉक्टर ने मुझसे कहा है -'देयर आर सम कंपलीकेशनस वी आर रैफरिंग दिस केस टु पीजीआई'

पंद्रह मिनट में हम सभी बबली के साथ पीजीआई की इमरजैंसी में पहुंच गए थे तुरंत इलाज आरंभ हो गया था। हमने राहत की सांस ली। सभी टेस्ट दोबारा हुए। डॉक्टरों ने बताया कि बबली प्रेग्नेंट थी किंतु बच्चा बच्चादानी में न पलकर दूसरी टयूब में बढ़ रहा था जिस कारण से टयूब बरस्ट होने के कारण सेप्टिक हो गया है तुरंत आप्रेशन करना होगा।

बबली का सफल ऑपरेशन हो गया था हम सभी खुश थे, दो दिनों के बाद अचानक बबली को दिल का दौरा पड़ा। डॉक्टरों ने उस पर भी नियंत्रण कर लिया था किंतु ब्रेन को पूर्व वाली स्थिति में नहीं ला पाए थे.....! बबली का ब्रेन डेड हो गया था।

यश, समधी एवं समधण पीछले सात वर्षों से बबली की सेवा अपनी सुध-बुध खोकर किए जा रहे हैं।

मैं भाग्यवान हूं कि मेरी मुन्नी को इस अवस्था में इतणी सेवा फाजत मिल रही है।

ऐसा सोचते-सोचते बबली की मां भभक-भभक कर रोने लगी अभी तक यश और उसकी मां का ध्यान उनकी ओर नहीं गया था। जैसे ही उन्होंने पीछे मुड़कर देखा बबली के मम्मी-पापा को देखकर आश्चर्य चकित रह गए कि वे कब से पहुंचे हैं किंतु उनका ध्यान उनकी ओर गया ही नहीं। यश की मम्मी स्वयं से शिकवा करने लगी - माफ करणा जी हमारा ध्याण आपकी ओर गया ही नहीं। सचमुच जी एक-दो घंटे हमारे साथ ऐसा ही होता है। कई पास-पड़ौस वाले तो बुरा बी मान जाते हैं। पर क्या करणा जी बबली के कर्म के साथ हमारे कर्म बी जुड़े हैं इनसे कैसे छूट सकते हैं जी। चलो होर सुणाओ जी आपके घर परिवार में सब ठीक-ठाक तो है जी।

बबली की मम्मी ने भभक कर रोते-रोते यश को गले लगा लिया। बेटा सात सालों से तुम्हारा दुःख देख रहे हैं - होर नी देखा जाता। तुमने तो पुरुष समाज पर जुगों-जुगों से लग रहे कलंक को ही धो डाला कि पुरुष केवल स्त्री को विलासी जीवण के लिए ही उपयोग करता है। बेटा तुम तो पुरुष जाति का सम्मान बणकर उभरे हो-तुम मृतप्राय मेरी बेटी और अपणी बीबी के लिए सब कुछ त्याग कर बैठे हो, मैं अब ऐसा नहीं होणें दूंगी। पीछले सात सालों से तुमने हमारी एक नहीं सुणी किंतु अब ऐसा नहीं होगा।

बेटा मैं तुम्हारा ब्याह करूंगी। एक मां अपने जवांई की बारात लेकर जाएगी। मैं देख चुकी हूं कि बबली अब ठीक नहीं होगी। मेरा जवांई बेटा दूसरा ब्याह रचायगा। तुम्हें बबली के प्रेम की कसम तुम्हारी इन्कार मंजूर नहीं होगी। बबली की सेवा तब भी ऐसी ही होती रहेगी। मैं अपणी बहन की बेटी से तुम्हारा ब्याह रचा दूंगी, तुम बस इन्कार न करना। दोनों मियां-बीबी इसकी फाज़त करणा।

सासू मां के मुंह से ऐसा सुनने के बाद यश कुछ पलों के लिए निस्तब्ध हो गया उसकी जुबान से कोई शब्द नहीं निकल रहे थे, वह स्वयं को असहज महसूस कर रहा था। अपनी सासू मां के मुख से वह क्या सुन रहा था? समझ ही नहीं पा रहा था कि क्या जवाब दे। तब तक सासू मां ने फिर बोलना शुरू कर दिया बेटा मैं फिर से कह रही हूं तुम्हारा दुःख अब मुझसे नहीं देखा जाता। तुम्हें मेरी बात का जवाब देणा ही होगा। तुम सोचो तो सही जिसकी बेटी पिछले सात सालों से मरणासन्न है वह मां अपने जवांई का दूजा व्याह रचाणा चाह रही है। मैं तुम्हारे प्रेम और त्याग के आगे नतमस्तक हूं। तुम्हारा बबली की निश्चेष्ट देह की ओर जो लगाव और प्रेम आज भी है उसे देखकर मैं ही नहीं पूरा समाज तुम पे न्यौछावर हुए जाता है।

यश के मन में चल रहा अंतरद्वंद्व थमने का नाम नहीं ले रहा था किंतु उसकी जुबान अब भी बाहर नहीं निकल रही थी। मानों उसके ओंठ सिले हों। उसने सासू मां तो क्या अपनी जन्मदात्री की जुबान से ऐसा सुनने की कल्पना भी नहीं की थी।

वह बिना कुछ बोले वहां से उठकर चला गया। उसका अंतरद्वंद्व और बढ़ गया। जिह्वा सूख चुकी थी। उसे ऐसा लग रहा था जैसे कोई अनहोनी उसके साथ होने जा रही हो। रसोई में जाकर ठंडे पानी का गिलास उसने एक सांस में ही पी लिया। दोनों हाथों से माथा पकड़ा। पिछले सात सालों

से ऐसी सोच उसके मन में कभी भी नहीं आई थी। आज उसकी सासू मां ऐसा कह रही है, वह सोचने पर मजबूर हुए जा हा था! उसके सास ससुर और मां रसोई घर में ही आ गए थे।

अबकी बार उसकी अम्मां ने बोलना शुरू किया - बेटा समधण क्या कह रही है? इनकी बात पर विचार किया कि नहीं! कोई भी मां बेटी के जीते जी उसकी सौतण नहीं देख सकती। अगर समधण कुछ कह रही है तो इसका जरूर कोई मतलब है। इनकी भावणा का सम्माण कर तथा बात मान जा। अब बबली के ठीक होणे की उम्मीद नहीं है। रही इसकी सेवा फाज़त की बात वह तुम दोनों बाद में भी कर सकते हो जब तक मेरी जाण है मैं भी कसर नहीं छोड़ूंगी। समधण की बहन की बेटी भी बबली की स्थिति जाणती है। समधण ने उससे मशवरा करने के बाद ही तुमसे बात करने की कोशिश की है। तुम हमसे अधिक पढ़े-लिखे और समझदार तथा हमसे ज्यादा घुमे फिरे भी हो। बजुर्गों की बात का माण रखा करते हैं बड़े कभी गल्त नहीं बोलते। क्या पता कुदरत ने तुम्हारी किस्मत में दो पत्नियों के साथ जीवण बीताणे का संजोग रचा हो। क्या जाणे कुदरत को यही सब मणजूर हो!

बबली के पापा जो अब तक बिलकुल चुप थे उन्होंने भी वही संवाद दोहराना शुरू किया। अबकी बार यश चुप नहीं रहा उसने कह ही दिया-यदि आप सभी को ऐसा ही लगता है तो देख लो किंतु बबली की सेवा-इफ़ाज़त के साथ मैं कोई समझौता नहीं कर पाऊंगा।

उसने अपनी बात जारी रखते हुए एक शर्त रखी-मम्मी मैंने आपकी बात मान ली है किंतु आप सभी को भी मेरी एक बात माननी पड़ेगी। सभी हैरानी से उसकी ओर देखने लगे - मैं कागजों में नाम लिखवा कर आपकी बहन की बेटी को घर ले आऊंगा किंतु बैंड-बाजा नहीं बजवाऊंगा। पंडितों से फेरे नहीं करवाऊंगा। पिछली बार भी पुरोहित ने हम दोनों के छत्तीस गुणों का मेल करवाया था। हजारों रुपया उनकी जेब में गया था। कई किलो दालें, घी, वस्त्र, जुते-चप्पल न जाने क्या-क्या उनकी झोली में गया था किंतु हमारा जीवन तो पिछले सात सालों से नरक ही बना बैठा है। बबली मरणासन्न है और हम सब देखकर कुछ नहीं कर पा रहे हैं। मेरा इस कर्मकांडी विचारधारा से मन ऊब चुका है। यदि आप मेरे इन विचारों से सहमत हो तो मैं माननीय न्यायालय से विवाह के पेपर तैयार करवाकर तथा गरिमामयी संविधान को साक्षी मानकर बबली की मासी की बेटी को घर लाने के लिए तैयार हूं क्योंकि मुसीबत एवं बीमारी की अवस्था में डॉक्टर, न्यायालय एवं संविधान ही साथ देते हैं। कर्मकांडी तो उलझाते ही हैं, पथ भ्रष्ट ही कर सकते हैं।

यश के निर्णय को सभी ने सराहा तथा अपनी सहमति जताई। संविधान को साक्षी मानकर तथा न्यायालय की गरिमा का सम्मान करते हुए यश ने दूसरी बीबी के साथ जीवन जीना शुरू कर दिया है किंतु बबली के ठीक होने की उम्मीद जिंदा है।

गांव घाटकुम्हाला, डाकघर शारड़ाघाट, वाया कुनिहार, जिला सोलन हिमाचल प्रदेश 173207, संपर्क-9418978683

बाल पहेलियां

✍ डॉ. कमलेन्द्र कुमार

1-सदा बनाऊँ रोटी सब्जी,
जलना मेरा काम।
हलवा पूड़ी जमकर खाओ,
बोलो मेरा नाम॥

2-लोग कहें संसार मुझे,
पर मैं पात्र निराला।
नीर, क्षीर तुम रख लो मुझमें,
बोलो प्यारे लाला॥

3-जहाँ बनाती प्यारी मम्मी,
भिन्न भिन्न पकवान।
और बनाती चाय पकौड़ी
बोलो रवि रहमान॥

4-शीतल जल मैं करने वाला,
पात्र अनोखा प्यारे।
गर्मी में सब चाहे मुझको,
बोलो राज दुलारे॥

उत्तर :- 1-चूल्हा, 2-जग, 3- रसोई घर, 4-घड़ा

रावगंज, कालपी जिला जालौन, उत्तर प्रदेश-285204
मो. 9451318138

लेख

देव परम्पराओं को सहेजता मण्डी का शिवरात्रि महोत्सव

✍ कपिल चटर्जी

मण्डी शिवरात्रि पर्व में कुछ दशकों में समय के साथ-साथ कई परिवर्तन देखने को मिले व धीरे-धीरे इसका स्वरूप भी बदलता गया। यह परिवर्तन अधिकतर प्रशासनिक, व्यापारिक स्तर पर देखने को मिले वहीं सैकड़ों वर्षों से मेलों में आ रहे देवी देवताओं के प्रति लोगों व देवलुओं की आस्था में कोई बदलाव देखने को नहीं मिला, बल्कि इनकी आस्था का सैलाब और बढ़ा जिसे आज भी सरकार, स्थानीय प्रशासन, देव समाज व ग्रामीण समुदाय के द्वारा इस सैकड़ों साल पुरानी समृद्ध लोक संस्कृति की उच्च परम्पराओं को बड़ी बखूबी से सहेजे हुए है। यही कारण है कि आज रियासत काल से चली आ रही परम्पराओं का विधिवत निर्वहन करते हुए देवी-देवताओं के रथ देवलुओं के साथ आज भी इन देव समागमों में आ रहे है जो देव संस्कृति में लोगों की अटूट आस्था एवं विश्वास का एक प्रतीक बने हैं। यही कारण है कि जिसके परिणामस्वरूप आज यह देव समागम एक अन्तरराष्ट्रीय स्वरूप धारण कर चुका है।

मण्डी शहर के अधिष्ठाता बाबा भूतनाथ के मंदिर में शिवरात्रि के एक माह पूर्व तारा रात्रि से शिवलिंग पर जलाभिषेक के लिए रखी गई पानी की गागर को उठा दिया जाता है और शिवलिंग पर प्रतिदिन मक्खन का लेप लगा कर श्रृंगार किया जाता है जो आहिस्ता-आहिस्ता एक बड़े शिवलिंग का रूप ले लेता है। मन्दिर में यह मक्खन का श्रृंगार करने की परम्परा शिवरात्रि महोत्सव में सदियों से चली आ रही है। इस परम्परा का निर्वाह करते हुए एक नयी व्यवस्था को जोड़ा था। मन्दिर में श्रद्धालुओं द्वारा चढ़ावे के रूप में चढ़ाये गये मक्खन से शिवलिंग के विभिन्न रूपों को बनाया जाता है। मण्डी का भूतनाथ मन्दिर हर बार शिवरात्रि से एक माह पहले व शिवरात्रि तक शिवलिंग के विभिन्न रूपों के कारण श्रद्धालुओं के लिए श्रद्धा, आस्था व दिव्य आकर्षण का एक केन्द्र बना रहता है। महाशिवरात्रि महोत्सव का आरम्भ भी बाबा भूतनाथ की पूजा अर्चना के साथ होता है। देव आगमन शिवरात्रि का प्रमुख आकर्षण है। देव समागम जब गांव-गांव से देवी देवता सुसज्जित रथों पर आरूढ़ होकर अपने देवलुओं के साथ पूरे पारंपरिक वाद्य यन्त्रों की धुनों पर झूमते-गाते शिवरात्रि से एक दिन पहले नगर में पहुंचने शुरू हो जाते हैं। पूरा नगर इन वाद्य यन्त्रों की स्वर लहरियों से गुंजायमान हो उठता है। इस दिन देव कमरू नाग, देव बूढ़ा बिंगल व देव डंगाडू जैसे वरिष्ठ देवता जब नगर में प्रवेश करते हैं तो देव आस्था से जुड़े लोग देवताओं के स्वागत व दर्शन के लिए उमड़ पड़ते हैं। शिवरात्रि के दिन तो चारों दिशाओं से देवी-देवता शहर में प्रवेश करते है तो इस देव मिलन का नजारा देखते ही बनता है। शिवरात्रि महोत्सव पर जब देवी-देवता नगर में प्रवेश करते हैं तो शहर के लोग सज-धज कर इन देवी-देवताओं का अभिनंदन करते थे, जिसकी एक छोटी-सी झलक आज भी गोल सीढियों के पास देखने को मिलती है, जब देव बूढ़ा

बिंगल नगर में प्रवेश करते है। इस गली के लोग पूजा की थाली लिए देवता का अभिनंदन करते है। समस्त नगर में देव आगमन का यह दृश्य अन्य दिनों की उपेक्षा एक अलग ही आनंद की अनुभूति प्रदान करता है। यह परम्परा कई वर्षों से चली आ रही है। पहले देवता राजदेव माधोराय के मंदिर जो दमदमा महल में अपना अभिनंदन करते है तत्पश्चात राज परिवार से मिलने जाते हैं। इस प्रकिया में पुराने व नये देवता मेले में विराजते हैं। कई वर्षों से इस देव नीति की परम्परा के निर्वहन में पुराने दो देवताओं देव वरनाग व चण्डोही की कमी आज भी खलती है।

जलेब (शोभायात्रा) : शिवरात्रि महोत्सव का वास्तविक शुभारम्भ मुख्य अतिथि द्वारा मण्डी के राज देवता माधोराय की पूजा-अर्चना के बाद जलेब (शोभा यात्रा) के आयोजन से होता है। जलेब का परिदृश्य तो देखते ही बनता है जिसे देखने के लिए मण्डी शहर की जनता राज देवता माधोराय के मंदिर से पड्डल तक पलकें बिछाये कतारबद्ध हो सड़क के दोनों तरफ खड़े हो जाते हैं। शिवरात्रि महोत्सव का यह दृश्य लागों का जनसैलाब व रंग-बिरंगी पगड़ियों में गणमान्य अतिथि देवताओं के सुसज्जित रथ व इनके वाद्य यन्त्रों की ताल पर नाचते गाते देवलू अपने-अपने क्षेत्र का प्रतिनिधित्व करते जब इस जलेब में चलते है तो यह नजारा देखते ही बनता है। जलेब निकालने की यह परम्परा राजतंत्र के जमाने से चलती आ रही है जो आज भी बड़े शाही अंदाज से निकाली जाती है, जिसे देश विदेश में बसे लोग भी इस मौके पर पहुंच कर अपनी उपस्थिति ही दर्ज नहीं कराते हैं बल्कि इन पलों को जीवंत रूप में देख कर आनंद की एक अलग अनुभूति महसूस करते हैं। मेलों के दौरान जलेब का तीन बार आयोजन किया जाता है। पहली जलेब शिवरात्रि मेले के शुभारंभ के अवसर पर तथा दूसरी मेले के चौथे दिन में व तीसरी जलेब मेले के अंतिम दिन निकाली जाती है। तीसरी जलेब (शोभायात्रा) के साथ ही मेले का विधिवत समापन होता है।

शिवरात्रि महोत्सव में अलग-अलग शैली में आये देवी देवताओं के सुसज्जित रथ मेले का एक विशेष आकर्षण रहते हैं। जो प्रतिदिन पड्डल मैदान में कॉलेज के समीप अपने-अपने चिह्नित स्थानों में विराजमान होते हैं। जहां का दृश्य एक अलग ही अनुभूति प्रदान करता है। इस स्थान का यह दृश्य देखते ही बनता है। कहीं लोग पुजारी के माध्यम से देवी-देवताओं से वार्तालाप करते (पूछ डालते) तो कहीं देवी-देवताओं वाद्ययन्त्रों पर नृत्य करते तो कहीं आपस में मिलते तो कहीं देवलुओं का नृत्य पूरे ग्रामीण परिवेश की झलक के दर्शन करवाता है।

नरोल की देवियां मेले के दौरान रूपेश्वरी देवी के मन्दिर में नरोल भगवतियां जिनमें माता बगलामुखी बाखली, देवी बूढ़ी भैरवा पण्डोह, देवी काशमीरी कुकलाह, माता धूमावती कोटमोर्स, माता बगला मुखी बुसाई कैहनवाल, माता रूपेशवरी भगवती इन सब देवियों के रथ पूरे मेले के दौरान इस मंदिर के एक कमरे में ही विराजमान रहते है व मेले के अन्तिम दिन ही इस मन्दिर से बाहर आते हैं, इस विशिष्ट परम्परा को नरोल प्रथा के नाम से सम्बोधन किया जाता है। कहते हैं कि रियासत काल में मेले के दौरान जब राजा मेले में चले जाते थे, तो महल में अकेले रानियां रह जाती थीं तो ये भगवतियां रानी की सखियों के रूप में महल में विराजमान रहती थी। नरोल में रहने की इस परम्परा का निर्वाहन जो रियासत के समय से चली आ रही है, आज भी देखा जा सकता है। जहां पर ज्यादातर घुड़ वाली शैली के रथों के दर्शन किये जा सकते हैं।

सुरक्षा का घेरा देव आदि ब्रह्मा उतर शाल गांव टिहरी की भी शिवरात्रि मेले में समापन के समय सभी देवी-देवताओं से अलग प्रकार की मुख्य भूमिका रहती है। कई वर्षों से मेले के अन्तिम दिन देव रथ के द्वारा रियासत काल की पुरानी सीमा सकेती पुल से होते हुये सिद्धकाली माता मंदिर तक परिक्रमा की जाती व गेहूं के आटे से नगर की सुरक्षा के लिए एक घेरा देवता द्वारा बांधा जाता है। यह परम्परा रियासत काल से चली आ रही है। कहते हैं कि मण्डी के राजा ने अपने नगर वासियों की बीमारी इत्यादि की सुरक्षा का जिम्मा देव आदि ब्रह्मा उतरशाल टिहरी के देवता को सौंपा था। तब से आज तक रियासत काल से चली आ रही इस देव नीति के तहत की जा रही प्रकिया व परम्परा का निर्वहन आज भी किया जाता है। देवी मडभखन का रथ जो पंचवक्त्र महादेव मंदिर में शिवरात्रि महोत्सव के

शिवरात्रि महोत्सव में अलग-अलग शैली में आये देवी देवताओं के सुसज्जित रथ मेले का एक विशेष आकर्षण रहते हैं। जो प्रतिदिन पड्डल मैदान में कॉलेज के समीप अपने-अपने चिन्हित स्थानों में विराजमान होते हैं। जहां का दृश्य एक अलग ही अनुभूति प्रदान करता है। इस स्थान का यह दृश्य देखते ही बनता है। कहीं लोग पुजारी के माध्यम से देवी देवताओं से वार्तालाप करते (पूछ डालते) तो कहीं देवी-देवता वाद्ययन्त्रों पर नृत्य करते तो कहीं आपस में मिलते तो कहीं देवलुओं का नृत्य पूरे ग्रामीण परिवेश की झलक के दर्शन करवाता है।

दौरान विराजमान रहता है। कहते हैं कि कभी देवी के रथ को जंजीरों से बांध कर रखा जाता था। देवी के रथ पर लगे प्राचीन मोहरे से देवी प्रचंड शक्ति व प्रबल बलशाली हो जाती थी। यह भय बना रहता था देवी का रथ मंदिर के साथ लगे शमशान में शवों का भोग न लगा ले के कारण रथ को जंजीरों से बांध कर रखा जाता था। वर्तमान में देवी के रथ में वे मोहरे नहीं लगाये जाते हैं जिससे देवी में प्रबल शक्ति विराजमान रहती है। इस देव समागम में अलग-अलग शैली में आये देवी-देवताओं के सुसज्जित रथ मेले का एक विशेष आकर्षण होते हैं। देवताओं की यह अलग-अलग रथ शैलियां ज्यादातर अपने-अपने क्षेत्र का प्रतिनिधित्व करती दिखती है। जिनमें चुहारघाटी, बदार, सराज व अन्य क्षेत्रों की अलग-अलग झलक देखने को मिलती है। बड़ा देव कमरू नाग छड़ी व ऋषि पराशर का प्रतीक चिन्ह मोर पंखा शिवरात्रि मेले में लाया जाता है। देव बूढ़ा बिंगल मण्डी के सभी देवी-देवताओं में सबसे बुजुर्ग व वरिष्ठ देवता है जिनका रथ करड़ी नुमा शैली में है, जिसे खारा भी कहा जाता है, में आरूढ़ हो कर शिवरात्रि मेले में आते हैं, जिनका यह स्वरूप व अलग रथ शैली के कारण सभी देवी-देवताओं में अपनी अलग पहचान बनाये है। चुहारघाटी के लोक देवता का यह समूह जिनमें शामिल हैं देव हूरंग नारायण, देव पशाकोट, देव राजायण रियागडी, देवता गहरी गलू, देव त्रैलू गहरी, देव दरूण गहरी चुहारघाटी देवी गहरी बथेरी अमरगढ, देव घडौनी नारायण चुहारघाटी के इन देवी-देवताओं के विविध तरह की रथ शैलियां मेले का प्रमुख आकर्षण का केन्द्र होती है। चुहारघाटी के देवता अपनी अलग ही पहचान से जाने जाते हैं। इनके मण्डप सफेद कपड़े की कतरनों से सजे रहते हैं। जिसे पगड़ी शैली से जाना जाता है। सराजघाटी के थाची क्षेत्र का प्रतिनिधित्व करने वाले 16 मोहरे वाले श्री बिटठू नारायण का रथ सभी रथों में अलग ही स्वरूप में है। रियासत काल मण्डी के राज दरबार में देवता बिटठू नारायण को कलश देवता की उपाधि से भी नवाजा गया था। देवता का रथ जब भी अपने देवलुओं के साथ निकलता है, तो दो मौखटे भी साथ रहते हैं जिनमें एक लक्ष्मी नारायण व दूसरा लक्ष्मी माता का है और जब भी देवता नदी पर बने पुल से गुजरते हैं तो यह मुखौटे पहने जाते हैं और फागली बजाई जाती है। जिसकी झलक शिवरात्रि मेले की शोभायात्रा व दिन के दौरान सुकेती पुल को लांघते समय देखने को मिल जाती है। देव आदि ब्रह्मा की रथ शैली कुल्लू के देवी देवताओं से मिलती जुलती है। आदि ब्रह्मा को कुल्लू जिला के खोखण कोठी के देवता ब्रह्मा का बड़ा भाई माना जाता है। प्राचीन रथों में आज भी कुछ देवियों के रथ उसी रूप में है जिन्हें घूंड वाले रथ भी कहा जाता है जिनमें प्रमुख है माता बगलामुखी, बुढी भैरवा, धूमावती माता काशमीरी, कोयला भगवती, देवी चतुर्भुजा इत्यादि देवियों के रथ हैं जो आज भी इसी शैली में अपने मूल रूप को बनाये हुये हैं।

विशेष आकर्षण का केन्द्र रहता है पड्डल में कॉलेज का मैदान, जहां देवी-देवता दिन के समय विराजमान रहते हैं। मेले में दूर-दराज के क्षेत्रों से आये देवी देवताओं में कुछ के पास श्रद्धालुओं का तांता लगा रहता है। जिनमें बदार की सात बहनों के दर्शन देखते ही बनते हैं जिनमें प्रमुख है माता मैहणी, देवी धारा की नागण, देवी निसू की पडासरी, मां सोना सिंहासन न्यूल, देवी काढी घटासनी शिवा, देवी मासड की बूढी बछारण व देवी विहन की घटाशन विहनधार इन सब देवियों का मेले के दौरान हुआ हार शृंगार देखते ही बनता है।

शिवरात्रि मेले की समाप्ति की पूर्व संध्या रूपेश्वरी देवी के मंदिर के प्रांगण में जाग का आयोजन किया जाता है जिसमें जाग/होम देव परासर की अध्यक्षता में विशिष्ट परम्परा व विधि विधान से प्रमुख देवी देवताओं के गुरों द्वारा क्रमवार पूरा किया जाता है व इस अवसर पर गुर के माध्यम से देवी देवता भविष्यवाणी भी करते हुये राज परिवार व मण्डी जनपद को सुख समृद्धि का आशीर्वाद देते हैं।

सप्ताह भर आयोजित होने वाले इस शिवरात्रि मेले में चोहटे की जातर का एक विशेष आकर्षण रहता है। मेले के अंतिम दिन माता रूपेश्वरी के मंदिर में प्रशासन की तरफ से नजराना जिसमें देवी देवताओं को वस्त्र तथा अन्य सामग्री भेंट स्वरूप प्रदान की जाती है। इस प्रकिया के दौरान कुछ पल के लिए बड़ा देव कमरूनाग भी इस अवसर पर कुछ पल के लिए मंदिर में विराजमान होते हैं। इन भेंटों को स्वीकार कर सभी देवी-देवताओं के रथ चोहटे (एक स्थान नगर के मध्य) में और बड़ा देव कमरूनाग लोगों के दर्शन के लिए सेरी मंच के पास सीढ़ियों पर विराजमान होते हैं। नगरवासी मेले के अंतिम दिन चोहटे की जातर में समस्त देवी-देवताओं के दर्शन कर आशीर्वाद प्राप्त करते हैं।

आज की इस चकाचौंध में युगों से इन धार्मिक व सांस्कृतिक उत्सवों के साथ जुड़ी मूल आस्थाओं तथा श्रद्धा व विश्वास से जुड़ी इन परम्पराओं को बनाये रखने के लिए सदा प्रयासरत रहने की आवश्यकता है ताकि हम युगों की इस देव व ग्रामीण क्षेत्र की बहुमूल्य सांस्कृतिक धरोहर के इन मण्डी शिवरात्रि के अविस्मरणीय पलों को विस्मृत न होने दें।

84/9 चटर्जी भवन भगवाहन मुहल्ला मण्डी
(हि.प्र.) मो. 9015020975

कहानी

अनंत की यात्रा के पथिक

✍ मनोज कुमार शिव

'मुनिया! जल्दी-जल्दी हाथ चला! अभी बहुत काम बाकी है।' उस पटाखा फैक्ट्री की तीसरी मंजिल के एक हॉल में कार्टन डिब्बों को मुनिया के पास लाकर राजू ने कहा। 'हाँ...' हाँ ... काम तो बहुत है लेकिन हाथ तो भगवान जी ने दो ही दिए हैं।' सुबह से तैयार किए पटाखों के पैकेट को डिब्बों में भरते हुए मुनिया बोली तो पास में काम कर रहा बबलू भी खीं..खीं.. कर हँसने लगा। 'मैंने तो सुबह से आतिशबाजी के बीस डिब्बे पैक कर लिए हैं ।' उन्हीं की शिफ्ट में काम करने वाला बबलू उत्साह से बोला। राजू, बबलू और मुनिया तीनों अपने घर से मीलों दूर इस पटाखा फैक्ट्री में पिछले दो वर्षों से काम कर रहे हैं। उनकी उम्र 15 से 18 वर्ष के बीच की है। घर पर आर्थिक हालात अच्छे नहीं थे कि गांव के बाकी बच्चों की तरह वे भी पढ़ाई लिखाई कर पाते। सब के नसीब में सुख कहाँ लिखा होता है! राजू के घर में उसकी अपाहिज माँ व दो छोटे भाई-बहन है। पिता एक हादसे में गुजर गए थे। माँ घर-घर जाकर साफ सफाई का काम करती है। मुनिया के पिताजी अक्सर शराब के नशे में बेसुध पड़े रहते हैं। थोड़ा-बहुत मेहनत मजदूरी करके जो कमाया हो उसी की दारू पीकर उड़ा देते हैं। घर में दूसरा कोई आय का स्रोत भी नहीं है।

बबलू को उसके मुंह बोले चाचा गाँव से शहर ले आए थे। बबलू के बाबा ने गाँव में किसी रईस से कुछ वर्ष पहले ऋण ले रखा है। हर वर्ष उस ऋण का कुछ ही हिस्सा चुका पाते हैं। वे गाँव में ईंट भट्ठे में काम करते हैं। लेकिन काम नियमित तौर पर नहीं मिल पाता है इसलिए उन्होंने बबलू को फैक्ट्री में काम करने को भेज दिया है ताकि लिए गए ऋण को ब्याज सहित जल्दी लौटाया जा सके। यह पटाखा फैक्ट्री शहर के पूर्वी इलाके में है। आसपास आबादी बसती है। यह एक पाँच मंजिला इमारत है। हर मंजिल पर बड़े-बड़े हॉल बने हैं। यहां काम करने वाली ज्यादातर महिलाएं और बच्चे हैं। हर कार्य को एक चरणबद्ध तरीके से पूरा किया जाता है। मान लीजिए पटाखों को बनाना है तो इस प्रक्रिया में सबसे पहले मोटे कागज को मशीनों या हाथ से गोलाकार या बेलनाकार काटा जाता है फिर उन कटे हुए भागों में दूसरे मजदूर वर्ग द्वारा तैयार किए हुए बारूदी पेस्ट को पटाखों को वांछित आकृति देकर भर दिया जाता है। साथ ही ऊपरी सिरे पर ज्वलनशील बत्ती लगा दी जाती है। अब इसे दो-तीन दिन तक सुखाया जाता है और अंततः डिब्बों में पैक कर बेचने को भेज दिया जाता है।

मुनिया आज थोड़ी परेशान है वो इसलिए कि एक महीने बाद दीपावली का महापर्व आने वाला है और इस उत्सव के लिए उसकी कोई भी तैयारी नहीं है। अभी उन्हें फैक्ट्री प्रबन्धन से पिछले महीने का मेहनताना भी नहीं मिला है। मुनिया सोच रही है कि वो आज फिर ठेकेदार से पैसे मांगेगी। क्या पता मुआ कुछ रुपए दे ही दे ताकि समय रहते पैसे घर पहुंचाए जा सके। जिससे माँ दीपावली के मौके पर अपने लिए साड़ी और छोटी बहन के लिए मिठाइयां व पटाखे खरीद सके।

पिछली दफा पैसे भेजने में देर हो गई थी। माँ तो नाराज नहीं हुई थी लेकिन छोटी बहन ने दो दिन तक बात नहीं की थी। क्योंकि उसकी सभी सहेलियों के पास दीपावली के मौके पर नई गुड़िया, मिठाइयां और पटाखे थे। वक्त ने छोटी ही उम्र में मुनिया के मासूम कंधों पर जिम्मेदारियों का बोझ डालकर उसे समय से पहले ही परिपक्व बना दिया था।

राजू अपनी माँ के लिए बड़ा सहारा है। गांव में ही एक दिन भारी बोझा उठाते हुए माँ अचानक गिर पड़ी थी। टांग की हड्डी टूटने से अब वह पहले जैसा काम नहीं कर पाती लेकिन लोगों के घर जाकर जैसे तैसे झाड़ू पोंछा लगाकर, साफ सफाई अभी भी करती है।

दीपावली नजदीक होने पर आजकल काम का ज्यादा जोर

है। ठेकेदार दिन में दो-दो दफा आकर काम देख कर जाता है। अगर कोई मजदूर सुस्ताता हुआ पाया जाए तो वे उसे बुरी तरह हड़काता है पगार में कटौती सो अलग।

मुनिया, राजू, बबलू जैसे कामगार देश के दूसरे प्रांतों से यहां आकर काम कर रहे हैं। ज्यादातर मजदूर उत्तर प्रदेश और बिहार से हैं। फैक्ट्री में आने का तो समय निश्चित है लेकिन जाने का कोई समय नहीं है और आजकल तो त्योहार की वजह से काम को लेकर अधिक मारामारी है। पिछले दो हफ्तों में चार लॉरी लोड होकर जा चुके हैं । फैक्ट्री का मालिक इस मौके पर ज्यादा से ज्यादा पैसा कमाना चाहता है।

इस पूरी पटाखा फैक्ट्री में बारूदी रसायन की तेज गंध घुल गई है। यह रसायन मानवीय त्वचा व फेफड़ों को नुकसान पहुंचाता है। जब बारूद के घोल का पेस्ट बनाया जाता है तो बारूदी पाउडर के अति सूक्ष्म कण हवा में फैल जाते हैं जो की फेफड़ों में समाकर एलर्जी, दमा, कैंसर जैसी बीमारियों का कारण बनते हैं। मुनिया, बबलू और राजू के पास न तो मास्क है और ना ही हाथ की त्वचा को बचाने के लिए दस्ताने। बाकि कामगार भी इन जहरीले रसायनों से स्वास्थ्य पर पड़ने वाले प्रतिकूल प्रभावों से बेखबर है।

राजू ने महसूस किया है कि ज्यादातर कामगारों को खांसी व एलर्जी जैसी शिकायत हमेशा ही बनी रहती है। पिछले हफ्ते से बुजुर्ग रेशमा ताई अब काम पर नहीं आ रही है। पता चला था कि उन्हें दो हफ्तों से बहुत ज्यादा खांसी की शिकायत हो गई थी।

मुनिया ने अपने घर में हर जरूरी चीज के लिए संघर्ष देखा है। आय के साधन नगण्य थे। अभावग्रस्त जीवन था। वह तभी से विचार करती थी कि कैसे गरीबी की इन बेड़ियों को तोड़ा जा सकता है। गरीब के लिए क्या तीज त्यौहार? सभी दिन एक जैसे ही होते हैं। इन खास मौकों को मनाने के लिए उमंग व उत्साह के साथ-साथ जेब में पैसा होना भी जरूरी है। मुनिया ने देखा है कि गांव में कुछ रईस लोग त्योहार आदि के मौके पर अपने समकक्ष धनवान लोगों को उपहार व मिठाई आदि भेंट कर बधाई देते हैं। मुनिया के मन में हमेशा ये बात रहती है कि कब वे भी इस तरह से तीज त्योहार मना पाएंगे? कब उनके आर्थिक हालात बदलेंगे?

राजू खुद तो आगे नहीं पढ़ पाया लेकिन वह अपने भाई बहन को जितना संभव हो सके पढ़ाना चाहता है। उसकी दिली ख्वाहिश है कि उसके भाई-बहन पढ़ लिखकर अपने पैरों पर खड़े हो सकें। बबलू भी अपने गरीब मां-बाप की सहायता करना चाहता है। दूसरी यूनिट में काम कर रहे 29 वर्षीय महेश को इस फैक्ट्री में काम करते हुए 8 वर्ष हो गए हैं। अगले महीने उसकी बहन की शादी है। उसे विश्वास है कि ठेकेदार से गुहार लगाकर वह बहन की शादी के लिए कुछ पैसे एडवांस ले लेगा ताकि बारातियों के आने व खाने-पीने का उचित प्रबंध किया जा सके।

यह फैक्ट्री इन कामगारों के लिए मात्र एक बिल्डिंग नहीं है बल्कि उनके सपनों को पूरा करने का एक बहुत बड़ा साधन है। यह उनके लिए किसी मंदिर से कम नहीं है। तभी तो ज्यादातर कामगार सुबह फैक्ट्री के गेट से अंदर प्रवेश करते हुए जमीन को स्पर्श कर रजकणों को माथे पर लगाते हैं। उन्हें अपने पेशे, अपनी आजीविका से लगाव है... गहरी आस्था है।

फैक्ट्री रोड़ से थोड़ी ही दूर है। रोड़ से फैक्ट्री तक एक छोटी सड़क आती है। इस फैक्ट्री में लगभग 40-50 कामगार अलग-अलग शिफ्ट में काम कर रहे हैं । कामगार दिन के लिए खाना खुद साथ ही ले आते है। वैसे तो यह फैक्ट्री पांच मंजिला है लेकिन कार्टन बॉक्स, पटाखों के लिए बारूद व अन्य चीजें बहुत अव्यवस्थित तरीके से रखी गई है। एक कमरे से दूसरे कमरे में जाने वाले रास्तों व सीढ़ियों पर सामान रखा है जिससे रास्ता और भी संकरा हो गया है। इस फैक्ट्री में काम करने वाले कामगारों के दोस्त जो दूसरे उत्पाद बनाने वाली फैक्ट्रियों में काम कर रहे है उन्हें उनकी फैक्ट्री प्रबंधन द्वारा दीपावली पर बोनस व उपहार में मिठाइयां दी जाने वाली है। उनके मेहनताने में भी बढ़ोतरी की खबर है।

मुनिया, बबलू, राजू और महेश जैसे कामगारों को भी अपनी फैक्ट्री प्रबंधन की तरफ से उपहार व वेतन में बढ़ोतरी की उम्मीद है। राजू लम्बे समय से अपनी अपाहिज माँ का किसी अच्छे अस्पताल में इलाज करवाने का सोच रहा है। मुनिया अपनी माँ के पास थोड़ा और पैसा पहुंचाना चाहती है । लापरवाह नशेड़ी बाप को अपने परिवार की कोई परवाह ही नहीं है।

नन्हे बबलू को लगता है कि उनकी मेहनत से ही लोग जश्न मना पाते हैं। चाहे कोई शादी हो या किसी जीत की खुशी हो। चाहे कोई त्योहार हो या चुनाव के नतीजे आने हो। उनके जैसे ही कामगारों के द्वारा फैक्ट्री में बनाए गए पटाखों को फोड़कर ही खुशी का इजहार होता है। जश्न मनाया जाता है। वह सोचता है कि लोगों की खुशियों में उन जैसे बहुत से कामगारों का भी बहुत बड़ा हाथ है।

दीपावली को अब केवल एक सप्ताह रह गया है। त्योहार को लेकर शहर में अभी से बहुत रौनक बढ़ चुकी है। बहुमंजिला इमारतों को रंग-बिरंगी रोशनी की झालरों से सजाया गया है। लगभग हर दुकान में खरीदारी पर लकी ड्रा, कूपन और गिफ्ट आदि की योजनाएं चल रही है। बाजार में हर आयु वर्ग के ग्राहकों को रिझाने के लिए जोरदार प्रयास किया है। पिछली शाम को फैक्ट्री से जल्दी निकल कर मुनिया, बबलू और राजू बाजार गए थे। बाजार की चकाचौंध देखकर उनकी आंखें चुंधिया गई।

मुनिया की नजरें माँ के लिए साड़ी की खोज कर रही थी। बेचारी माँ के पास कोई नई साड़ी नही रह गई थी। राजू अपने छोटे भाई बहन के लिए जूते तलाश रहा था। विद्यालय जाने के लिए दो साल पहले जो जूते उन्हें दिलाए थे वह अब बुरी तरह फट गए थे। बबलू का ध्यान तो हलवाई की बड़ी-बड़ी दुकानों पर शीशे के पीछे करीने से सजा कर रखी मिठाइयों पर था। सबके मन में भरपूर उत्साह था। लेकिन ये उत्साह भौतिक वस्तुओं की प्राप्ति से जुड़ा था और आर्थिक तंगहाली के चलते उनका ये उत्साह अल्पकालीन ही रहने वाला था। उन्हें उम्मीद है कि फैक्ट्री मालिक एक-दो दिन में उन्हें उनकी पगार दे देगा। जिससे वो भी बाकी लोगों की तरह बाजार से कुछ ना कुछ पसंदीदा खरीद पाएंगे।

फैक्ट्री के चारों तरफ आठ-दस फुट की ऊंची दीवार लगी हुई है। एक बड़ा सा काले रंग का गेट है लेकिन हैरानी की बात यह है कि गेट पर या आसपास फैक्ट्री और फैक्ट्री के मालिक के नाम का कोई भी साइन बोर्ड नहीं लगा है। गेट के साथ ही सुपरवाइजर की गाड़ी के साथ एक दो और गाड़ियां खड़ी रहती हैं। यह इलाका समतल है। अधिकतर कामगार साइकिल का प्रयोग करते हैं। साइकिलों की एक लंबी कतार बिल्डिंग की पिछली तरफ लगी रहती है।

दीपावली के दो दिन पहले सभी को चौंकाते हुए फैक्ट्री प्रबन्धन ने एडवांस में उस महीने का मेहनताना और मिठाई दिए जाने की घोषणा कर दी। अब सभी कामगारों के मन में दीपावली को लेकर उत्साह दोगुना हो गया था। राजू, मुनिया, बबलू के साथ फैक्ट्री के बाकी कामगार भी आज बहुत खुश थे क्योंकि आज सभी कामगारों को फैक्ट्री प्रबंधन की तरफ से मिठाई और महीने भर का मेहनताना मिलने वाला था। शाम को मिलने वाले पैसों का क्या करना है, क्या खरीदना है, सभी के मन में कुछ न कुछ चल रहा था। सभी कामगार जल्द से जल्द आज का काम खत्म करने में लगे थे। हर कामगार फैक्ट्री प्रबंधन का मिठाइयों व पगार के लिए धन्यवाद कर रहे थे। फैक्ट्री प्रबंधन के खिलाफ उनके मन में जमा रोष आज कहीं गायब हो गया था।

फैक्ट्री प्रबंधन को इस वर्ष काफी मुनाफा हुआ था इसलिए उन्होंने कामगारों को दीपावली बोनस के साथ पगार और मिठाइयां बांटी थीं। आज दोपहर बाद तक अपना सारा काम निपटा कर राजू, बबलू और मुनिया बाजार जाने को उतावले थे। वह तीनों खुशी खुशी बाजार पहुंच गए। बाजार में काफी भीड़ थी। ग्राहकों को आकर्षित करते दुकानदारों का शोर, लाउडस्पीकर पर बज रहे धार्मिक संगीत, उस विशेष अवसर की विशेषता को और ज्यादा प्रदर्शित कर रहे थे। हर दुकान व स्टॉल पर काफी लोग जमा थे। ग्राहकों और दुकानदारों के बीच मोल भाव को लेकर सौदेबाजी चल रही थी। मुनिया ने अपनी माँ के लिए एक पीले लाल रंग की बनारसी साड़ी व अपनी छोटी बहन के लिए एक बहुत सुंदर फ्रॉक और गुड़िया खरीदी। राजू ने अपने छोटे भाई-बहन के लिए जूते व नए कपड़े खरीदे। बबलू की नजरें नाना प्रकार की मिठाइयों पर थी। उसने अपने व मुनिया और राजू के लिए जलेबी खरीद ली थी। वह तीनों आज बाजार घूम कर व खरीदारी करके बहुत खुश थे। आज मिली पगार ने उनकी खुशियों को जीवंत कर दिया था। उनका आज का दिन बहुत अच्छा बीता था।

वे अगले दिन भी उसी खुशी और उत्साह के साथ फैक्ट्री लौटे। आज काम करते-करते उन्हें बड़ा आनंद आ रहा था।

शाम होते-होते शहर पिछले कल की घटना को भूलकर दीपावली के जश्न में डूब चुका था। आज ही के दिन भगवान राम कई वर्षों के बाद घर लौटे थे। उनके लौटने की खुशी में नगर वासियों ने घी के दीपक जलाकर उनका स्वागत किया था। कल हुए हादसे में मारे गए लोगों के परिजन भी उनका घर पर इंतजार कर रहे होंगे। लेकिन उन्हें क्या पता कि वे तो इस लोक को छोड़कर अनंत की यात्रा के पथिक हो गए थे।

क्योंकि कल दीपावली थी और आज दोपहर बाद उन्होंने अपने-अपने घर के लिए भी निकलना था।

'मुझे अचानक घर में देखकर तो माँ हैरान हो जाएगी और छोटी... वो तो खुशी से पागल ही हो जाएगी..उसे तो खाने के लिए मिठाई और दोस्तों के साथ फोड़ने के लिए पटाखे चाहिए।' मुनिया बोली।

दोपहर के लगभग दो बजे का वक्त हो रहा था। कुछ कामगार साथ लाया हुआ भोजन कर रहे थे। आज दो लॉरी पटाखे लोड होने वाली थी। लोड होने वाले पटाखों को एक जगह इकट्ठा कर दिया गया था। अचानक फैक्ट्री की दूसरी मंजिल पर एक जोरदार धमाका हुआ और धुएं का एक जबरदस्त गुब्बार उठा। कुछ क्षणों को यूं लगा मानो जैसे दिन में ही अंधेरा हो गया हो। उसके बाद तो एक के बाद एक सैकड़ों धमाके होने लगे। मानो जैसे परमाणु बम की नाभिकीय विखंडन शृंखला हो।

देखते ही देखते हाहाकार मच गया। चारों तरफ धुआं ही धुआं ... काला धुआं... सफेद धुआं...आग को खुद में समेटे धुआं...।

चीख.. पुकार... बचाओ .. बचाओ.. जैसी दर्दनाक आवाजों से आसमान गूंज उठा था। देखते ही देखते पूरी फैक्ट्री धू धू कर जलने लगी। बारूद के भंडार को जैसे ही आग लगी एक जोरदार विस्फोट के साथ पूरी बिल्डिंग भरभरा कर जमींदोज हो गई।

चारों तरफ हो हल्ला ... हाए तौबा... ये क्या हो गया ... हे भगवान! जैसे स्वर हवा में तैरने लगे। फायर ब्रिगेड की गाड़ियां कुछ ही देर में पहुंच गई थीं लेकिन आग पर काबू पाना आसान नहीं हो रहा था। कुछ कामगार जो किसी काम के लिए बाजार तक गए थे अपने साथी कामगारों को ध्वस्त हो चुकी फैक्ट्री में कैद पाकर बुरी तरह रोने लगे। पुलिस की दो गाड़ियां भी वहां पहुंच चुकी थी। फैक्ट्री के सुपरवाइजर और मालिक के खिलाफ एफआईआर दर्ज हो चुकी थी। फैक्ट्री के बारे में बात करते हुए कुछ लोग कह रहे थे कि यह फैक्ट्री यहां पर पिछले 10-12 सालों से गुपचुप तरीके से चल रही थी। इस फैक्ट्री में काम करने वाले कामगारों का न तो पंजीकरण हुआ था न ही सुरक्षा को लेकर कोई एहतियात बरती जा रही थी। बारूदी प्रयोग के दुष्प्रभावों से कामगारों के गिरते स्वास्थ्य के प्रति फैक्ट्री प्रबंधन बिलकुल भी सजग नहीं था।

राजू, बबलू, मुनिया का भी इस दुर्घटना में कोई अता-पता नहीं था। धमाके इतने जोरदार थे कि आसपास की इमारतों के शीशे भी चकनाचूर हो गए थे। फैक्ट्री के पीछे जहां कामगारों की साइकिल लाइन में लगी रहती थी वहां अब टूटी-फूटी साइकिलों का कबाड़ जमा था।

पुलिस ने थोड़ा बहुत जांच पड़ताल की तो पाया कि फैक्ट्री अवैध तरीके से चलाई जा रही थी। इस फैक्ट्री में काम करने वाले मजदूरों की जान जोखिम में डालकर उनसे काम लिया जा रहा था। फैक्ट्री में काम करने वाले कितने मजदूर थे ....कहां से थे....उनका स्वास्थ्य कैसा रहता था. .. क्या उनका कोई एकल या सामूहिक बीमा हुआ था...इस बात का किसी को कुछ भी पता नहीं था। फैक्ट्री के मालिक सारे नियमों को दरकिनार करते हुए मनमाने तरीके से उत्पादन कर रहे थे।

अब तक आसपास के काफी लोग वहां जमा हो चुके थे। बड़ी-बड़ी मशीनों की सहायता से बचाव कर्मी इस हादसे में जल चुके व घायल हुए लोगों को मलबे से बाहर निकाल रहे थे। कुछ देर बाद अपने लंबे काफिले के साथ स्थानीय विधायक वहां पहुंच गया। उसने मृतकों व घायलों के लिए मुआवजे की घोषणा कर दी।

'मुआवजा दिलाने का तो नाटक है' एकत्रित भीड़ में से कोई फुसफुसाया। कुछ तो कह रहे थे कि फैक्ट्री के मालिक और नेता की आपस में अच्छी बनती है। ध्वस्त हुई इमारत के नीचे दबकर मरे कामगारों के शवों को पोस्टमार्टम के लिए अस्पताल ले जाया जा रहा था। बचाव और राहत कार्य देर रात तक चलता रहा। नेताजी किसी जरूरी काम का हवाला देखकर घटनास्थल से चलते बने। इस दुर्घटना में जो कामगार जिंदा भी बचे थे वो बहुत बुरी तरह जल चुके थे। भयानक विस्फोट की वजह से किसी की बाजुएं नहीं रहीं थी तो किसी को अपनी टांगों से हाथ धोना पड़ा था।

अगले दिन दिवाली थी। अगला दिन.... यानि नया दिन. .. आज हादसों में मारे गए कुछ लोगों के परिजन अस्पताल में अपनों की लाशों को ले जाने आए थे। उनकी चीखों से अस्पताल गूंज उठा था। जिन मृतकों की पहचान नहीं हो पाई थी, कुछ एनजीओ और सामाजिक कार्यकर्ता उनका अंतिम संस्कार करने के लिए आगे आए थे।

शाम होते-होते शहर पिछले कल की घटना को भूलकर दीपावली के जश्न में डूब चुका था। आज ही के दिन भगवान राम कई वर्षों के बाद घर लौटे थे। उनके लौटने की खुशी में नगरवासियों ने घी के दीपक जलाकर उनका स्वागत किया था। कल हुए हादसे में मारे गए लोगों के परिजन भी उनका घर पर इंतजार कर रहे होंगे। लेकिन उन्हें क्या पता कि वे तो इस लोक को छोड़कर अनंत की यात्रा के पथिक हो गए थे।

गांव याल, पत्रालय नम्होल, तहसील सदर,
जिला बिलासपुर, हिमाचल प्रदेश-174032

व्यंग्य

निमंत्रण-पत्र न बुलाने का

✍ सीताराम गुप्ता

कभी आपको किसी शादी-विवाह अथवा अन्य किसी समारोह में न आने का निमंत्रण-पत्र मिला है? न आने का निमंत्रण-पत्र? हाँ, न आने का निमंत्रण-पत्र। ये कैसे हो सकता है कि न बुलाने के लिए भी कोई किसी को निमंत्रण-पत्र भेजे? हो सकता है और खूब हो सकता है। हो सकता है आपको ऐसे निमंत्रण-पत्र न मिलें हों लेकिन हमें तो न जाने कितनी बार न बुलाने के निमंत्रण मिल चुके हैं। तो क्या निमंत्रण-पत्र में लिखा होता है कि आपको नहीं आना है? नहीं बुलाना हो तो भी ये बात कैसे लिखी जा सकती है और लिखने की जरूरत भी क्या है? बस तरीका आना चाहिए निमंत्रण-पत्र भेजकर न बुलाने का। ये एक कला है और इस कला में सभी पारंगत नहीं होते। अन्य कलाओं की तरह कुछ खास किस्म के लोग ही निष्णात होते हैं इस कला में भी। वे आपको विधिवत निमंत्रण-पत्र भेजेंगे और आप चाहते हुए भी बिलकुल नहीं जा पाएंगे और इसके लिए वे आपकी फजीहत भी करेंगे इस बात की भी गारंटी है।

आप नहीं जा पाएंगे और नहीं जा पाने के कारण उलाहने भी सुनेंगे। यही तो खास बात होती है ऐसे न बुलाने वाले निमंत्रण-पत्रों की। ऐसे निमंत्रण-पत्र भेजने वाला बाद में जब भी कहीं मिलेगा आपसे न आने की शिकायत करेगा और आपको अपनी सफाई तक पेश करने का मौका नहीं देगा। कहेगा, 'भाई बच्चों को आशीर्वाद देने भी नहीं पहुंचे आप? कम से कम आपसे तो ऐसी उम्मीद नहीं थी। बड़े बेटे और मझली बेटी की शादी में भी नहीं आए थे? हमारे कौन से दस-बीस बच्चे है जो आप आशीर्वाद देते-देते थक गए? हमसे क्या गलती हो गई बड़े भाई? कोई गलती हो गई है तो बता दो, अभी माफी मांग लेता हूं सबके सामने आपके पैर पकड़ के। या आपने कसम खा रखी है कि हमारी देहली पर कदम न रखने की?' 'भाई बात ऐसी है कि...,' आप कुछ बोलना चाहेंगे तो बीच में ही आपकी बात काटकर कहेगा, ' हां, बोलिए बड़े भाई पर ये मत कहना कि चिट्ठी नहीं मिली।'

सभी भाई-बंधुओं और रिश्तेदारों को भेजी जाती थी शादी की चिट्ठियां। जिनको बुलाना होता था उनको भी और जिनको नहीं बुलाना होता था उनको भी। लेकिन जिनको नहीं बुलाना होता उनको चिट्ठी कुछ इस तरह से भेजी जाती कि शादी के ऐन दिन या उसके बाद ही मिल पाए। ऐसे में आप पहुंच कर दिखलाइए शादी में कैसे पहुंचेंगे? आपको निमंत्रण भी मिला और चाहकर भी नहीं पहुंच पाए शादी में। यही है न बुलाने का निमंत्रण।

हां ये पचास-साठ साल पुराने अचूक नुस्खे थे निमंत्रण-पत्र भेजकर न बुलाने के जब हाथ से लिखकर और उन पर हलदी के छींटे मारकर डाक से शादी की चिट्ठियां भेजी जाती थीं। सभी भाई-बंधुओं और रिश्तेदारों को भेजी जाती थीं शादी की चिट्ठियां। जिनको बुलाना होता था उनको भी और जिनको नहीं बुलाना होता था उनको भी। लेकिन जिनको नहीं बुलाना होता कुछ इस तरह से कि शादी के ऐन दिन या उसके बाद ही मिल पाए। ऐसे में आप पहुंच कर दिखलाइए शादी में कैसे पहुंचेंगे?

आपको निमंत्रण भी मिला और चाहकर भी नहीं पहुंच पाए शादी में। यही है न बुलाने का निमंत्रण। फिर भी भाई साहब शिकायत कर रहे हैं कि आप पहुँचे नहीं। आप कह रहे है कि चिट्ठी देर से मिली इसलिए पहुंचना संभव नहीं था। इस पर भाई साहब कहते है, 'छोड़िए भाई साहब ये सब बहाने पुराने हो चुके है। एक आपको ही समय पर कार्ड नहीं मिला और बाकी सब लोगों को मिल गए और सब आ भी गए।' बहस करना बेकार है क्योंकि ये निमंत्रण-पत्र था ही आपको न बुलाने के लिए और साथ ही आपकी फजीहत करने के लिए। जब हाथ से लिखी चिट्ठियों का दौर समाप्त हुआ और

छपे हुए निमंत्रण-पत्रों का दौर शुरू हुआ तब भी न बुलाने के निमंत्रण-पत्र भेजने की परंपरा जीवित रही। इसके बाद फोन का जमाना आया। लोग फोन से सूचित करने लगे। कुछ लोग डाक से निमंत्रण-पत्र भेजकर फोन से भी सूचित कर देते। समय पर फोन कर दिया और बतला दिया कि निमंत्रण-पत्र डाक से भेजा है मिल जाएगा। लेकिन जब तक निमंत्रण-पत्र हाथ में न आए जाने की तैयारी कैसे शुरू हो? उधर बरात निकालने की तैयारियां हो रही हैं और इधर हजार कोस दूर डाक से निमंत्रण-पत्र मिल रहा है। कुछ देर बाद फोन भी आ रहा है, 'भाई साहब कहां पहुंचे? आपका बेसब्री से इंतजार हो रहा है।' कहा कि भाई निमंत्रण-पत्र तो अभी एक घंटा पहले ही मिला है। प्रत्युत्तर में पूछा गया कि क्या आपको फोन नहीं किया था? अब क्या कहें? किससे कहें? जब निमंत्रण-पत्र छपवाए थे तो समय पर भेज देने में क्या हर्ज था? अब तो आप भी समझ गए होंगे कि ये किस प्रकार निमंत्रण-पत्र था?

ऐसा नहीं कि रिश्तेदार ही न बुलाने के निमंत्रण-पत्र भेजते हैं और दूर के रिश्तेदार ही ऐसे निमंत्रण-पत्र भेजते हैं अपितु पास के रिश्तेदार और दोस्त भी इस नेक काम में उनसे पीछे नहीं रहते। कई बार फोन भी न बुलाने के निमंत्रण के लिए उत्तरदायी होते हैं। एक मित्र के लड़के की शादी थी। खैर शादी में तो उन्होंने बुलाया ही साथ ही सगाई पर भी बुलाने की पूरी कोशिश की थी। सगाई का कार्यक्रम दोपहर को रखा था। शाम को मित्र महोदय तमतमाते हुए आए और बरस पड़े, 'सुबह से फोन लगा-लगाकर थक गया लेकिन तुम्हारा फोन नहीं मिला। जब भी फोन किया हेल्ड मिला। तुम्हें कितनी बार कहा है कि फोन को ठीक से रखा करो। सब लोग पूछ रहे थे तेरे बारे में कि क्यों नहीं आया।' पूछा कि भाई साहब चार दिन पहले ही तो हम मिले थे उस दिन तो आपने जिक्र नहीं किया था? जवाब मिला कि जिक्र तो तब करता न जब प्रोग्राम निश्चित होता। कल ही प्रोग्राम निश्चित हुआ था। मिठाई वगैरा देकर वे चले गए और साथ ही शादी के दिन समय पर पहुंचने की ताकीद करके भी। शादी के दिन नियत समय पर पहुंचे तो पाया कि बारात आधा घंटा पहले निकल चुकी थी।

अगर आप समझते हैं कि मोबाइल और इंटरनेट के दौर में न बुलाने के निमंत्रण-पत्र नहीं भेजे जा सकते तो आप मुगालते में हैं। आपको वाट्सऐप पर निमंत्रण-पत्र भी भेजेंगे और फोन भी करेंगे लेकिन फिर भी आप नहीं

(शेष पृष्ठ 48 पर)

लघुकथा

लाइव

विजय उपाध्याय

हर कोई अपना फंडा रखता है
कोई परिंदों के लिए दाना पानी
तो कोई डंडा रखता है

जी हां दोस्तों (जुल्फों को अदा से झटकते हुये...) मैं हूं आपकी दोस्त, सखी, सहेली बात सीधी सी नहीं कोई पहेली, गर्मियों का सीजन है, फेसबुक पर लाइव हूं पूरे एक घंटे के लिए .... इस वक्त चार सौ साठ लोगों के साथ, सभी जुड़ने वालों को आदाब, नमस्कार, सत श्री अकाल।

आप के हर कमेंट का जवाब दूंगी, पहले अपनी बात रख लूं जरा....

तो दोस्तों ...! गर्मी बढ़ रही है इन प्यारे-प्यारे चहकते महकते सुंदर पखेरूओं के लिए अपने घर आंगन में दाना पानी जरूर रखें बेजुबान है बेचारे... मांग भी नहीं सकते।

कोने वाले कमरे से लगातार दरवाजा पीटने की आवाज लाइव में खलल डाल रही है, पीछे से किसी बुजुर्ग की कराहें वातावरण बोझिल करने लगी तो महोतरमा तमतमा कर विफर पड़ी .... इस बुढ़िया ने जीना हराम कर रखा है ...दिखता नहीं लाइव हूं , पांच सौ फॉलोअर जुड़ चुके हैं। दम मार ले कमबख्त। बेटा ...! पानी दे दे एक बोतल, हलक सूख रहा है ....।

ऊंह.....! वट एवर.. शो मस्ट गो ऑन....।

शायद वह लाइव म्यूट करना भूल गई थी फॉलोवर के रिएक्शन उड़ने बंद हो गए मगर भीतर कराह रही सास के प्राण पखेरू उड़ गए। मोहतरमा अभी भी लाइव पर बता रही है ..पानी में थोड़ी बर्फ डाल दें तो शीतल जल से जीवों की आत्मा को शांति मिलेगी।

गांव व डाकघर सिद्धपुरघाड़, तहसील ज्वाली, जिला कांगड़ा, हिमाचल प्रदेश-176021

लेख

व्हाट्स एप?

पंकज शर्मा 'तरुण'

वर्तमान युग में जब से एंड्रॉयड मोबाइल, डिवाइस और इंटरनेट घर-घर पहुंचा है, हमारी दिनचर्या अति व्यस्त और आसान हो गई है, इंसान का इंसान से जुड़ाव नाम मात्र का रह गया है, हमेशा वह ऑन लाइन रहता है! या यूं कहें तो बेमानी नहीं होगा कि आदमी इस डिवाइस का गुलाम बन गया है! सोते, जागते उसका ध्यान इसी में रहता है। कहीं जरा सा भी यह आंखों से ओझल हो जाए तो आदमी का व्यवहार ऐसा हो जाता है, जैसे उसकी कोई प्रिय वस्तु या साजन/सजनी दूर हो गया हो! उद्विग्नता की यह स्थिति भयावह तो तब हो जाती है जब मोबाइल की बैटरी बैठ रही हो! मोबाइल में जो प्रमुख प्लेटफार्म है, वे फेसबुक, व्हाट्स ऐप, इंस्टाग्राम, यू ट्यूब, गूगल आदि अन्य सोशल मीडिया के ऐप होते है मगर अधिकांश लोग फेसबुक और वहाट्स ऐप पर ज्यादा सक्रिय रहते हैं। इसमें भी व्हाट्स ऐप का उपयोग अत्यधिक पसंदीदा होता है। इसमें जो सुविधाएं हमें मिलती हैं वे कहीं दूसरे ऐप में उपलब्ध नहीं होती। फोटो वीडियो शेयर से लेकर सूचना के आदान प्रदान का सबसे सुलभ माध्यम है।साथ ही ग्रुप चौटिंग का आनंद लेना हो तो इस एप पर लिया जा सकता है!

किसी भी बात को तेजी से फैलाना हो तो लोग आजकल इसी का सहारा लेते हैं।चाहे सत्य घटना हो या झूठ इसी से वायरल या बहू प्रसारित होती है।इसके सकारात्मक परिणाम और नकारात्मक दुष्परिणाम भी देखने को मिले हैं।जिसमें सामाजिक विद्वेष से लेकर दंगे हिंसा भड़कते हुए भी कई बार देखे गए हैं। इसीलिए जब ऐसी विपरीत परिस्थितियां उत्पन्न हो जाती हैं, तब आप ने देखा होगा कि सरकार इस क्षेत्र में इंटरनेट सेवा को कुछ समय के लिए बाधित कर देती है जिससे कि नकारात्मक सूचनाओं पर रोक लगाई जा सके और स्थिति सामान्य हो सके।आजकल व्हाट्स ऐप पर ज्ञान बहुत मिलता है! आपने देखा होगा किसी जमाने में चुटकुले बाजी से मनोरंजन होता था। लोग बाग बसों ट्रेनों में आपस में घुल-मिल जाते थे और दोस्ती, रिश्तेदारी हो जाती थी। मगर जब से व्हाट्स ऐप आया है, रील ने अकेले हंसने की शुरूआत कर दी है साथ ही घर-घर में रील के माध्यम से कलाकार पैदा हो गए हैं जो एक्टर बनने के सपने देखा करते थे! वे यहां अपनी खुजली मिटा सकते हैं! सामाजिक ढांचा जो आपसी प्रेम सद्‌भावना से मजबूत था वह इससे कमजोर होता जा रहा है, जो हमारे लिए कहीं न कहीं शुभ संकेत नहीं। स्वार्थपरता का विकास होता जा रहा है। आदमी, आदमी से भौतिक रूप से दूर होता जा रहा है उसके प्रेम प्रदर्शित करने की क्षमता या गुण प्रभावित हो रहे हैं, सामाजिकता के गुण लुप्त होते जा रहे हैं। आदमी स्मार्ट नहीं मोबाइल स्मार्ट हो गया है जिससे हर उम्र का व्यक्ति प्रभावित हो रहा है। बड़ों में तो मानसिक विकास हो जाता है, मगर बच्चों की स्थिति हर घर में इतनी बदतर हो चली है कि बच्चे इसके बिना खाना भी नहीं खाते। दो साल का बच्चा मोबाइल को ऐसे चलाता है, जैसे वह गर्भावस्था में ही सारे फंक्शन सीख कर ही पैदा हुआ है। अश्लील वीडियो, संदेशों ने पूरे सामाजिक ढांचे को तहस-नहस करने की पूरी तैयारी कर ली है। बच्चे अपनी उम्र से बड़े होने का संकेत दे रहे हैं, जरा-जरा सी बात पर हिंसक प्रवृत्ति का उदाहरण प्रस्तुत कर रहे हैं। युवा वर्ग में नैतिकता का ह्रास होता जा रहा है। माता-पिता इन स्थितियों को नियंत्रित करने के उपाय न मिलने पर अवसाद में जीवन जीने को बाध्य हैं! सरकार और अंबानी अपने खजाने को बढ़ाने में मस्त हैं। इस अंधी दौड़ का अंत कहां होगा इसका उत्तर खोजने में मैं भी प्रयासरत हूं, आप भी प्रयास करिए ताकि दुनिया में आपसी प्रेम सौहार्द के खूबसूरत झरने जीवित हो सकें। अभी बहुत से सकारात्मक और नकारात्मक पहलू पर रोशनी डालनी शेष है जो अगले लेख में आपसे रू-ब-रू होने पर लिखूंगा क्योंकि यह लेख भी काफी लंबा हो रहा है। लेख लंबा हो जाने पर निरसता आने लगती है।

मोती महल, गायत्री नगर, पिपलिया मंडी
मध्य प्रदेश -458664 मो.-7000452012

समीक्षा

'मन केसरिया रंग दो जी'

समीक्षक : नरेन्द्र सिंह 'नीहार'

'मन केसरिया रंग दो जी' कहानी संग्रह की कहानियां बहुत कुछ कहती, सुनाती और बतियाती सी लगती हैं। इन कहानियों को पढ़ने पर आपको लगेगा कि लेखिका आपकी सह-यात्री है और आपको जीवन में अर्जित अनुभवों के नाना रंगों से तरंगित कर रही है। लेखिका रोचिका अरुण शर्मा को रंगों से गहरा लगाव है। वो रंग कहीं प्रेम के गहरे लाल हैं तो कहीं शौर्य और बलिदान के केसरिया। कहीं फुनगियों के आशावादी रंग हैं तो कहीं पन्नों में निखरे रंग हैं। कहीं जीवन के उत्स तलाशते मीठे पान के रंग हैं।

कुल मिलाकर पन्द्रह कहानियां जो 136 पृष्ठों में समाहित है। उनके शीर्षक भी बहुत चुटीले और आकर्षक हैं। एक बानगी देख लीजिए - पन्नों में निखरे रंग, अन्तिम पत्ता, पूर्वाग्रह, फिर खिलेंगी फुनगियां, बंद झरोखों में उजास, यह तो होना ही था, मेट्रो वाला वह लड़का, चूना कत्था मीठा पान, अबीर, गुलाल गुझिया आदि। दो शीर्षक अंग्रेजी भाषा से लिए गए हैं -उफ्फ! पिंक स्लिप और डिलीवरी बाय। शीर्षक कहानी सैनिक परिवार के शौर्य और बलिदान को उजागर करती हुई एक श्रेष्ठ कहानी है। शंका-आशंका के झूले में झूलती मां की मनोदशा का सुन्दर चित्रण देखने को मिलता है।

समीक्षित कहानी संग्रह की कहानियां अपने कथ्य, भाव, भाषा, क्लाइमेक्स और शिल्प की दृष्टि से कमोबेश अपने उद्देश्य को प्राप्त करती दिखाई देती है। उनके पात्र दृश्य जगत के सजीव पात्र हैं, जो अपनी मानवीय दुर्बलताओं और सबलताओं के साथ मुखरित हुए है। उनमें चंचलता है, चपलता है, स्वार्थ है, नीचा दिखाने के हथकंडे हैं तो आत्म विश्वास भी है। एक विजनरी दृष्टि है, साहस है और संबल भी है। वह विपरीत परिस्थितियों में झुकते और टूटते नहीं अपितु उनसे लड़कर विजयी होते हैं। 'दिन-दिन बढ़ती काली घास की नायिका कनुप्रिया अपने चेहरे पर उगती दाढ़ी और मूंछों को स्वीकारते हुए कहती है - तो यदि ईश्वर ने मुझे मर्दों की तरह दाढ़ी-मूछ दिये तो इसमें मेरा क्या दोष है? वह अपने योगा सेंटर का नाम भी मर्दानी रखती है।

इस कहानी संग्रह की पन्द्रह कहानियों में बारह-तेरह का ताना-बाना स्त्री पात्रों के इर्द-गिर्द बुना गया है। ये आजकल की कामकाजी महिलाएं है। उनमें योग्यता-कुशलता और हुनर है। वे अपने फैसले लेने में समर्थ है। अपने जीवन साथी को सलाह मशविरा ही नहीं देती अपितु कंधे से कंधा मिलाकर काम भी करती हैं। कविता, निखिता, निधि, स्नेहा, पूजा, कनुप्रिया, अनु, निहारिका, राखी, रिया, रंजना ऐसी ही नायिकाएं है। जानकी मां की सूझबूझ के तो कहने ही क्या। पति की मृत्यु के बाद सम्पत्ति पर नज़र गड़ाए बैठे बेटे और बेटी को बहुत खूब आईना दिखा देती हैं। बंद झरोखों से आता यह उजास उन बुजुर्ग दम्पतियों के लिए खासी सीख भी है, जो स्वयं को असहाय और निरुपाय समझ बैठते हैं। सुधा एक कठोर आवरण वाली महिला है, जो कहानी के अंत में नारियल सी पिघल जाती है और डिलीवरी बाय को खाने के लिए अलग से टिप भी देती है। कहानियों को पढ़कर आप नारी मन की गहराई और उनकी भावनाओं को और बेहतर तरीके से समझ सकते हैं। लेखिका ने यथासंभव मनोविज्ञान को उभारने की कोशिश की है।

कहानियों में पात्रों के मध्य संवाद भी यथासंभव सरल सहज रूप से आये हैं। संवादों के माध्यम से कथानक को गतिमान बनाने की कोशिश लेखिका की रही। संवादों को अधिक नाटकीय या चुटिला बनाने का प्रयास नहीं दिखता है। अपितु सरल एवं सपाट संवाद हमें नजर आते हैं। कुछ उदाहरण देख लीजिए -

-मैडम जी बीबी है, दो लड़के हैं।

-अब हो गई न समस्या, कमाने-खाने आया था, काम धंधे से गया। कितनी तनख्वाह थी उसकी यहां?

(कहानी : उड़ते हुए फुस्स पटाखे)

- हमारी कुछ और योजना है होली के लिए स्नेहा

-अच्छा जी प्लान भी बन गया अभी से ही, स्नेहा ने निहारिका की मीठी खिंचाई की।

(कहानी : अबीर गुलाल गुझिया)

- 'बिलकुल वही लग रही हो तुम'

- वही कौन ?

- कोठे वाली और कौन?

(कहानी: चूना कत्था मीठा पान)

संवादों में सम्प्रेषण की भरपूर क्षमता है और रोचकता भी। पात्रों की चरित्रगत विशेषताएं उजागर करने में संवादों की महत्त्वपूर्ण भूमिका रही है। वातावरण को कहानी का सबसे आवश्यक और सजावटी पहलू माना जाता है। देश काल की परिधि और अन्तर्द्वन्द्व कहानी की सफलता की गारंटी माने जाते हैं। इस दृष्टि से रोचिका की पहल सराहनीय कही जा सकती है। उन्होंने जिस चित्र को लिया है उसे सर्वांग बनाने का भरसक प्रयास भी किया है। एक-दो चित्र देख लीजिए -

'वह उठी और अपने शहीद पति की बड़ी सी तस्वीर के सामने जाकर बैठ गयी।' हिम्मत टूट रही है जी, क्या करूं मां भी तो हूं मैं, मेरा अभिमन्यु चक्रव्यूह से सकुशल लौट कर आना चाहिए, बड़ी कड़ी तपस्या की है मैंने, पर मैं डरती हूं अब पलकों का बांध टूट न जाये। मुझे आपका सहारा चाहिए, मेरा मन केसरिया रंग दो जी.....'

'लड़का देखने में बहुत खूबसूरत था। लम्बा कद गोरा रंग, तीखे नैन नक्श, चमकते हुए गाल और उनमें गहरे गड्ढे ...इतने खूबसूरत लड़के या तो माडलिंग के क्षेत्र में होते हैं या एयर लाइन में फ्लाइट परसर ही देखे हैं।

इस सुन्दर और सजीव वातावरण की सृष्टि करके रोचिका अरुण शर्मा ने लेखक-लेखिकाओं का ध्यान पुरुष सौन्दर्य और सौष्ठव की ओर खींचने का प्रयास भी किया है। उम्मीद है कि इस विषय में आगे और खोज खबर ली जायेगी। अब बात करें भाषा और शैली की। रोचिका की कहानियों में महानगर के कथानक अधिक हैं। पात्र भी पढ़े -लिखे और मध्यम वर्गीय है। उनकी भाषा आम बोलचाल की हिन्दी है। हिंग्लिश के प्रयोग में भी लेखिका को कोई गुरेज नहीं है। कहीं-कहीं पर संवादों का माध्यम अंग्रेजी को

पुस्तक - मन केसरिया रंग दो जी (कहानी संग्रह)
लेखिका - रोचिका अरुण शर्मा
प्रकाशक - ज्ञान गीता प्रकाशन, शहादरा दिल्ली
वर्ष - 2023, मूल्य -195 रुपये

रखा गया है। जो संभ्रांत वर्ग की ओछी मानसिकता को दर्शाता है। लेखिका अपने प्रयोग में सफल रही है। एक बानगी देख लीजिए -

'यस ही इज द लाइट पर्सन टू आस्क'

'एक्सक्यूज मी'

'आय एम फ्राम बंगलौर'

गनीमत है कि इसे रोमन में नहीं लिखा है।

भाषा भावों की सहचरी होती है। इस दृष्टि से लेखिका ने जिस भाषा में बात कही है, वह संप्रेषणीय रही है। उसमें यथा स्थान मुहावरे और कहावतें भी आ गई हैं। 'तुम मुंह मांगी तनख्वाह दोगी तो वो अच्छी भी रहेंगी।'

'मन में पीड़ा हो तो एक निवाला भी कैसे गले से नीचे उतरे।'

शैली की बात करें तो वह कथात्मक, आत्मपरक, विवेचनात्मक, भावात्मक के साथ-साथ व्यंग्यात्मक भी हो गई है। कथानक एवं संदर्भ के अनुसार शैलियां अदलती-बदलती रही हैं। संग्रह की अन्तिम कहानी -'चूना कत्था मीठा पान' की मुख्य पात्र एक अनाम महिला है, जिसे लेखिका ने वह कहकर संबोधित किया है। इस प्रकार कहा जा सकता है कि भाषा, भाव और शिल्प की खूबी इन कहानियों में है। किसी का अतीत, किसी का वर्तमान और किसी का भविष्य मुखरित हुआ है। भाषा नदी के नीर से बहती दिखती है। कहीं कुछ अवरोध आये तो वह रूकी नहीं अपितु बहती चली गई और पाठकों को चेतन अवस्था में कुछ सोचने विचारने के लिए भी झकझोर रही है।

इन कहानियों के प्रयोजन, प्रदाय या संदेश की चर्चा किये बिना बात अधूरी रह जायेगी। कहानियों में स्त्री मन को समझने की कोशिश है। एक मां, पत्नी, प्रेयसी, गृहिणी और कामकाजी आखिर चाहती क्या है? उसको उजगार करने में लेखिका ने अपना दमखम लगाया है। ढीले पड़ते और दरकते सामाजिक सम्बन्धों का अहसास कराया है। सकारात्मक सोच को प्रस्तुत किया है और बुजुर्गों के प्रति विनम्र भाव को कुशलता से सहेजा है। हम कह सकते हैं कि ये नारी विमर्श की कहानियां हैं। मगर पुरुष भी इनमें सह-यात्री के रूप में प्रकट हुए है। वे अपने विविध रूपों में कथानक को गति प्रदान करने में सहायक रहे हैं। इन कहानियों में नवीनता है और नई सोच भी मगर संस्कारों की सौंधी महक भी है। ये अपनी जड़ों से कटकर नहीं अपितु बंधकर बहने और तरक्की करने का संदेश देती हैं। मैं रोचिका के यशस्वी होने की कामना करता हूं।

ए-67/बी, दुर्गा विहार, देवली गांव, नई दिल्ली-110080, सम्पर्क - 9873299789

हाइकू

✍ कल्पना गांगटा

शीत लहर
कड़कड़ाती ठंड
सिहरे तन।

उजली धूप
खेले आंख-मिचौली
तरसे मन।

जग में कर्म
जीवन का आधार
समझे हम।

राम स्मरण
हृदय में धारिये,
मिटते कष्ट।

सत्य वचन
धर्म अनुसरण
जीवन मर्म।

धन अर्जन
चाहे हर मानुष
भूला ईश्वर।

मानव दंभ
प्राकृतिक कहर
घोर अनर्थ।

नर स्वार्थी
बिसरा परमार्थ
हर तरफ।

नयन मूंद
करता सुमिरन
विवश मन।

हंसी वसुधा
बसंत आगमन
मन हर्षित।

खिली सरसों
उमंगित भंवरे
कूकी कोयल।

शीत समीर
विहग कलरव
मन बावरा ।

खूब जोड़ना
रिश्ते न गंवाना
गाओ तराना।

इंसान बन
दुआएं बटोरना
धन कमाना ।

तेज बनना
दामन अच्छाई का
नहीं छोड़ना।

देना हमको
विद्या का वरदान
ज्ञान दायिनी।

आया बसंत
अठखेली करता
प्रकृति संग।

शरद ऋतु
उमंगित हृदय
बने कविता।

शर्माए चम्पा
महकती चमेली
हंसे बसंत।

झूमती धारा
जड़ता के बंधन
होते शिथिल।

शिशु चंचल
युवक अंगड़ाते
मंद मुस्कान।

मस्त हो गाती
मदमस्त पवन
छेड़े तरंग।

उड़ा भंवरा
कलियां मुस्कुराए
मोहे बसंत।

दूर अम्बर
उमड़ते नीरद
छाई लालिमा।

डूबा सूरज
अनगिनत तारें
बने नजारे।

चांदनी रात
मनोहर दर्शन
काली यामिनी।

गांगटा निवास, लम्बीधार,
ढल्ली, शिमला-171012,
हि.प्र. मो. 9459276970

उपन्यास समीक्षा

'किसी व्यक्ति की पहचान उसके पद से नहीं बल्कि उसके द्वारा निष्पादित कार्यों से होती है। शिक्षक तो शिक्षक होता है, चाहे वह प्राथमिक कक्षा का हो या किसी विश्वविद्यालय का। हमारी पहचान, हमारी प्रतिष्ठा इस बात पर निर्भर करती है कि हम अपने कर्त्तव्यों का निर्वहन कितनी निष्ठा, ईमानदारी, समर्पण और सेवाभाव से करते हैं।'

जीवन में संघर्ष और मूल्यों के संरक्षण की कहानी 'गंतव्य'

✍ डॉ. सत्यनारायण स्नेही

कवि, कहानीकार गुप्तेश्वर नाथ उपाध्याय उपन्यासकार के रूप में हमारे सामने आते हैं, वो भी आत्मकथात्मक शैली में लिखे उपन्यास 'गंतव्य' के द्वारा। साहित्य में उपन्यास लेखन की आत्मकथात्मक शैली काफी लोकप्रिय है। हिन्दी के अनेक प्रतिष्ठित उपन्यासकारों ने इस शैली में उपन्यास लिखे है। जिसमें उन्होंने अपने समय, समाज के संघर्षों और अंतर्द्वंद्वों के अपने-अपने हिसाब से रूपायित किया है। वास्तव में 'आत्मकथात्मक उपन्यास आंशिक रूप से काल्पनिक होता है। जिसमें लेखक के जीवन की घटनाओं का वर्णन होता है। कलात्मक और विषयगत उद्देश्यों के लिए घटनाओं को अतिरंजित या परिवर्तित किया जाता है।' उपाध्याय द्वारा लिखित उपन्यास 'गंतव्य' लेखक के जीवन-यथार्थ और कल्पना का सम्मिश्रण प्रतीत होता है। इस उपन्यास में कथा नायक मिथिलेश्वर का जीवन-वृतान्त वर्णित है। प्राथमिक शिक्षा के दौरान ही एक अध्यापक बनने का सपना संजोए मिथिलेश्वर कैसे उतार चड़ावों से गुजरते हुए लक्ष्य प्राप्ति करता है, तदनन्तर अध्यापक बनने के उपरांत झेले तनाव और दबाव, चिंताएं एवं चुनौतियों के साथ विभिन्न संघर्षों का विवेचन व्यापक फलक पर हुआ है। इस उपन्यास का कथानक मिथिलेश्वर के इर्द-गिर्द ही रहता है। जिसकी शुरूआत कथा नायक के अध्यापक बनने के लक्ष्य निर्धारण से होती है। ऐसे समय में जब अधिकतर सहपाठियों के लक्ष्यों में प्रशासनिक अधिकारी या दरोगा बनने की चाहत थी तो इनका अध्यापक बनना हास्यास्पद सा प्रतीत होता था।

गंतव्य उपन्यास में मुख्यत: तीन पड़ाव है। पहला विद्यार्थी जीवन, दूसरा अध्यापक की नौकरी और तीसरा पड़ाव नौकरी के दौरान शिमला में स्थानान्तरण और सेवानिवृत्ति। पहले पड़ाव में दो अवस्थाएं है-एक कथानायक की प्रारंभ से स्नातक स्तर की शिक्षा अर्जन, स्नातकोत्तर शिक्षा के दरम्यान न चाहते हुए भी परिवार के दबाव में मनोरमा से विवाह हो जाना, आहिस्ता-आहिस्ता इस विवाह को स्वीकारना, शिक्षक बनने की बलवती इच्छा के प्रतिफल एक निजी संस्थान में अवैतनिक कार्य करना इत्यादि। इस कथानक में निरंतर संघर्ष परिलक्षित होता है। दूसरी अवस्था बड़ी रोचक है, जहां कथानायक बी. एड. करने हेतु शान्ति निकेतन में प्रविष्ट होता है। इस दौरान एक परिपक्व युवा अवस्था में सहपाठिन संगीता के साथ प्रगाढ़ मित्रता तदोपरि प्रेमानुभूति और प्रेम प्रस्ताव। इस अवस्था में कथानायक मर्यादा और संयम के साथ बेहतरीन संतुलन स्थापित करता है। जहां मिथिलेश्वर की संगीता के साथ भी मित्रता भी बरकरार रहती है तथा

आगे बढ़ती है और मनोरमा के साथ वैवाहिक जीवन भी सुखमय व्यतीत होता है।

गंतव्य के दूसरे पड़ाव में मिथिलेश्वर की अध्यापक के रूप में चंद्रगिरि में नियुक्ति होती है। बचपन से संजोया लक्ष्य प्राप्त हुआ, तो जाहिर खुशी भी अनिर्वचनीय थी। शिक्षक बने मिथिलेश्वर का इस कार्य के प्रति दृष्टिकोण बिल्कुल स्पष्ट था- 'शिक्षक शब्द में तीन अक्षर हैं। 'शि' 'क्ष' और 'क'। सभी का अपना-अपना महत्त्व है। तीनों अक्षर एक शिक्षक के अंदर तीन गुणों का प्रतिनिधित्व करते हैं। 'शि' शिष्टता के लिए, 'क्ष' अक्षर क्षमाशीलता के लिए और 'क' अक्षर कर्मयोग के लिए है।' मिथिलेश्वर यही निश्चय कर केंद्रीय तिब्बती विद्यालय में कार्य ग्रहण करता है। परंतु सब कुछ उसके अनुकूल नहीं होता है। नव नियुक्त कर्मचारी को प्रोबेशन के नाम पर अनेक तरह से प्रताड़ित किया जाता है। ऐसे गैर सरकारी संस्थानों के भीतर अलग तरह की कार्य पद्धति और राजनीति होती है जो साधारण प्रवृति के लोगों के लिए दबाव और तनाव पूर्ण परिस्थितियां पैदा करती है। जबकि मिथिलेश्वर की अपने कार्य के प्रति धारणा स्पष्ट थी, कि 'किसी व्यक्ति की पहचान उसके पद से नहीं बल्कि उसके द्वारा निष्पादित कार्यों से होती है। शिक्षक तो शिक्षक होता है, चाहे वह प्राथमिक कक्षा का हो या किसी विश्वविद्यालय का। हमारी पहचान हमारी प्रतिष्ठा इस बात पर निर्भर करती है कि हम अपने कर्त्तव्यों का निर्वहन कितनी निष्ठा, ईमानदारी, समर्पण और सेवाभाव से करते हैं।' इसी बीच मैसूर में केंद्रीय भारतीय भाषा संस्थान में एक कार्यशाला के दौरान एक प्रतिभागी कविता से गहरी मित्रता इस उपन्यास का एक और रोचक पहलू है। जिसमें एक अलग सी आत्मीयता का अभास प्रतीत होता है और उल्लासमय संवाद देखने को मिलता है। परंतु इससे पहले कि यहां पाठकीय कौतुहल और आगे बढ़े, कविता के साथ मित्रता का अध्याय बंद हो जाता है। इसके उपरान्त पदोन्नति एवं स्थानान्तरण और हिमाचल प्रदेश के तिब्बती बाहुल्य क्षेत्र धौलंजी में कार्य ग्रहण कथानायक के जीवन में व्यावसायिक और वयैक्तिक परिवर्तन का द्योतक है। यहां भी मिथिलेश्वर को प्रशासन के भीतर की राजनीति का शिकार होना पड़ता है। लेकिन यहां आकर इनके व्यक्तित्त्व में स्वाभिमान और आत्मविश्वास परिलक्षित होता है, जब अपनी अस्मिता को बचाने के लिए अपने सौम्य और आज्ञाकारी स्वभाव के विपरीत अपना अपमान होते देख सबके सामने स्कूल में आए उच्च शिक्षा अधिकारी को प्रत्युत्तर देता है और अपने स्वाभिमान, कार्य दक्षता और समर्पण से अवगत करवाता है।
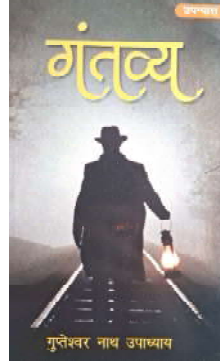
गंतव्य उपन्यास के तीसरे पड़ाव में कथानायक का शिमला में स्थानांतरण होने के बाद तनाव रहित वातावरण में अध्यापन कार्य होता है, साथ ही व्यक्तित्त्व के विविध आयाम विकसित होते हैं। इनमें कलात्मकता, सृजनात्मकता और पारिवारिक विकास सम्मिलित है। अब पूरे जीवन की चलायमान अवस्था के बाद मिथिलेश्वर का शिमला में स्थाई निवास हो गया। अध्यापन से सेवानिवृत्ति के बाद साहित्य सृजन में निमग्न है और लेखक बिरादरी में एक सुपरिचित नाम है। लेकिन मिथिलेश्वर का संघर्ष खत्म नहीं हुआ है, वरन संघर्ष का स्वरूप बदला है। आज बतौर सेवानिवृत्त अध्यापक को पैंशन और अन्य देनदारियों के निपटारे में कहीं व्यवस्थागत खामियों से जूझना पड़ता है, तो कहीं अकर्मण्य, दम्भी, दुराग्रही कर्मचारियों और अधिकारियों की वजह से विभिन्न प्रकार की परेशानी झेलनी पड़ती है।

गंतव्य उपन्यास में मिथिलेश्वर के शिक्षक बनने की कहानी है साथ ही शिक्षक के रहते आई चुनौतियों, जटिलताओं, विकृतियों और अवसरों का एक सुव्यवस्थित दस्तावेज है। कहानी में नैरन्तर्य है, प्रवाह है, विचार है, कौतुहल और रोचकता है। लेखक ने न तो अनावश्यक विस्तार किया है और नहीं अतिरिक्त संदर्भ जोड़े हैं। यदि ये लेखक की अपनी ही कहानी माने तो भी इसे ज्यादा रोचक और प्रभावी बनाने के लिए तदजनित अथवा काल्पनिक संदर्भों की गुंजाइश रचना में रहती है, लेकिन लेखक ने इससे परहेज किया है। इसमें न ज्यादा कला कौशल है न भाषाई पांडित्य दिखाने की कोशिश की है। बकौल कथाकार इस सामान्य सी कहानी में कुछ असामान्य है। वह ये कि कथानायक के जीवन में अनेक ऐसे पड़ाव आये हैं जहां वो मर्यादा का उल्लंघन कर सकता था या अनेकों बार चापलूसी या चाटूकारिता से स्वार्थ सिद्धि कर सकता था, पर कथानायक ने अपने स्वाभिमान और उसूलों से समझौता नहीं किया। अपने जीवन पथ पर अपने आदर्शों और मूल्यों के साथ आगे बढ़ा है। जिससे मिथिलेश्वर एक आदर्श और प्रेरक व्यक्तित्त्व के रूप में उभर कर सामने आता है। सरल और साधारण भाषा और शैली में लिखा 'गंतव्य' प्रत्येक व्यक्ति के जीवन के लिए कुछ न कुछ सूत्र अवश्य देता है। अतएव गंतव्य एक पठनीय और संग्रहणीय रचना है।

विभागाध्यक्ष हिन्दी, राजकीय महाविद्यालय
ठियोग, जिला- शिमला, हि.प्र. 171201,
मो.- 9418042938

उड़त गुलाल, लाल भए बदरा....

(पृष्ठ 27 का शेष)

लोक गीतों में होली का उल्लास, सौन्दर्य, शृंगार समाया है, हरियाणा, पंजाब, राजस्थान, दिल्ली, उत्तर प्रदेश, उत्तरांचल, मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़ आदि क्षेत्रों में वसंत पंचमी से लेकर आठौ होली, यानी चैत्र अष्टमी तक फागें गाई जाती हैं। भोजपुरी, अवधी, बुन्देलखण्डी, ब्रज हरियाणवी राजस्थानी फागें सदियों से गाई जाती रही हैं। चौपालों, दरवाजों व घुमकडी फागें शाम होते ही ढोल व मंजीरे के थापों पर गांवों में कस्बों में शुरू हो जाती हैं। फागें दो तरह की होती हैं। पहली-बैठकी फांगें जो एक जगह बैठ कर गायी जाती हैं। दूसरी घुम्मकड़ी फागें जो गाँव में होली के चक्कर लगाकर गायी जाती हैं - इनमें गालियां व कबीरा भी होता है।

'आज बिरज में होरी रे रसिया।
होरी रे रसिया, बरजोरी रे रसिया।। आज बिरज में...
अपने अपने महल सों निकरी-
कोई श्यामा कोई गोरी रे रसिया। आज बिरज में...

अवधी फागें, ढोलक के ऊँचे थापों पर तेज स्वर में गाई जाती है। स्वर धीरे-धीरे शुरू होता है और क्रमश: तेज होता जाता है - होरी खेली है महराजा। होली खेली है।

होली के पर्व के पहले शिवरात्रि का पर्व आता है। भला होरियार बाबा भोले नाथ के साथ कैसे होली न खेले। शंकर कोरे-कोरे कैसे बच सकते हैं-

बम भोला करें स्नान, गौरा-पार्वती पानिया भरें, पानिया न होय।

तथा
जुग जिये तो खेले फिर होरी
जस गया गजोधर के जोरी।।
अवध मां होरी खेलें रघुवीरा।
केहिके हाथ कनक पिचकारी
केहिके हाथ मजीरा।

तथा
साथ लगत कुम्हलाई हो रामा
जूही की कलियां

फागुन प्रेम का महीना है। लता, विटप फसल, नर, नारी, पशु-पक्षी सभी पागल हो जाते हैं। बाबा जी देवर लगने लगते हैं। गाया भी गया है- 'फागुन के दिन चार, होली खेल मना रे'

अरे फागुन तो हर वर्ष आएगा, पर जवानी तो चार दिन की है। होली खेल तरंग में दिन जा।

होली जन जीवन का त्योहार है। राजा का, प्रजा का त्यौहार है। बृज बरसाने, दिल्ली, जयपुर, भोपाल, कोलकाता, लखनऊ, कानपुर, चित्रकूट, अयोध्या, मथुरा, जबलपुर, पटना, अयोध्या, काशी, इलाहाबाद, बुन्देलखण्ड की होली, जिसने देखी है। वह जानता है कि होली प्रेम का पर्व है। फिल्मों में होली गीत जमकर गाए बजाए गए हैं।

होली आई रे कन्हाई रंग छलके, सुना दे जरा बासुरी (मदर इंडिया)

आज न खेलेंगे हमजोली खेलेंगे पर होली (कटी पतंग)

होली के दिन दिल खिल जाते है, रंगों में रंग मिल जाते हैं। (शोले)

'रंग बरसे भीगे चुनरवाली (सिलसिला)

सरित नवरंग, पाइस, फूल और पत्थर फागुन, तुलसी.. . नदिया के पार, राजपूत, सौतन, आखिर आदि आदि फिल्मों में होली के गीत हैं।

होली रंगों का, प्रेम का उल्लास का पर्व है। आज की पीढ़ी होली गीत गायन परम्परा सब भूलती जा रही है। फागें तो अब लुप्त होती जा रही हैं। होली पर अश्लीलता हावी होती जा रही है इस पर अंकुश लगाना होगा।

मनेथू, सरवन खेड़ा उप डाकघर, कानपुर देहात-209121

.....निमंत्रण-पत्र न बुलाने का

(पृष्ठ 41 का शेष) जा पाएंगे इस बात की गारंटी है। कलाकार हर दौर में कलाकारी करने में निपुण होते हैं। अभी कुछ दिन पहले की ही बात है। वाट्सऐप पर एक निमंत्रण-पत्र मिला। अच्छा लगा पढ़कर क्योंकि ये एक डेस्टिनेशन वेडिंग थी। ऐसी बड़ी शादियों में जाने के मौके कम ही मिलते हैं इसलिए प्रसन्नता कुछ ज्यादा ही हो रही थी। व्हाट्सऐप पर निमंत्रण-पत्र के बाद फोन भी आ गया। जी बहुत-बहुत बधाई! शुभकामनाएं! सबको आना है और वहीं पर बधाई देना। शादी का दिन भी आ पहुंचा। पता देखने के लिए व्हाट्सऐप खोलकर निमंत्रण-पत्र निकाला लेकिन निमंत्रण-पत्र पर रिजॉर्ट का नाम तो लिखा था पर पता नहीं दिया गया था। बहुत देर तक सोचता रहा कि ये रिजॉर्ट कहां पर होगा। गूगल पर भी खोजने की कोशिश की लेकिन कामयाबी नहीं मिली। फिर सोचा कि फोन करके पता पूछ लेता हूं तभी एकदम जहन में आया, 'अरे! ये तो न बुलाने का निमंत्रण-पत्र है।'

ए.डी. 106 सी., पीतमपुरा, दिल्ली - 110034, मो. 9555622323

......लोक गाथाओं में कृष्ण लीला

(पृष्ठ 9 का शेष) तराकड़ा दी कांसे राजैए से तोलणी लाई।

जांणू मेरी बैहणिओं जो कै बिउंतड़ौ हूऔ।

राजा कंस को भ्रम पड़ गया। उसने अपने आंगन में बड़ा तराजू लगाया तथा अपनी बहनों को तोलने लगा। कंस कहता है कि हे बहना! तुम्हारा वजन क्यों बढ़ रहा है।

एऊता भौरमैं ना नाहे दादुआ, आज भीड़ै कापडै सीने।

सीनै फड़ीनै मेरे कापडे पहने थाल्ही भौरी खाउऔ भाता। ना की दूरी गौ भाइयो, माटी लागी देवे भींगी।

बहनें कहती है कि हे भाई! तू वहम मत कर। हमने आज कपड़े गीले पहन रखें हैं। तथा भर के थाली चावल खा रखे हैं। अंत में उन्होंने स्वीकार किया कि हे भाई हमने कोई चोरी बुरी नहीं की। यह तो ना जाने देव माटी की नजर लग गई। अर्थात् किसी दैवी शक्ति के प्रकोप से गर्भित हुई हैं। अब क्या-देवकी की खैर नहीं।

देवकी और दसोदा के वचन :

पाणी लै नाही जै मौहुरा कुआंरा।

पारिशा आई दाशोदा माई जी। बैंणे जै बोला जो माता दाशोदा।

किलै गै तु रोदिना कौरै मेरी बैहणें।

एक बार दोनों बहनें अपने-अपने घरों से पानी भरने बाउली के पास पहुंची। माता यशोदा पूछती है कि हे बहन तू क्यों रो रही है।

तेरे भि जै ज़ौरमी कौन्या कुआंरी।
तैहा देए मौथुरा पज़ावी मेरी बैहणिए।
मेरे मि जै जौरमी हे बाड़ौ वालिका।
तेऊ देऊं मूं गोकुला पज़ावी मेरी बैहणिए।

दोनों बहने गर्भवती तो थी ही। देवकी बहन यशोदा से कहती है कि यदि तेरे पुत्री पैदा हुई तो उसे मथुरा मेरे पास भिजवा देना। यदि मेरे बालक पैदा हुआ तो उसे मैं तेरे पास गोकुल भेज दूंगी।

देवकी और वसु ब्राह्मण को कारावास और कान्हा जन्म:

तौमा लै ता वोलू गौ नोटिओ सपाहिओ।
बंद भी ता कौरा एऊ भाटा देवा बौसुआ।
बाड़ी डाहो बांधीए पाई भाटा बौसुआ।
उड़ाटी जै सुड़ाटी ड़ागुई लाई रौडै पाए लोहे केरे कीला।

देवकी के गर्भ का नौवा महीना आरम्भ होते ही कंस ने अपने सिपाहिओं को वसु और देवकी को कारागार में बंद करने का आदेश दिया। उनके पांवों में लोहे के कील डाल दिये तथा दरवाजे को मजबूती से बंद कर दिया।

हाथा दिता पाई सै हाथ कौड़ी, गाशा पाई भौदरशीला।
घाई बाराघा रे चौकी पौड़ी चौउकी।
सौबे कोई पैहरै दि डाहै राजै कांसैए।
कुत्तै बरैए पैहरै दि डाहै, एक तौमें जिउदैना छाडो।

उनके हाथों में हथकड़ी डाली तथा ऊपर से भद्रशीला डाली। भालू, बराघ, कुते, बिल्ले सभी का पैहरा लगाया गया। इनसे कहा गया कि कहीं इन्होंने बालक लेकर भागने की कोशिश की, तो इन्हें जान से मार डालना।

डेढ़ गशाई सौतरा सुहाई, सौबे बोला पैहरै दि डाही।
बंवी जै कूछी दि शालाणीं लागा, उबा शिरा उजवी झाशा।
खौड़ौ भिता उजु गौ तू ए वौसू बामणा।
बेटौ जौमों लाल गोपाला।

कंस ने कारागार में सतर सुहाई (दाइयां) पहरै में रखी हैं। देवकी को प्रसव वेदना शुरू होती है तथा बालक पैदा हुआ। देवकी कहती है कि है वसुदेव खड़ा उठकर देख तेरे लाल गोपाल पैदा हुआ है।

जेभी भिता जौरमौ जो कान्हबाड़ौ देउतौ।
सौबे कोई निंदरिए भूलै।
चौऊ भि कनारै दी आपी बौडै दिउए।
न्याहरौ ओवरू पारैशो किओ बौसुआ।

जिस समय कान्हा पैदा हुआ तो सभी पैहरेदारों को नींद आ गई। कारागार के चारों किनारों में स्वत: दीपक जल गये। अन्धेरी कोठरी उजाली हो गई।

खौड़ौ भिता उजिए गौ ए बौसू बामणा।
बेटो नीए गोकला लै पारै कन्हैया जी।
कैणे कै ता उजू गै ए बाड़ी मौहुरै।
लोहे पौड़ शांगड़ू कीला कन्हैया जी।

देवकी कहती है कि हे वसु ब्राह्मण इस बेटे को गोकुल नगरी पहुंचा दे। हे देवकी मैं कैसे खड़ा उठूं मेरे हाथ पैर में

लोहे के शंगड़ व कील पड़े हैं।

एक जै नौज़रा दैआ बाड़ौ बालका।

चूटी गैए शांगडू कीला कन्हैया जी।

दुजी भिता नौज़रा दैआ बाड़ौ बालका। चुटी गेई भौदर शीला कन्हैया जी।

बालक ने वसु को एक नज़र से देखा तो देखते ही संगड़ कील टूट गये। फिर बालक ने दूसरी नज़र से देखा तो भद्रशिला भी स्वत: टूट गई।

सुनै ए चूड़िओ सबोरने दांदो।

बेटो जौमों लाल गोपाला कन्हैया जी।

कानै कुण्डला गौड़ै ज़ौप माला।

हाथै लैइए ढोलकी ढफाला कन्हैया जी।

कन्हैया देखने में अति सुंदर है। उसके दांत सोने की तरह तथा शिखा भी सोने की तरह है। कान में कुण्डल, गले में जप माला और हाथ में ढोलक डफाल लिए कन्हैया सुशोभित हैं।

भौदरै जै महीने जौरमा छूऔ होई गैओए बुधवारे।

छाबडू दि पाऔ ए बाड़ौ बालका।

जो देंणों गोकला टपावी कन्हैया जी।

भाद्रपद मास के बुधवार को कान्हा का जन्म हुआ। वसु ने बालक को टोकरी में बिठाया और गोकुल प्रस्थान की तैयारी करने लगे।

बिजड़िए मारौ ए झमकोरा गैंणे हुई घामटा घोरा। ज़ैवी भिता जौरमौ जो कान्हबाड़ौ देवतो।

छौहा मासे एक राच पाई कन्हैया जी।

जब कन्हैया पैदा हुए तो आसमान में बिजली कड़कने लगी और घोर काल रात्रि हुई। छह महीने की एक रात बन गई है।

चालदौ ता हुऔ गौ ए बौसू बामणा।

आगू मैड़ौ डुमणों डमेढ़ा कन्हैया जी।

बांडी तेरी डुमणी जो डुमटू प्याउओ।

बांडी गावी बाछटू चटावा कन्हैया जी।

बांकौ बौर मुहलै दीनो एऊ सैंइए।

एती का कै दैंणो कांसे राजै कन्हैया जी।

हे प्रभु तेरी लीला ही न्यारी। वसु ब्राह्मण बालक को टोकरी में डालकर प्रस्थान करते हैं। चलते-चलते रास्ते में एक घर मिलता है। उस घर की स्त्री बांझ है तथा उसके कई सालों से बच्चा नहीं हो रहा था। कन्हैया की नजर उस स्त्री पर पड़ते ही उसकी गोदी में एक नवजात शिशु प्रकट हुआ तथा मां के स्तनों से दूध पीने लगा। दूसरी नज़र कन्हैया ने खूंटे में बंधी गाय पर डाली। वह गाय दूध से सूख चुकी थी। उस गाय के थनों में दूध आ गया तथा एक छोटा सा बछड़ा उसके सामने उछलने लगा। घर के सदस्य कहने लगे कि इस भगवान ने हमें बहुत अच्छा वरदान दिया है। राजा कंस ने हमें क्या देना था।

एक किनारे कूता जो बैठा दूसरे किनारे बैठा हेड़िया।

तीसरे किनारे आग जलाई चौथे किनारे खाबड़ जी।

संकट खोले भगवान जी।

अग्नि जै ऊपर वर्खा ज़ै आवे।

हेड़िए नू ड़से काली नाग जी।

कुते नू ले गया बराघ जी।

आगे चलकर वसु को एक घोरली (हरणी) जो कि चारों ओर से संकट से घिरी थी। उसके एक किनारे पर कुत्ता, दूसरे किनारे पर वाण ताने शिकारी खड़ा था। तीसरे किनारे पर आग जली हुई थी तथा चौथे किनारे पर ढांक था। घोरली भगवान से रक्षा की गुहार कर रही थी। लीलाधर की लीला न्यारी। अचानक वर्षा शुरू हुई जिससे आग बुझ गई। शिकारी को सांप डंस गया तथा कुत्ते को बराघ खा गया। चलते-चलते वसु ब्राह्मण यमुना के तट पर पहुंचते हैं तथा नदी में पांव डालते हैं। अपने खड़ाऊं वसु ने किनारे पर रख दिये। नदी में कुछ चलने के बाद वह खड़ाऊं शेर बन गये तथा पानी का स्तर ऊपर उठने लगा। क्या होता है।

गोदै जै वसु देवा लैई चालै महाराजा जी।

गैया ज़ौबना के पास सौदा वोले हारो जी।

आगै जै जौबना हुई खौड़ी महाराज़ा जी।

पीछे सिंह गरजै नार सदा वोले हारो जी।

पीछे फिरदा किम घरै जाऊं सिंह मैं शेर डराओ।

वसु देव सोच रहें है कि आगे यमुना का भयंकर रूप है तथा पीछे शेर की गर्जना। पीछे जाऊं तो शेर का भय आगे जाऊं तो डूबने का डर।

ज़ैबी ति तौलै खौरी औहकी।

कानी दीनी हुंदाणी बुहावी मेरी माता जी।

आज भिता पौड़ी मुल्है खौरी जो औहकी।

मुं भि दै पार लंघावी मेरी माता जी।

वसुदेव मन में विचार कर रहें हैं कि जब रामावतार के समय रावण ने गंगा और हवा को कानी (पत्थर की घनकुटी) में कैद कर दिया था, तो उस समय प्रभु राम ने तुझे मुक्ति दिलाई थी। आज मुझे संकट आया है। हे माता यमुना मुझे इस संकट की घड़ी में पार लगा दे।

घौड़ा भिता घौड़िए गौ डूबौ भाटा बौसुआं

जौबना माई बौधादी लागी रे महाराजा।

इंदिरा का बोला सोड़ा सारागोपी।

एऊ सुड़टै पावा बाहरा लै काडै महाराजा।

जल स्तर वसु ब्राह्मण के गले तक पहुंच गया। अब वह डूबने वाला है। उसी समय इन्द्र लोक से सोलह सरगोपियों की आकाशवाणी हुई, 'हे महाराज कान्हा! अपने सुल्टे पैर को बाहर निकालिए।

चरन बौंदू जौबना थालै वौड़ी महाराजा जी।
उतरे वसु देवा पार सौदा बोले हारो जी।

बालक कान्हा ने अपना पांव बाहर निकाला तथा यमुना में उसके चरण छूए और तुरंत यमुना का आधा पानी ऊपर और आधा नीचे होकर बीच में सूखा रास्ता बन गया तथा वसुदेव पार टप गया।

बिपा पारौउड़ी हुऔ खौड़ौ महाराजा जी।
अन्दर कौरा ए सुआल सौदा बोले हारो जी।
नंदी मुहारे घौरै सोहिड़े महाराजा जी।
शंख शब्द बजावे सौदा बोले हारो जी।

ब्राह्मण वसुदेव गोकुल में नंदी मोहर के दरवाजे पर खड़ा हुआ। नंदी मोहर के घर में खुशियों का वातावरण बना है। शंख ध्वनि हो रही है।

बैटे जै देंदो आऔ बेटी लैंदो महाराजा जी।
एसे वौचन तुम्हारे सौदा बोले हारो जी।

वसु कहता है, 'हे नंद मोहर! मैं बेटे को देने और बेटी को लेने आया हूं। इस प्रकार के तुम्हारे वचन हुए थे।'

आणों जै बामणा पोथिआ महाराजा जी।
बेल लगंन गंणाए सौदा बोले हारो जी।
झूठे जै बामणा आखरा महाराजा जी।
बेटी, बेटे बणावें सौदा बोले हारो जी।

उधर राजा कंस को भनक हो गई। उसने ब्राह्मणों से कहा कि तुम अपनी पोथी पतरी देखो कि क्या पैदा हुआ है। ब्राह्मणों ने झूठ बोल दिया कि कन्या हुई है।

पोथी दौहूं गौ तेरी पौतरी दौहूं मौना रा सूचो।

उधर रातों-रात गोकुल से कन्या को वसु ब्राह्मण ने मथुरा के कारागार में पहुंचा दिया। कन्या की रोने की आवाज सुनकर सभी पैहरेदारों की नींद खुल गई। पैहरेदारों ने कंस को सूचना भेजी कि कन्या पैदा हुई है।

कन्या को मारने की तैयारी :- कंस ने कन्या को पकड़कर लाया तथा उस पर खड्ग से वार करने लगा। सारे लोग वहां एकत्रित हो गए। बजुर्गों ने कंस से कहा कि कन्या की हत्या इस धरती पर मत कर क्योंकि धरती पर खून के छींटे पड़कर पाप पड़ेगा। इसलिए हे कंस! इस कन्या को आसमान की ओर फैंक तथा अपना खड़ांसा उल्टा करके सामने कर ले ताकि कन्या इस खड़ांसे से टकराकर कट जाए। कंस ने कन्या को आसमान की ओर फैंका। कन्या आकाश को उड़ गई तथा बिजली कड़कने लगी। ऊपर जाते हुए उसने कहा, 'हे पापी कंस! मृत्युलोक में मेरा भाई तुझे जीने नहीं देगा। मैं भी तुझे चैन से नहीं रहने दूंगी। तेरे नाम से कांसे के बर्तन में भी बिजली गिरेगी।'

बालक को मारने का षड्यन्त्र : कंस ने पूरी रियासत में ऐलान किया कि जहां भी मेरा शत्रु छिपा होगा उस स्थान से घूआं उठना चाहिए। कान्हा ने अपने घर के बाहर गरबेच (गोबर की ढेरी) में आग लगा दी तथा वहां से धुआं उठने लगा। मां यशोधा गांव वालों को डांटने लगी कि तुम्हारे बच्चों ने गोबर में आग लगाई है।

श्रीधर ब्राह्मण द्वारा गोकुल जाना :

जुण ता मारा एऊ बाड़ै तेऊ लै आधौ दैणों राजा।
आधौ दैंऊ बैहड़ौ मैहला आधौ कोठी केरो राजा।
बैंणें बोला सौनू भाटा सीधरा ब्राह्मणा।
मुंए ता मारू गौ एऊ बाड़े बालका।

कंस ने ऐलान किया जो भी मेरे शत्रु को मारेगा उसे मैं आधी दुनिया का राज दूंगा तथा आधी कोठी महल और धन दौलत दूंगा। लालच में आकर सीधर (श्री धर) नाम के ब्राह्मण ने कहा कि मैं उस बालक कान्हा को मारूंगा।

जेबी रींगे गोकल कागा ला काशूंपड़ी आगा।
चालदौ हूऔ भाटा सीधरा गैओ गोकुला लै आही।

सीधर ब्राह्मण सोचने लगा कि मैं बालक को मारकर लौट आऊंगा मुझे तो कोठी महल व राज़ पाठ मिलेगा। यह छोटी सी घास की बनी कुटिया से मैंने क्या करना। सीधर कंस से कहने लगा कि जब मैं बालक को मार दूंगा उस समय गोकुल नगरी में कौवे आदि पक्षी उड़ने शुरू हो जाएंगे। जब तुझे कौवे उड़ते हुए नजर आएंगे उस समय मेरी इस घास की कुटिया को आग लगा देना। सीधर चल पड़ा गोकुल की ओर।

आधी बातै मैड़ुवी तेऊ कै दसोदा माई।
मैं ता शूंणी दसोदा माइए तेरे ज़ौरमी बधाई।
भौली आऔ बामणा, खीरी खौंड़ा दैऊ तौलै भोजना।
सौंगै देऊं दौक्षणा दसाई।

चलते-चलते आधे रास्ते में सीधर को मां यशोधा मिली। सीधर उससे कहता है कि मैंने सुना तेरे घर में बधाई है। यशोधा कहती है कि हे ब्राह्मण! यह तो बहुत अच्छा हुआ जो आप आए। मैं तुझे खीर भोजन तथा दक्षिणा दूंगी।

चाणें कै चाई आणे पाणिआ एणे न भोजना खाऊं।

सीधर यशोधा से कहता है कि छनणी में पानी भरकर

लाना, तभी भोजन करूंगा। वह यशोधा को कहीं उलझाकर रखना चाहता था। यशोधा ने चुल्हे पर खीर चढ़ाकर रखी तथा स्वयं पानी भरने पनघट पर छनड़ी लेकर गई। कन्हैया ने अपना बैठने वाला पटड़ा सीधर को दे दिया। सीधर ने सोचा कि मेरे पास शस्त्र तो है नही। उसने उसी पटड़े द्वारा बालक की ओर प्रहार किया। परन्तु वह पटड़ा उस सीधर के माथे में पटक गया। वह लहुलुहान हुआ।

खीर खांड खाऔ तेऊ कानिए भाटे मूंछा दलासी। कीदा का आऔ चोरा बामिणा मेरो वालका रियाउओ।

क्या करिश्मा होता है। अचानक छनड़ी के छेद बंद हो जाते तथा मां यशोधा उसमें पानी भर कर लाती है। घर में देखती है कि बालक रो रहा है। सीधर कहने लगा कि खीर उस बालक ने खाई है तथा मेरी मूछों पर लगा रखी है। यशोधा क्रोधित होकर कहने लगी कि, 'अरे चोर ब्राह्मण तूने मेरे बालक को रूला डाला। लहुलुहान होकर सीधर यमुना तट होकर घर की ओर चल पड़ा। वह नहाने के लिए नदी में गया। कन्हैया ने नदी में लीला द्वारा एक मायावी सोने की मच्छली बनाई तथा स्वयं वृद्ध रूप धारण किया। मच्छली को देखकर सीधर ललचा गया।

कैता दैणों कांसै राजै कै दैणो माता दसोदा।
धौन ता धौन भाटा सीधरे सुनै माछड़ी मैड़ी।

वह मन ही मन कह रहा कि राजा कंस और यशोधा ने क्या देना। मेरे तो भाग ही खुल गये कि सोने की मच्छली मिल गई।

सीधर ने मच्छली को पकड़ने की कोशिश की। मच्छली ने उसके हाथ पांव काटकर लहूलुहान किया। उसके शरीर पर गिद्ध, कौवै मंडराने लगे। कंस ने सोचा कि अब मेरा शत्रु मर गया है। कंस ने उसी समय सीधर की कुटिया को आग लगा दी। सीधर लुड़कते हुए मथुरा की ओर चल पड़ा। कुछ दूरी पर यमुना तट पर कंस के धोबी कपड़े धो रहे थे। वहां पुनः मच्छली प्रकट हो गई। मच्छली ने कपड़े धोने की सारी साबुन निगल डाली। कान्हा ने धोबियों से कहा कि दुकान से शहद खरीद कर लाओ तथा उसे कपड़ों में लगाओ। उन्होंने शहद लगाया जिससे कपड़े फट गए।

उसके बाद कान्हा ने दरिया के तट पर पड़ा बड़ा गोल पत्थर उठाया। सीधर को वह सोने का नजर आया। कान्हा ने पूछा, 'अरे ब्राह्मण! इस सोने के ढेले को कहां रखू?' सीधर ने कहा कि इसे मेरी छाती पर रखो। सीधर पत्थर को छाती से चिपकाए मथुरा की ओर लुढ़कने लगा। उस पत्थर से पिटता हुआ वह लुढ़कता गया।

कांसा कोटी आंधेओ क्या बाजा वधाई। टुंडक मुंडक सीधीरा गैऔ मौथुरा लै आई।

इस प्रकार सीधर मथुरा पहुंचा तथा कहने लगा कि अरे तुम किस बात की बधाई बजा रहे हो। मैं अपने हाथ पांव काट कर मथुरा पहुंचा हूं। इस प्रकार सीधर मत्यु को प्राप्त हुआ।

पूतना वध : फिर पूतना राक्षसी ने कंस से कहा कि मैं बालक को दूध पिलाने के बहाने जाकर मार डालूंगी। पूतना गोकुल पहुंचती है और बालक को अपनी गोदी में बिठाकर उसे अपने जहरीले स्तन बालक के मुंह में डालती है। बालक ने पूरे जोर के साथ उसके शरीर का सारा जहर और खून चूस लिया तथा पूतना ने अपने प्राण त्याग दिए। जब कृष्ण ने उस दूध को धरती पर फेंका उस दूध का दुघली घास बन गया जो आज भी देखा जा सकता है।

हौऊए :- इसके बाद कंस ने हौउआ नामक राक्षस भेजा। इस राक्षस के साथ कुछ बालक भी भेजे। गोकुल पहुंच कर बालक और हौउआ कान्हा के साथ खेलने लगे। हौउआ ने कृष्ण को मारने का प्रयास किया। परन्तु कृष्ण ने हौउआ को बाल से पकड़ कर पटक डाला।

आभीडू गाभीडू दूतों को भेजना : कंस ने आभीडू गाभीडू नाम के दो दूत कान्हा को बुलाने भेजे। परन्तु मां यशोधा ने मना किया। यशोधा कान्हा से कहने लगी।

आभिडू गाभिडू मामू तेरे कांसेए, दादू मेरे कांसेए। वै पूछा मारूदै लाए कन्हैया जी। हे पुत्र! तेरे मामा कंस ने दो दूत तुझे मारने के लिए भेजे हैं।

आभिडू गाभिडू मेरे संगै माइए...
मेरे सैगौ हौरी सणंसारा कन्हैया जी।

कान्हा कहते हैं, 'हे मां! आभिडू गाभिडू मैंने ही बनाए हैं। मैंने ही यह सारा संसार बनाया है। यशोधा द्वारा बार-बार रोकने पर भी कृष्ण ने हठ ठानी। 'यशोधा मां ने बालक कान्हा को थप्पड़ मारा। कन्हैया रोने लगा। यशोधा कहने लगी. .. 'रो मत! नहीं तो तेरे मुंह में राख फेंक दूंगी।' जब यशोधा उसे डराने के लिए उसके मुंह के पास राख ले गई तो कान्हा ने अपना मुंह पूरा खोल दिया। कान्हा के मुंह में यशोधा को सारा ब्रह्माण्ड नजर आया। यशोधा यह देखकर हैरान हुई और कहने लगी, 'जा पुत्र! तुझे मारने वाला इस दुनिया में कोई नहीं है।'

कान्हा कंस के महल पहुंचते हैं। कंस कान्हा से कहता है, 'चलो बालक गेंद खेलते हैं।' दूसरे बालकों के साथ कान्हा यमुना के तीर गेंद खेलने चल पड़ा। सोने का गेंद यमुना में चला गया। बालकों ने कहा कि हे कन्हैया! इस गेंद को यमुना से ढूंढ निकाल अन्यथा कंस हमें मारेगा। कान्हा ने यमुना में छलांग मारी।

जबना में जाई रहयो कन्हैया मेरो जबना।

सबहु नगर में लोक बसतो है, मुझ से किन्ही न कहयो।

कन्हैया मेरो जबना में जाई रहयो।

गोपी गवाले संग चलतो, उन से किन्ही न कहयो।

पैठ्यो पैतालै नाग ज़िनी नाथ्यो, सिर पर कमल घरो।

कांसे राय घरै नोपत बाजे, मोतिए चौउक पुराए।

सुरदास के प्रभु तुमरे भजन को, कंसे को त्रास भयो।

मां यशोधा को पता चलता है कि मेरा पुत्र यमुना में डूब गया। मां यशोधा सभी नगर वासियों को कोसती है कि मुझे किसी ने नहीं बताया। गोपियां और ग्वाले जो साथ खेल रहे थे उन्होंने भी नहीं बताया। लीलाधर का क्या। वह तो बड़े आराम से पैताल लोक में लीला रचा रहे हैं। उधर राजा कंस बड़े प्रसन्न हैं कि उसका शत्रु यमुना में डूब कर मर गया। मां यशोधा यमुना के तट पर छाती पीट कर रोते हुए कह रही है।

मत जाए कानियां तू खेलणे नदी जबना के तीर।

घूगालू बागालू दुई झौंणे तांही अपने वीर।

सुणे सुणे माइए मोरी ए कांही सैदुई भाई।

हे पुत्र! बार-बार तुझे मना किया था कि यमुना के किनारे गेंद खेलने मत जाया कर। राजा कंस के दो वीर घुगालू बागालू तुझे धोखे से मार डालेंगे।

कन्हैया पैताल लोक में कालिया नाग के महल में पहुंच चुके हैं। नागिन उससे कहती है, 'बालक भाग जाओ। कहीं कालिया नाग की नींद भंग हो गई वह तुझे मार डालेंगे।' कान्हा कहता है, **'काली जै नाग तेरो भाई पाऔ बाब।'**

कंस द्वारा कृष्ण को जहर देना : एक दिन कृष्ण और कंस रात का भोजन करने बैठे। कंस ने अपनी चांदी की थाली में जहर डाल कर भोजन कृष्ण को दिया तथा अपने लिए लोहे की थाली में निकाला। जब वे भोजन करने बैठे तो कृष्ण कहता है, **'मामू के तौसड़ौ भाणजू के थाडौ। तू जाणे मामूआ भाणजू काला।'** अरे मामा मैं क्या इतना मूर्ख हूं कि मामा लोहे के तसले में खाए और भाणज़ा चांदी की थाली में। मै तो लोहे के तसले में ही खाऊंगा' कंस की यह चाल भी सफल न हुई।

पेट दर्द का नाटक :- एक दिन कंस ने पेट दर्द का नाटक किया। कंस कृष्ण से कहता है, 'हे भानजे! मेरे पेट में दर्द हो रहा है।' कृष्ण कहता है, 'हे मामा! मै अभी दवाई लेकर आता हूं। मुझे बताइए दवाई कहां मिलेगी?' कंस कहता है कि हे भानजे कहीं से भालू का दूध लाओ। उस दूध से मेरी दर्द ठीक होगी। लीलाधर कृष्ण कहते हैं, 'हां मामा मै अभी भालू का दूध लाता हूं। कृष्ण जंगल की ओर गया। जंगल में भालू के बच्चे खेल रहे थे। कृष्ण ने उन बच्चों को चट्टान पर रख दिया तथा जंगल में आग लगा दी। कुछ समय बाद उन बच्चों की मां आई। मादा भालू ने सोचा कि मेरे बच्चे जंगल में जल कर मर गये। वह दौड़ी-दौड़ी कृष्ण को मारने लपक पड़ी। उतने में बच्चों ने कहा कि इस बालक ने हमारी जान बचाई है। मादा भालू बड़ी खुश होकर कृष्ण को पूछने लगी, 'बालक! तुम क्यों आए हो?' कृष्ण ने कहा, 'मेरे मामा कंस को तुम्हारे दूध की जरूरत पड़ गई है। मादा भालू ने जंगल के सभी मादा भालू इकट्ठे किए तथा कृष्ण को पीठ पर बिठा कर कंस के महल की ओर चल पड़े। भालू की सेना को देखकर कंस डर के मारे कांपने लगा। कंस ने भालुओं के आगे हाथ जोड़े तथा कहने लगा कि मेरा पेट दर्द अब ठीक हो गया है। मुझे अब दूध की आवश्यकता नहीं है।

इसके बाद अगले दिन कंस ने फिर पेट दर्द की शिकायत की तथा कृष्ण से कहने लगे, 'भानजे! मुझे शेरनी का दूध लाओ। कृष्ण ने जंगल में वही नाटक किया तथा शेरनियों की सेना लेकर उसकी पीठ पर दरबार में पहुंचा कंस बहुत परेशान हुआ तथा कहने लगा कि मेरी दर्द ठीक हो गई है।

कुछ दिनों के बाद फिर वही पेट दर्द का नाटक। कृष्ण कहता है, हां मामा! बता अब कहां जाऊं?' हे भानजे, 'नदी के बीच में जाकर पानी की झाग लाओ। उस झाग को पीकर मेरा दर्द ठीक होगा। कृष्ण यमुना के मध्य में गये। यमुना माई पूछती है, 'कहो प्रभु! क्यों आए? बस फिर क्या। यमुना का बहाव कंस की नगरी की ओर चल पड़ा। बाढ़ की स्थिति बन गई। सारी नगरी जलमग्न हो गई। मकान गिरने लगे त्राही त्राही मच गई। कंस ने कृष्ण व यमुना के पास हाथ जोड़े. ... 'मुझे किसी प्रकार का पेट दर्द नहीं है। मैं तुम्हारे दर्शन करके ही ठीक हो गया।' नदी वापिस चली गई।

एक और षड्यन्त्र : कंस के मन में एक और युक्ति सूझी। उसने रियासत के सारे राक्षस किल्टे बनाने वाले और दर्जी बुला डाले। कंस ने किल्टा बनाने वालों से कहा कि तुम बहुत बड़ा किल्टा बना डालो। दर्जियों से कहा कि तुम उनका एक बहुत बड़ा ओवर कोट बनाओ। उन्होंने दो-दो क्विंटल भार का कोट व किल्टा बनाया। कंस ने कृष्ण से कहा कि तुम शरीर पर ओवर कोट पहनकर तथा पीट पर किल्टा डालकर गाय चराने वृंदावन चले जाओ। कंस ने राक्षसों से कहा कि ज्यूं ही कृष्ण वृंदावन पहुंचेगा तुमने उस पर लोहे के ओले बरसाना। कुछ राक्षसों को कहा कि तुम गुफाओं का रूप बनाओ तथा ज्यूं ही ओले से बचने के लिए कृष्ण

गुफाओं में घुसेगा तो अपना मुंह बंद करना। कृष्ण गुफा में दम घुट कर मर जाएगा। कृष्ण कोट पहनकर पीठ पर किल्टा डालकर वृंदावन पहुंच गया। मूसलाधार वर्षा व ओलावृष्टि शुरू हुई। कृष्ण ने बड़े-बड़े पेड़ काटकर गुफाओं में फंसा दिए। गुफाओं रूपी मुंह के तालू और कण्ठ में खम्बे फंस गये तथा राक्षसों के मुंह खुले ही रह गये। कृष्ण ने सारी गाय गुफाओं में सुरक्षित पहुंचा दी। कंस की सबसे श्रेष्ठ गाय कामधेनु के ऊपर ऊन का कपड़ा डाल दिया। कामधेनु बाद में बह गयी। पानी के बहाव में कोट में लिपटी गाय को कंस की नगरी पहुंचा दिया। कंस ने सोचा कि कोट में लिपटा कृष्ण मर कर यहां पहुंच गया। कंस अति प्रसन्न हुआ अचानक उसी क्षण कंस के दरबार में एक यात्री पहुंचा तथा कहने लगा।

धारिए धारिए गाबा चराना तौ। नाड़िए नाड़िए खेलाणी करावा तौ।

नाकै सौरै मुराली बजावा तौ।

हे राजा कंस, कृष्ण तो जीवित है वह पर्वत व नालों में खेल रहा है। वह नाक के द्वारा मुरली बजा रहा है।अचानक कृष्ण का पहुंचना होता है। कृष्ण कंस से कहता है,

कीजू मामा बीड़ी बकाड़ी, तेरे गौ मामुआ शुकली दाढ़ी। तौंदी मामुआ छिंगुआड़ी लागी, कोठी का तु बाहरै निकलै।

अरे मामा तूने किस की दांतुन बनाई है। तुझे तो कलंक लग गया है। तू अब कोठी से बाहर निकल जा।

कोठी की प्रतिष्ठा के लिए कंस द्वारा बाड़ी भुमणी को भेजना -

कांसे ए कोठी ए जै हूमा लागै जोगा।
तिदी लोड़ी सो भाणाजू पाचैड़ू।
कुण छाडणो एऊ भाणजू बदाणु।
कांबुई छूटी जो छौ मासे बेटड़ी।
छौ मासे बेटड़ी का बाका फूटै बाका।
मूं नांहू तेऊ बदाणु।

कंस ने एक और चाल चली। अपनी कोठी की प्रतिष्ठा का नाटक रचाया। उसने अपने सलाहकारों को बुलाया और पूछा कि कोठी की प्रतिष्ठा में हवन यज्ञ होंगे जिसके लिए भानजे को बुलाना पड़ता है। उसे बुलाने कौन जाएगा? अचानक एक छः मास की कन्या प्रकट हुई तथा कहने लगी कि मै उसे बुलाने जाऊंगी। कंस ने उस बच्ची को अपनी पुत्री स्वीकार किया तथा उसका नाम बाड़ी भुमणी रखा। वह चल पड़ी भानजे को बुलाने। उधर लीलाधर अपनी गोपियों के बीच बैठे हुए है। गोपियां उसे व्यंग्य कसती है। **'तोड़ा उझी बाड़ेआ तौलै बौहटी आई'** नीचे देख तुझे बिहाने कोई आ रही है। कन्हैया कहता है, **'बुरूऔ बैणां गोपिओ मुंए लैना बोलो, मेरे बैहणा जो थारे लागा नौड़ना।'** अरी गोपियों! बुरा क्यों बोल रही हैं यह मेरी बहन और तुम्हारी ननद है। बाड़ी भुमणी पहुंचती है। कन्हैया ने हंसते हुए कहा, 'अरे तेरा नाम क्या है और तू क्यों आई है।' उसने कहा कि तुम्हारे मामा की कोठी प्रतिष्ठा है। यज्ञ के लिए तुम्हें फूल और पत्ते लाने पड़ते हैं। उधर कंस ने क्षेत्र के सभी किल्टे, टोकरी बनाने वाले कारीगरों को निर्देश दिया कि वे सभी मिल-जुल कर एक विशाल टोकरी बनाकर रखें। टोकरी कई क्विंटल भार की होनी चाहिए। साठ कारीगरों ने एक किलोमीटर ब्यास की टोकरी बनाई तथा वे सभी मिलकर उसे उठा रहे हैं। उस टोकरी में साठ खाने थे। टोकरी छः मास में बनी। बाड़ी भुमणी और कन्हैया भी वहां पहुंचते हैं। कन्हैया पूछता है, **'पारा ओरू मामुआ हौई सार लाईनी। जौ ता आणी सौनू पाची ए पाचौराड़ी।।'** अरे मामा! उधर देख यह घसीट कर क्या लाया जा रहा है? कंस बोला अरे भानजे यह कोठी की प्रतिष्ठा हेतू पतियां लाने का करडू है। विशाल टोकरी (करडू) लेकर महल के पास पहुंचे। कान्हबाडा ने उस टोकरी को बड़े सहज रूप से हाथ में उठाया।

एखुए नगाड़ु ना बाही लै लोड़ा ढागुलू।
एखुए मांगा काना लै कुंड़ला ना।
छुर छुर मोड़ियो बांडू बांडू रोटिओ।
सै गां दैणी रैहणी पर्नेहुणी।

करडू बनाने वाले राजा कंस से कोई बाजु के लिए कंगन तथा कोई कान के लिए कुण्डल बतौर ईनाम मांगने लगे। कंस ने कान्हा से पूछा कि इन्हें क्या देना चाहिए। कान्हा ने कहा कि इन्हें भूने हुए अनाज के कुछ दाने तथा रोटी का एक-एक टुकड़ा दे दो।

तौमे शाठ भि नगाड़ूओ मामुए द्रोहे। ठारा भिता खांदे हौदै ठारा पाची लै।

कीऊ दि आणु मामू लै मडैऔ।

कान्हबाड़ा कहता है, 'अरे साठ नगाडुओं (करडू बनाने वालों) तुम्हें तो मामा कंस का द्रोह लग गया है। अठारह खाने में तो अठारह प्रकार की पत्तियां ही आएगी। फिर मामा के गले के लिए फूलों का हार किस में लाऊ? यह करडू तो बहुत छोटा है।

पींडू नागे कूई का पाणी गौहा आणनो। काड़ी नागा बागा का पाची।

पत्तियां लानी होगी। कंस बोला, 'अरे भानजे! अब तुझे इस करडू में पीडू नाग की बाउली से पानी तथा काली नाग के बाग से कान्हा भी खुशी-खुशी से करडू हाथ में उठाकर

चल पड़ा पत्तियां पानी लाने। सबसे पहले वह काली नाग के बाग में गया तथा सारे पेड़ों-झाड़ियों की टहनियां तोड़ मरोड़ कर करडू में भर दी। यह सब देख काड़ी नाग की पत्नी सीरी बाज पदमणी कहती है।

होर माहणु ऊंचा कुमण सुमण। तेरे काडै माहणुआ जाड़ा झुमका।

बागा मरोडिआ सौरा खदोई बागो तौहटा कीऔ।

कैता भूलौ रौस्तै का कै किन्ही वौरिए भरमाऔ।

कैता तु बालिका क्रोध से उबजा कै तेरे नार सधाई।

'अरे बालक इस बाग से लोग कुमण-सुमण के फूल ले जाते है। परन्तु तूने तो सारा बाग व बाउली तबाह कर दी। या तो तू रास्ता भटक गया या तो तू कोध में आकर यहां आया या तेरे घर में किसी नारी का देहान्त हुआ है।

नैही नैही नागणी मैं रौस्ते का भूलैआ।

मामू ए घौरै लागै सौहडै बधाउणे।

मूं आओ पाची लै पचौहरू। सुरत देखू बेटा मुरता देखू तेरी।

सूरजा चौद्रा दी झाड़ा जो।

काना लै कुन्डल दैऊ बाही लै ढागलू दैऊं।

सवा जै लख दैऊ घौरिआ। जाओ रे बालका घौरै आपणे एऊ।

नागा का कौरी दैऊं चोरिआ।

कान्हबाड़ा कहता है, 'हे नागिन! न तो मैं रास्ता भूला न ही मेरे घर में किसी नारी का देहान्त हुआ। मेरे मामा के घर में बधाईयां बज रही हैं। जिसके लिए मैं फूल पत्तियां लेने आया हूं।' नागिन कहती है, 'अरे बालक! तेरी सूरत-मूरत देख कर तो ऐसा लगता है कि सूर्य चन्द्र भी तेरे सामने फीके पड़ जाते हैं। मैं तेरी भुजाओं के लिए कंगन तथा कान के लिए कुंडल व सवा लाख अशरफियां देती हूं। तू चुपचाप अपने घर चला जा।'

काना लै कुंडल ना लोड़ी वाही लै ढागालू।

ना लोड़ी सवा लख घोरिया।

ना नाहा नागाणिए घौरा लै आपणे।

एऊ नागा कौरे चकोड़िया।

जै पौरी उजिया काड़ी नागा।

तौ माणुआ जिउदै ना छाड़ा।

उधर काली नाग अपने महल में गहरी नींद में सोया है। उस नाग केविशाल काय शरीर ने महल के सात कमरे घेर रखे है तथा उसका सिर महल के आठवें कमरे में है। उसके सिराहने में काली नागिन बैठी है। काली नागिन उस बालक से कहती है, 'अरे बालक तू इस बाग में किस को पूछकर आया है? कहीं काली नाग को पता चला तो तेरी खैर नहीं।' कान्हा कहने लगा कि तेरा काली नाग मेरा क्या बिगाड़ देगा? नागिन को उस बालक को देख कर दया आई और रोने लगी। उसके आंसू काली नाग के कान में टपक पड़े। काली नाग की नींद खुल गई और गुस्से में उठ खड़ा हुआ। कहने लगा, 'क्या संकट आ गया कि मुझे जगा दिया।' नागिन ने सारी बात सुनाई कान्हा व काली नाग की गुत्थमगुत्थी हुई। अन्त में फुंकार मार कर काली नाग ने कान्हा को डंक मारा। कान्हा का रंग काला पड़ गया और धरती पर गिर गया। यहां कहानी में एक और प्रसंग जुड़ गया। पूर्व जन्म में राम को 'विधि माता ने कहा था कि अगले जन्म में लक्ष्मण भाई के रूप में बलराम होगा तथा लक्ष्मण संकट के समय तेरी सहायता करने अढ़ाई घड़ी के लिए आदिगर्ल पक्षी का रूप भी धारण करेगा। विधि माता की वह वाणी यहां साक्षात सत्य हुई। ज्यूं ही कान्हा मृत होकर धरती पर गिरा वहां आदिगर्ल पक्षी अपनी चौंच में अमृत लेकर प्रकट हुआ। पक्षी ने अमृत को पंखों पर उड़ेल दिया तथा उन पंखों को हिलाकर कान्हा पर छिड़का। अढ़ाई घड़ी के बाद आदिगर्ल लुप्त हुआ तथा कान्हा जीवित हुआ। आदिगर्ल ने उसे कहा कि भ्राता आज से तुम कृष्ण भगवान के नाम से माने जाएंगे। कान्हा को दूसरा जन्म मिला तथा नाग के विष से शरीर कृष्ण रंग का हुआ इसलिए नाम पड़ा कृष्ण।

जब काली नाग को पता चला कि यह बालक देवकी का पुत्र है। काली नाग ने उसे गले लगाया। पूछा, 'कहो पुत्र कैसे आना हुआ।' कृष्ण ने कहा, 'मामा कंस के कोठी की प्रतिष्ठा होनी है। तथा मुझे आपके बाग से पत्तियां फूल लाने के लिए भेजा है। वास्तव में वह मेरी जान के पीछे पड़ा है। शायद कंस ने सोचा कि काली नाग के डंक से मैं मर जाऊंगा।' काली नाग ने कृष्ण को अपने सिर पर बिठाया तथा कहा, 'हे कृष्ण! पहले मैं तुझे सारे पैताल और पृथ्वी लोक में घुमा लूं।' काली नाग ने कृष्ण को सारे में घुमाया तथा पृथ्वी व पाताल लोक के सारे पेड़-पौधे, झाड़ियां उखाड़ कर अपने ऊपर लादे तथा कृष्ण को भी करडू समेत सिर पर बिठाकर राजा कंस के दरबार में पहुंचाया। कंस बोलता है कि मुझे किसी प्रकार के फूल पत्ते नहीं चाहिए। कंस डर के मारे महल में घुस गया तथा देऊली के ऊपर दरवाजे के साथ दुबक कर बैठ गया। कृष्ण ने देऊली के पास जाकर कंस के बाल खींचे, गर्दन मरोड़ी तथा इस प्रकार कंस की जीवन लीला समाप्त हुई।

गांव व डा.खाना निरमण्ड, जिला कुल्लू,
हि.प्र.-172023, मो. नं. 9418472995

आखिरी पन्ना

छीजती संवेदनशीलता में कुछ खुशनुमा पल

✍ चन्द्रशेखर वर्मा

यूं तो लिखने को बहुत कुछ है परंतु बात को ज्यादा लम्बा खींचना नहीं चाहता। इसीलिए संक्षेप में लिखने की कोशिश करूंगा। महत्त्वपूर्ण यह है कि बातों के सिलसिले को बदस्तूर कायम रखा जाए। वर्तमान समय में संवेदनशीलता का ह्रास हम अपने चारों ओर देख ही रहे हैं। मनुष्य संवेदनशून्य हो रहा है और संवेदनशीलता का ग्राफ ऊपर की ओर बढ़ने के बजाए नीचे की ओर खिसक रहा है। परंतु इस संवेदनहीनता के कठिन दौर में भी हम अपने आप को बेहतर बनाने की कोशिश कर सकें तो शायद कुछ अच्छा हो सके। जीवन में आना-जाना एक निरंतर चलने वाली प्रक्रिया है। बात चाहे नौकरी पेशे की हो या किसी अन्य पेशे की या हम मिसाल के तौर पर जीवन को ही ले लें। यही प्रकृति का शाश्वत नियम है कि जो कल था, वह आज नहीं है और जो आज है, वह कल नहीं रहेगा। सदियों से यही सिलसिला जारी है। इसमें आगे भी परिवर्तन की कोई संभावना नहीं है। इसी आवागमन का नाम शायद जिंदगी है। यह भी सही है कि आना हमेशा खुशियों का अहसास लेकर आता है, वहीं जाते समय माहौल गमगीन होना लाजमी है। वर्ष 2024 के मार्च माह का अंत आते-आते कुछ ऐसे ही लम्हें हमारे समक्ष भी आए कि जब गिरिराज साप्ताहिक की पहली महिला संपादक श्रीमती नर्बदा कंवर सेवानिवृत्त हो गईं। अठाइस वर्षों से अधिक के अपने लम्बे सेवाकाल के दौरान उनकी हिमप्रस्थ मासिक पत्रिका, गिरिराज साप्ताहिक को बुलंदियों पर ले जाने में महत्त्वपूर्ण भूमिका रही। उनके सेवानिवृत्त होने से जहां संस्थान में एक रिक्तता आई है, वहीं इससे गिरिराज परिवार में भी सूनापन आया है। अपने संपादकीय कौशल से उन्होंने हिमप्रस्थ पत्रिका और गिरिराज साप्ताहिक को सुरुचिपूर्ण, पठनीय, आकर्षक, उपयोगी, प्रभावोत्पादक और लोकप्रिय बनाने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई। सेवानिवृत्ति के समय भी वह हिमप्रस्थ पत्रिका का संपादन कर रहीं थी। उन्होंने न केवल गिरिराज साप्ताहिक बल्कि हिमप्रस्थ पत्रिका के संपादन कार्य को भी वर्षों तक बखूबी अंजाम दिया। हिमप्रस्थ पत्रिका के समय-समय पर प्रकाशित विशेषांकों में बतौर उप-संपादक व सहायक संपादक के तौर पर भी अपनी बहुमूल्य सेवाएं दी। उन्हें गिरिराज साप्ताहिक और हिमप्रस्थ पत्रिका की पहली महिला संपादक होने का गौरव भी प्राप्त हुआ। कार्य निष्पादन में उनकी दक्षता अभूतपूर्व थी व इसी क्षमता के कारण वह हमारे लिए हमेशा प्रेरणास्रोत रहीं। कार्य के प्रति निष्ठाभाव और विचारों में स्पष्टता उनकी संपादकीय कार्यशैली में झलकती है। उनकी जिजीविषा, हंसमुख स्वभाव व बेबाकी से बात को रखने का अंदाज कार्यालय के माहौल को प्रायः जीवंत बना देता था। उनके व्यक्तित्व की एक खास बात थी कि उनके अंदर एक अच्छे अधिकारी के गुणों की मौजूदगी भरपूर थी, जिसके बल पर ही वह कार्यालयी कार्यों को अनुकरणीय दक्षता से निष्पादित करती थीं। उनकी सेवानिवृत्ति के पश्चात् कार्यालय में उनकी मौजूदगी भले ही प्रत्यक्ष तौर पर न हो पर उनके साथ कार्यालय में गुजरा समय हमेशा हमारी यादों में जिंदा रहेगा। सेवानिवृत्ति उपरांत भी वह स्वस्थ, सुखमय और दीर्घायु रहे, यही गिरिराज परिवार की कामना है।

राज्यपाल शिव प्रताप शुक्ल सुजानपुर में प्रसिद्ध होली महोत्सव के अवसर पर प्रदर्शनी का अवलोकन करते हुए